॥ श्री दुर्गादेव्यै नमः ॥

मैथिली दुर्गा-सप्तशती

पं श्री सुरेश झा

Acc. 778/868

॥ श्री दुर्गादेव्यै नमः ॥

मैथिली दुर्गा-सप्तशती

लेखक तथा सम्पादक

पण्डित श्री सुरेश झा

व्या. सा. आ. न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न

भूतपूर्व प्राध्यापक

ग्रा. सांढा, पो. जलेश्वर, जि. महुत्तरी,

अ. जनकपुर, नेपाल।

स्व. पं. सुरेश झाजी क अन्तिम इच्छानुरुप पुत्रवधू श्रीमती रेणु झा, W/O प्रो. डा. प्रमोद कुमार झा गवेषक आवास गृह १२, त्रिभुवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुर, काठमाण्डू, नेपाल (फोन ३३०८२९) द्वारा श्रद्धाञ्जलिस्वरूप प्रकाशित एवं उपहार स्वरुप वितरित ।

पहिल संस्करण - सितम्बर १९८८ (कमल प्रकाशन, पटना)
श्रद्धाञ्जलि संस्करण - जनवरी २०००

मुद्रक :
दि राइजिङ्ग सन् प्रिन्टर्स, टेकु, काठमाडौं ।
फोन : २४३५५७

S.P. 583

श्रद्धा सुमन

प्रातः स्मरणीय पूज्य बाबूजी स्व. पं. सुरेश झा जी अद्वितीय वैयाकरण, ज्योतिर्विद, प्रखर कवि, प्रतिभाशाली, आ समाजसेवी छलाह । शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यताक विकासमे हुनक देन अविस्मरणीय अछि । एहि क्रममें हुनकं लेखनी निरवच्छिन्न चलैत छलैन्ह । सरस्वतीक वरदपुत्र हुनक कृति संस्कृत, मैथिली तथा हिन्दीभाषामे प्रकाशित छैन्ह । हुनक मृत्यु पूर्वक ईच्छानुसार मैथिली भाषा में पद्यवद्ध दुर्गा सप्तशती श्रद्धाञ्जलिक रुपमे पुनः प्रकाशित भSरहल अछि ।

एहि पुस्तकक भूमिका एवं प्रूफ संशोधन कक अपन अमूल्य समय प्रदान कय संस्कृत विभागक प्रमुख प्राध्यापक डा. रामचन्द्र झा 'शास्त्री' जी जे सहयोग प्रदान कयलन्हि ताहि हेतु हुनक प्रति आभार व्यक्त करैत छियैन्ह । पुस्तकक प्रकाशन करवामे समय समय पर सत्परामर्श देवाक हेतु आदरणीय प्रो. मुरारि मधुसुदन ठाकुर जी आ सह-प्राध्यापक श्री शशिनाथ ठाकुरजी क आभारी छी । व्यस्तता रहितो उप-प्राध्यापक श्रीशशिनाथ झा जी प्रूफ संशोधन कय जे सहयोग प्रदान कयलन्हि, ताहि हेतु हुनको धन्यवाद छैन्ह । एहि प्रकाशनक लेल डा. प्रमोद कुमार झा एवं सौ. श्रीमती रेणु झा कें सहयोग क लेल शुभाशीष धैन्ह । दि राइजिङ्ग सन प्रिन्टर्स, टेकू क श्री अरुण प्रधानजी एवं श्रीमती सृजना प्रधान क सहयोगक लेल हार्दिक धन्यवाद छैन्ह ।

आशा अछि ई पुस्तक मैथिल लोकनिक हेतु अति उपयोगी सिद्ध होयत । एहि प्रकाशनक शुभ अवसर पर परमाराध्य स्वर्गीय बाबूजीक चरणकमलमे श्रद्धा सुमन अर्पण करैत छियैन्ह ।

श्रद्धावनत

ई.स. जनवरी १, २००० डा. जयशङ्कर झा

प्राध्यापक, त्रिभुवन विश्वविद्यालय ।

भूमिका

दुर्गा आ दुर्गासप्तशतीक महिमा अनन्त अछि । भगवती दुगदिवीक माहात्म्यक वर्णन मार्कण्डेय पुराण, कालिकापुराण तथा देवी भागवत आदि धार्मिक ग्रन्थमे बड विस्तारसँ कयल गेलअछि; तथापि एहि कालिकालमे दुर्गासप्तशतीक जतेक महत्त्व एवं प्रसिद्धि अछि ततेक अन्यान्य धार्मिक निबन्धादिक नहि ।

संस्कृत भाषाक विविध छन्दमे सात सय श्लोकमे निर्म्मित दुर्गा सप्तशती सभ वर्गक लेल पांठ करवा आ' अर्थ बुझवामे सुगम नहि छल । सम्प्रति अल्पसंख्यके लोक संस्कृत पढवामे रुचि रखैत छथि । जाहि सँ परिमिते वर्ग संस्कृतश्लोकबद्ध दुर्गासप्तशती सँ लाभ उठा सकैत छलाह । एहि वस्तुकें ध्यानमे राखि लेखक महोदय मैथिली पद्यमे उक्त ग्रन्थक अनुवाद क' सर्व साधारणो व्यक्तिक हेतु चण्डीपाठ सुलभ बना देलन्हि । संस्कृत भाषानिबद्ध सात सय श्लोकक मैथिलीमे पद्यानुबाद करयवला विद्वान् लेखक के छलाह ? ई जिज्ञासा होयव कोनो अस्वाभाविक नहि, तें पाठक वर्गक लेल हुनक परिचयक संगहि हुनक प्रमुख उपलब्ध कृति सभक संक्षेपमे उल्लेख कऽ देव आवश्यके बुझना जाइछ ।

स्व. पं. सुरेश झाक जन्म नेपालराज्यान्तर्गत तराई प्रान्तक महोत्तरी जिल्लाक सांढा ग्राम मे भेल छलनि । हिनक पिताक नाम जयदेव झा आ' माताक नाम राधा देवी छलनि । वाल्यावस्थहिं सँ ई अत्यन्त तीक्ष्णबुद्धि आ' लगनशील छलाह । व्याकरण, न्याय, धर्मशास्त्र, साहित्य आदि विविध शास्त्रमे असाधारण अधिकार प्राप्त छलनि । अनेकहुँ विद्यालय एवं महाविद्यालयमे अपन शोभन अध्यापनसँ सुयश अर्जित कयने छलाह । हिनक लेखनी संस्कृत, मैथिली एवं हिन्दी कविताक निर्म्माणमे अबाध गतिसँ चलैत छलनि । मैथिलीमे तँ एहन प्रखर प्रतिभा आ' असामान्य अधिकार छलनि जाहिसँ

श्रीमद्भगवद्गीताक अठारहो अध्यायक मैथिली पद्यमे रचना कऽचुकल छथि। संस्कृत, हिन्दी एवं मैथिलीमे विरचित हिनक प्रसिद्ध ग्रन्थावलीक परिचय संक्षेपमे प्रस्तुत क' रहल छी।

संस्कृत मे :-

१. श्लोक सिद्धान्त कौमुदी

भट्टोजिदीक्षित- विरचित सिद्धान्त कौमुदी व्याकरण ग्रन्थ समूहमे सभ सँ अधिक प्रसिद्ध, मौलिक आ' कठिन मानल गेल अछि। एहन विशाल आ' दुरूह ग्रन्थकें श्लोकबद्ध कय विद्वज्जन समक्ष उपस्थापन कयनाइ साधारण व्यक्तित्वक काज नहि कहल जा सकैछ। बारह हजार श्लोक सँ पूर्ण भेल ई ग्रन्थ दू भाग मे विभक्त अछि। प्रथम भाग मे संज्ञाप्रकरण, परिभाषा, सन्धि, प्रकृतिभाव, अजन्त पु., अजन्त स्त्री, अजन्त न. हलन्त पु., हलन्त स्त्री., हलन्त न., अव्यय, स्त्रीप्रत्यय, कारक समास समासाश्रय, तद्धित आदिकें विवेचन कयल गेलअछि।

द्वितीय भागमे तिङन्त, ण्यन्त, सन्नन्त, यङन्त, यङ्लुगन्त, नामधातु, कण्वादि, प्रत्ययमाला, आत्मनेपद, परमैद, भावकर्म, कर्मकर्त्तृप्रक्रिया, लकारार्थ, कृत्यप्रत्यय, पूर्वकृदन्त उत्तरकदन्त, लिङ्गानुशासन, गणपाठ एवं धातुपाठ आदिक विस्तृत विवेचन विविध पद्य मे कयल गेल अछि, जाहिसँ नीरस, कठोर आ दुरूह ई ग्रन्थ सरस, सरल आ' बोधगम्य वनिगेल अछि।

२. संस्कृत बोधचन्द्रिका

एहिमे संस्कृत सिखयवाक विधि अनेक प्रकारक उदाहरण प्रत्युदाहरणद्वारा प्रस्तुत कयल गेल अछि। प्राञ्जल आ' सरल शब्द समूहक विन्यास सँ ई ग्रन्थ अल्पवयस्क कोमलबुद्धि छात्र वर्गक लेल से हो अत्यन्त लाभकारी सिद्ध भेल अछि। अनेक छोटछोट कथा शीर्षक पर उदाहरण मुखेन निबन्ध रचना अभ्यासक विकास छात्र मे कोन तरहें होयत तकर मार्ग सेहो

देखाओल गेल अछि । प्राय: एहि प्रकारक वैशिष्ट्य कें देखि मा. शि. वोर्ड राजस्थान द्वारा प्रवेशिका परीक्षाक पाठ्यग्रन्थ रूपमे स्वीकृत भेल अछि ।

३. संस्कृत श्लोक व्याकरणम्

एहि ग्रन्थमे सुललित सरल श्लोक द्वारा व्याकरणक कठिन प्रयोग आ' साधनिका प्रक्रियाकें अल्प समयमे वोध करयवाक प्रयत्न कयल गेल अछि । व्याकरणक क्लिष्टताक कारणें छात्रवर्गमे जे कठिनाई छल ताहिकें हृदयङ्गम क' लेखक एहि कृति कें रुचिकर आ' सरलतर वनयवाक हेतु प्रयोगात्मक पद्धतिकें स्वीकार करैत पद्यात्मक रचना सँ ग्रन्थकें विशिष्ट रूप देने छथि ।

हिन्दी मे :-

४. हिन्दी वंगविजय काव्य

एहि मुक्तक काव्यमे वंगला देश स्वतन्त्र करवामे पाकविरुद्ध युद्धक अभियानमे यथास्थान घटित घटना सभकें अनेक छन्दमे वर्णन कयल गेल अछि । बंगला देशक स्वतन्त्रता संग्रामक अग्रणी नेता मुजिवुर्र रहमानक गुणाख्यानक संगहि बंगस्वतन्त्रताक हेतु आत्माहुति देवयवला अनेको वंगवासी तथा भारतीय जवान सभक गुणगान कयल गेल अछि । यद्यपि ई काव्य वीररस प्रधान। थीक तथाऽपि अन्यान्य रस सभक सेहो समावेश भेल अछि । प्रस्तुत काव्यमे ५६ प्रकारक छन्दक प्रयोग कविक छन्द:शास्त्रमे पूर्ण अधिकारक परिचय द' रहल अछि । प्रत्येक कवितामे अलङ्कारक माधुर्य आ' अर्थ गौरव उद्भासित भेल अछि । काव्यक अन्तर्गत एक पद्यमे तँ नओ रसक समावेश क' कविक अपूर्व प्रतिभाक परिचय प्रस्तुत कयल गेल अछि । उपर्युक्त गुण सँ परिपूर्ण छोट आकारक होइतहुँ ई मुक्तक काव्य सहृदय विद्वान् आ' पाठक वर्ग कें आकृष्ट करवाक सामर्थ्य रखने अछि ।

५. हिन्दी व्याकरण चन्द्रिका

एहि मे शुद्ध शुद्ध हिन्दी लिखवाक आ वजबाक हेतु व्याकरणक विविध नियमक उल्लेख कयल गेल अछि। एहिकें पढलासँ हिन्दी भाषामे शुद्ध निबन्ध, लेख, आ' रचना आदि लिखल जा सकैत अछि।

मैथिली मे

६. मैथिली गीता

श्रीमद्भगवद्गीताक अठारहो अध्यायकें मैथिली पद्य मे रचना क' संस्कृतसँ अनभिज्ञ सर्वसाधारण व्यक्ति सभक लेल सेहो परम उपकार कयने छथि। मैथिली पद्यमाध्यमसँ विविध छन्द मे लिखल गेल ई गीता विशिष्ट विद्वान् लोकनिकें सेहो चकित करवा मे समर्थ अछि। आद्योपान्त एहि ग्रन्थकें देखलासँ ई स्पष्ट भान भ' जायत जे स्व. लेखक मैथिली कविताक निर्म्माणहु मे सिद्धहस्त छलाह। ग्रन्थक अन्तमे गीतामाहात्म्यक वर्णन सरस आ' सरल पद्यमे कयल गेल अछि।

७. मैथिली मिथिला माहात्म्य

मैथिली भाषाक पद्यमे अनेक छन्दमे नौ अध्यायमे रचित ई ग्रन्थ मिथिलाक राजा जनकक वंशावली आ' मैथिलीक सम्बन्धमे विशेष जानकारी द' जिज्ञासु लोकनिक जिज्ञासाक पूर्ति कयने अछि। मिथिलाक नामकरण, सीमा, नदी, पुष्करिणी, तीर्थस्थल आदिक माहात्म्य एवं मिथिलावासक पुण्य-फलक वर्णनक संगहि जगज्जननी जानकी आ' राजा जनकक पूर्ण परिचय प्रस्तुत ग्रन्थसँ प्राप्त होइत अछि।

८. मैथिली रस कलश काव्य

मैथिली पद्यक अनेकविध छन्दमे निबद्ध ई काव्य ग्रन्थ रस ओ भावादिसँ पूर्ण विविध शीर्षक पर रचल गेल सरल सरस आ' सुन्दर कविताक

संग्रह थिक । एकि कृतिमे देववन्दना, गुरुवन्दन, सरस्वतीवन्दन, जानकीवन्दन, शिवस्मरण, मिथिलावर्णन, विद्यापतिप्रशस्ति, व्यङ्ग्यविनोद आदि शीर्षक पर फुटकर कविता लिखल गेल अछि । हास्य व्यङ्ग्यसँ परिपूर्ण ई कवितावली सभवर्गक लोकक लेल आनन्द आ हास्य प्रदान मे पूर्ण सक्षम अछि ।

९. मैथिली जनजीवन काव्य

प्रस्तुत मौलिक रचनामे हास्य, व्यङ्ग्य, उत्प्रेक्षा आदिक संगहि लोकरीति आ' कुरीति सभक समीक्षा कयल गेल अछि । प्रारम्भमे गणेश वन्दना, गंगामाहात्म्य, गुरु वन्दना, प्रभुकृपा आदिक वर्णन क' कर्त्तव्य, सदाचार, नीकलोक, सज्जन, दुर्जन, महापुरुष आदिक लक्षण सरल कविता मे कयल गेल अछि । सादापन, सत्संग, अपने सुधरू, अपनाले सोची, सधुआ सदा सुखी, क्रोधक दोष, सन्तोष, धर्मपथ, ब्रह्मचर्य, चरित्रफल, उदारबनी, समाजसँ सीखू, शास्त्रपचल, बडप्पन, सत्यमित्र, मित्रंक कर्त्तव्य, प्रभावी पुरुष, मनस्वीक मोल नहि आदि छोट छोट शीर्षक पर प्राञ्जल भाषा एवं वक्रोक्तिशैली मे लिखल कविता सहृदयवर्गकें आह्लादित करैत अछि । एहि काव्यक प्रत्येक कविता उपदेशात्मक तथा कल्याणात्मक होयवाक करणें जीवन पथमे डेग डेग पर सहायक भ' सकैत अछि ।

१०. श्री सत्यनारायण पूजा पद्धति (मैथिली पद्यानुवाद)

प्रचलित व्रत-पूजा सभमे सत्यनारायण पूजा अधिक व्यापक आ' सर्वोपरि मानल गेल अछि । ई व्रत-पूजा प्रत्येक हिन्दू जातिक लेल सभ तरहें मान्य अछि । अन्यान्य देवी देवताक पूजाक हेतु मास, तिथि, काल, पर्व आदिक निर्धारण कयल गेल अछि, किन्तु ई पूजा कोनोमास, कोनहु तिथि आ कोनहु दिनमे श्रद्धाभक्तिपूर्वक कय सकैत छी । समाजमे कोनो तरहक आपत्ति, विघ्न-बाधा, संकट आदि सँ त्राणक हेतु एहि व्रतक अनुष्ठान कयल जाइत अछि । अति प्रख्यात एहि सत्यनारायण कथाक सरल सुबोध मैथिली पद्य मे अनुवाद

भेलासँ एहि व्रतक प्रचार प्रसार आओर बढि गेल अछि । प्रारम्भमे पूजाक विधि विधान, जे संस्कृत भाषा मे लिखल गेल अछि ताहिकें सरल मैथिली भाषामे अनुवाद क' सर्व साधारणो लोकक हेतु सौविध्य प्रदान कयल गेल अछि ।

११. श्री दुर्गा सप्तशती (मैथिली अनुवाद)

मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी माहात्म्यक वर्णन सात सय श्लोकमे कयल गेल अछि, तें एहि स्तोत्रसमूहक नाम दुर्गासप्तशती राखल गेल । दुर्गासप्तशतीक पाठ भारत आ नेपालक प्रत्येक क्षेत्र मे होइत अछि । यद्यपि बहुतो आस्तिक भक्तलोकनि विष्णु, शिव, ब्रह्मा, सूर्य, आ गणेश आदि देवताक श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक उपासना करैत छथि, किन्तु परमशक्तिस्वरूपा जगदम्बा दुर्गाक आराधनासँ जतेक शीघ्र मन: कामनाक पूर्त्ति भ' सकैत अछि ततेक अन्यान्यदेवताक अनुष्ठानसँ नहि । विशेषत: एहि कलियुगमे शिव आ' चण्डीक प्रभाव अधिक अछि । तें 'कलौ चण्डी महेश्वरौ' ई उक्ति प्रसिद्ध अछि । अर्थात् कलियुग मे चण्डी तथा महेश्वरसँ बढिकँ कल्याणकारी अन्य देवता नहि भ' सकैत छथि । कोनो तरहक मन: कामनाक पूर्त्ति ध्यान पूर्वक दुर्गासप्तशतीक पाठ कयलासँ भऽसकैत अछि । केहनो आपत्ति-विपत्ति आ पैधसँ पैघ विघ्नबाधाक विनाश एहि पाठ कें नियमपूर्वक कयलासँ होइत अछि । पाठकरवाक जे विधि अछि तदनुसार पाठ कयलासँ अल्पो समय मे अधिकसँ अधिक वान्छित फल प्राप्ति कयल जा सकैछ ।

बहुत प्राचीन कालसँ वर्ष मे चारि वेर नवरात्र मनाओल जाइत अछि । एहि चारि मध्ये आश्विन मासक शुक्लपक्षीय नवरात्र बड धूमधामक संग भक्तजनद्वारा सम्पन्न होइत अछि । एहि मे आश्विन शुक्ल परिवसँ नवमी तिथि धरि घर घरमें घटस्थापना क' भगवतीक पूजा पाठ कयल जाइत अछि । नवरात्र मे दुर्गासप्तशतीक पाठ प्रत्येक परिवारमे स्वयं वा पुरोहितद्वारा कयल जाइत अछि । सप्तशतीक पाठ मिथिलासँ वाहरो बंगाल, आसाम, उडीसा,

यू.पी., मध्य प्रदेश आदि भारतक विभिन्न प्रान्तमे तथा नेपालक तराई एवं पर्वतीय प्रदेशमे समेत श्रद्धा पूर्वक कयल जाइत अछि। अनेक तरहक ग्रहादिक शान्तिक हेतु १०८ आवृत्ति सप्तशतीक पाठ करयवाक विधान अछि। दुर्गाक पाठसँ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एहि चारू पुरुषार्थक प्राप्ति भऽसकैत अछि। एहन सर्वजनोपयोगी दुर्गासप्तशतीक मैथिली पद्यानुवादमे लेखक कें सत्प्रयास अति प्रशंसनीय छनि। एहि मैथिली सप्तशतीसँ नारी वर्ग आ मिथिलावासी लोकनि कें आपेक्षिक अधिक लाभ प्राप्त भेलन्हि अछि;। कारण मिथिलावासी लोकनि विशेषरूपें शक्तिक उपासक होइत छथि। मिथिलाक घर घर मे कुल देवताक रूपमे भगवतीक स्थापना कयल गेल रहैत छनि। ईहो कारण भऽसकैछ जे हिन्दी आदि भाषा कें छोढि मिथिला मैथिल भक्त स्व. विद्वान् लेखक कें मैथिलीयेक पद्यमे अनुवाद करवाक प्रवृत्ति जागृत भेल होइन्ह।

संस्कृत भाषानिवद्ध मूल दुर्गासप्तशतीक अनुवाद यद्यपि मैथिलीमे कयल गेल अछि, तथाऽपि कतोक ठाम कविक भाव ओ वर्णनशैली मूलसँ भिन्नजेकाँ प्रतिभासित होइछ। मूले पोथी जेकाँ एहूमे तेरह अध्याय अछि।

आरम्भमे दुर्गामाहात्म्य, अर्गलास्तोत्र, कीलक, कवच शापोद्धार, काम्य प्रयोग विधि, शतचण्डी विधि, दुर्गाशतनामस्तोत्र, दुर्गाक ध्यान आ' अन्त मे देवीसूक्त, नवार्णविधि, सप्तशतीन्यास, देवी पूजा पद्धति, देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र, आरतीस्तोत्र, कुञ्जिकास्तोत्र, सप्तश्लोकी दुर्गा, कल्याणीस्तोत्र तथा आपदुद्धार स्तोत्र देल गेल अछि। जाहिमे दुर्गामाहात्म्य, दुर्गाशतनाम, दुर्गाकध्यान, संस्कृत आ मैथिली दूनू भाषा मे निवद्ध अछि। अर्गला, कीलक, कवच, देवी पूजा पद्धति, देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र, आरतीस्तोत्र, मैथिली मे एवं शापोद्धार काम्य प्रयोग विधि, शतचण्डी विधि, देवीसूक्त, नवार्णविधि सप्तशतीन्यास, कुञ्जिकास्तोत्र, सप्तश्लोकी दुर्गा, कल्याणीस्तोत्र आ' आपदुद्धार स्तोत्र मूल संस्कृतेमे प्रस्तुत कयल गेल अछि।

भेलासँ एहि व्रतक प्रचार प्रसार आओर बढि गेल अछि । प्रारम्भमे पूजाक विधि विधान, जे संस्कृत भाषा मे लिखल गेल अछि ताहिकें सरल मैथिली भाषामे अनुवाद क' सर्व साधारणो लोकक हेतु सौविध्य प्रदान कयल गेल अछि ।

११. श्री दुर्गा सप्तशती (मैथिली अनुवाद)

मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी माहात्म्यक वर्णन सात सय श्लोकमे कयल गेल अछि, तें एहि स्तोत्रसमूहक नाम दुर्गासप्तशती राखल गेल । दुर्गासप्तशतीक पाठ भारत आ नेपालक प्रत्येक क्षेत्र मे होइत अछि । यद्यपि बहुतो आस्तिक भक्तलोकनि विष्णु, शिव, ब्रह्मा, सूर्य, आ गणेश आदि देवताक श्रद्धा एवं भक्ति पूर्वक उपासना करैत छथि, किन्तु परमशक्तिस्वरूपा जगदम्बा दुर्गाक आराधनासँ जतेक शीघ्र मन: कामनाक पूर्त्ति भ' सकैत अछि ततेक अन्यान्यदेवताक अनुष्ठानसँ नहि । विशेषत: एहि कलियुगमे शिव आ' चण्डीक प्रभाव अधिक अछि । तें 'कलौ चण्डी महेश्वरौ' ई उक्ति प्रसिद्ध अछि । अर्थात् कलियुग मे चण्डी तथा महेश्वरसँ बढिकँ कल्याणकारी अन्य देवता नहि भ' सकैत छथि । कोनो तरहक मन: कामनाक पूर्त्ति ध्यान पूर्वक दुर्गासप्तशतीक पाठ कयलासँ भऽसकैत अछि । केहनो आपत्ति-विपत्ति आ पैधसँ पैध विघ्नबाधाक विनाश एहि पाठ कें नियमपूर्वक कयलासँ होइत अछि । पाठकरवाक जे विधि अछि तद्नुसार पाठ कयलासँ अल्पो समय मे अधिकसँ अधिक वान्छित फल प्राप्ति कयल जा सकैछ ।

बहुत प्राचीन कालसँ वर्ष मे चारि वेर नवरात्र मनाओल जाइत अछि । एहि चारि मध्ये आश्विन मासक शुक्लपक्षीय नवरात्र बड धूमधामक संग भक्तजनद्वारा सम्पन्न होइत अछि । एहि मे आश्विन शुक्ल परिवसँ नवमी तिथि धरि घर घरमें घटस्थापना क' भगवतीक पूजा पाठ कयल जाइत अछि । नवरात्र मे दुर्गासप्तशतीक पाठ प्रत्येक परिवारमे स्वयं वा पुरोहितद्वारा कयल जाइत अछि । सप्तशतीक पाठ मिथिलासँ बाहरो बंगाल, आसाम, उडीसा,

यू.पी., मध्य प्रदेश आदि भारतक विभिन्न प्रान्तमे तथा नेपालक तराई एवं पर्वतीय प्रदेशमे समेत श्रद्धा पूर्वक कयल जाइत अछि । अनेक तरहक ग्रहादिक शान्तिक हेतु १०८ आवृत्ति सप्तशतीक पाठ करयवाक विधान अछि । दुर्गाक पाठसँ धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष एहि चारू पुरुषार्थक प्राप्ति भऽसकैत अछि । एहन सर्वजनोपयोगी दुर्गासप्तशतीक मैथिली पद्यानुवादमे लेखक कें सत्प्रयास अति प्रशंसनीय छनि । एहि मैथिली सप्तशतीसँ नारी वर्ग आ मिथिलावासी लोकनि कें आपेक्षिक अधिक लाभ प्राप्त भेलन्हि अछि; । कारण मिथिलावासी लोकनि विशेषरूपें शक्तिक उपासक होइत छथि । मिथिलाक घर घर मे कुल देवताक रूपमे भगवतीक स्थापना कयल गेल रहैत छनि । ईहो कारण भऽसकैछ जे हिन्दी आदि भाषा कें छोढि मिथिला मैथिल भक्त स्व. विद्वान् लेखक कें मैथिलीयेक पद्यमे अनुवाद करवाक प्रवृत्ति जागृत भेल होइन्ह ।

संस्कृत भाषानिवद्ध मूल दुर्गासप्तशतीक अनुवाद यद्यपि मैथिलीमे कयल गेल अछि, तथाऽपि कतोक ठाम कविक भाव ओ वर्णनशैली मूलसँ भिन्नजेकाँ प्रतिभासित होइछ । मूले पोथी जेकाँ एहूमे तेरह अध्याय अछि ।

आरम्भमे दुर्गामाहात्म्य, अर्गलास्तोत्र, कीलक, कवच शापोद्धार, काम्य प्रयोग विधि, शतचण्डी विधि, दुर्गाशतनामस्तोत्र, दुर्गाक ध्यान आ' अन्त मे देवीसूक्त, नवार्णविधि, सप्तशतीन्यास, देवी पूजा पद्धति, देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र, आरतीस्तोत्र, कुञ्जिकास्तोत्र, सप्तश्लोकी दुर्गा, कल्याणीस्तोत्र तथा आपदुद्धार स्तोत्र देल गेल अछि । जाहिमे दुर्गामाहात्म्य, दुर्गाशतनाम, दुर्गाकध्यान, संस्कृत आ मैथिली दूनू भाषा मे निवद्ध अछि । अर्गला, कीलक, कवच, देवी पूजा पद्धति, देव्यपराधक्षमापनस्तोत्र, आरतीस्तोत्र, मैथिली मे एवं शापोद्धार काम्य प्रयोग विधि, शतचण्डी विधि, देवीसूक्त, नवार्णविधि सप्तशतीन्यास, कुञ्जिकास्तोत्र, सप्तश्लोकी दुर्गा, कल्याणीस्तोत्र आ' आपदुद्धार स्तोत्र मूल संस्कृतेमे प्रस्तुत कयल गेल अछि ।

प्रथम अध्यायमे गीतिका, भुजङ्गप्रयात आ गीति, द्वितीय अध्याय मे गीति, तृतीय अध्याय मे गीतिका तथा दोहा, चतुर्थ अध्याय मे द्रुतविलम्बित गीतिका आ दोहा, पञ्चममे दोहा, गीति आ शार्दूलबिक्रीडित, षष्ठमे गीति, सप्तममे गीति आ दोहा अष्टममे गीति; भुजङ्गप्रयात आ दोहा नवममे भारती आ दोहा, दशममें गीति आ दोहा एगारहममे गीति, इन्द्रवज्रा अनुष्टुप, द्रुत विलम्बित, भारती आ सा.वि.छ., बारहममे गीति तथा तेरहममे गीति छन्द आ' दोहाक प्रयोग भेल अछि। जाहि अध्यायमे जेहन वर्णन अछि तदनुसार ताही तरहक छन्दक प्रयोग कविद्वारा कयल गेल अछि। अनेकहु ठाम उपमा आदि अलङ्कारक उदाहरण लेखकक कृतियेसँ प्रस्तुत कऽरहलछी। दोसर अध्यायमे महिषासुर सेनासमूहद्वारा भगवती पर प्रहार कयल गेल अस्त्र-शस्त्रादिक वर्णनक प्रसङ्गमे :-

अस्त्र शस्त्र प्रहार देवी के ऊपर वर्षा जकाँ
गनगनाइत शस्त्र नचइत रहय घर चर्खा जकाँ॥
असुर शस्त्र प्रहार कें ओ चण्डिका कटइत छली
काटि अरिशिर माटिये मे असुर के पटइत छली॥ "उपमा अलङ्कार"

एही तरहें तेसर अध्यायमे युद्धक प्रसङ्गमे कविक उत्प्रेक्षा- अलङ्कारक प्रयोग कतेक सटीक अछि :-

बाण वर्षा करय लागल अम्बिका पर जोर सँ।
मेरु गिरि कें शिखरपर जनु मेघ बरिसय जोर सँ॥ "उत्प्रेक्षा"।

तखन हाहाकार करइत सैन्य भागल सटपटा।
हर्ष पौलनि देवतागण - गेल दुःखदर्दकघटा॥ "रूपकालङ्कार"

कविक वर्णन करवाक व्यङ्ग्यप्रधान शैली बड विलक्षण अछि । देवीक व्यङ्ग्यवाणी शुम्भक उद्देश्यसँ ओकरा दूतक प्रति कहल गेल केहन मार्मिक अछि ई सहृदय विद्वान् अनुभव क' सकैत छथि । शुम्भक दूत अपन स्वामीक सन्देश देवीकें सनुवैत छनि जे शुम्भत्रैलोक्यके अधिपति छथि अर्थात् तीनू लोकक (स्वर्ग मर्त्य आ पातालक) राजा छथि । तकर प्रत्युत्तर भगवती एहितरहें दैत छथिन्ह :-

सन्देशवाणी सत्य आहाँकेर अछि मानैत छी ।
त्रैलोक्य के अधिपति न आहाँ आधिपति मानैत छी ॥

अर्थात् तीनू लोकक अधिपति तँ नहि, मुदा आधिपति अर्थात् मानसिक व्यथाक पति अवश्य छी ।

यद्यपि ई मूल दुर्गा सप्तशतीक मैथिली अनुवाद थीक तथापि, कतोक ठाम कविक वर्णनशैली अपन भावानुसार स्वतन्त्रो देखल जाइछ । अनेको प्रकारक छन्द आ' अलङ्कारक प्रयोग, रस ओ भावादिक सन्निवेश तथा मनोरम भाषाशैलीसँ एहि कृतिक महत्ता वढि गेल अछि । कविक मैथिलीपद्य बद्ध एहि कृति मे सौन्दर्यधारणा आ मातादुर्गाक प्रति भक्तिभावना स्पष्ट व्यक्त भ' रहल अछि ।

प्राध्यापक डा. रामचन्द्र झा 'शास्त्री'
अध्यक्ष : संस्कृत केन्द्रीय विभाग
त्रिभुवन विश्वविद्यालय कीर्तिपुर, काठमाण्डू ।

दू शब्द

श्री 'दुर्गा सप्तशती' सनातन धर्मक अनुयायी लोकनिक एकटा सर्वमान्य ग्रंथ अछि । मिथिला आओर मैथिलीक स्मरण करितहिं शक्तिस्वरूपा दुर्गाक ललित रूप प्रत्यक्ष भ' जाइछ । मिथिला शक्तिक उपासक थिक । आइधरि मिथिलाक भाषा 'मैथिली' में एहि दुर्लभ ग्रंथक कोनोटा कृति नहि छल । मिथिलाक भक्त कवि, दुर्गाक उपासक विद्यापति, हुनक लीलाक वर्णन त' कयलनि परंच, अपन माइक भाषा में अनुवाद नहि कयलनि ।

बहुतो दिन सँ शक्तिस्वरूपा दुर्गाक महिमा केँ जनभाषा में रूपान्तरित करबाक अभिलाषा छल, आइ हमर अभिलाषा पूर्ण भेल । पाठकगण यदि अपन मायक भाषा में एहि महिमामयी दुर्गा सप्तशतीक प्रति विशेष रुचि देखौताह, त' हमर मनोरथ पूर्ण भ' जायत ।

प. श्री सुरेश झा
साँढा, महोत्तरी
नेपाल

विषय सूची

१. किञ्चित् कथन

२. दुर्गामाहात्म्य.. १

३. अर्गलास्तोत्र.. ४

४. कीलकस्तोत्र.. ८

५. देवीकवचस्तोत्र.. ११

६. शापोद्धार १९

७. काम्य प्रयोग विधि.. २१

८. शतचण्डी विधि.. २३

९. दुर्गा-शतनामस्तोत्र २४

१०. श्री दुर्गाक तथा श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वतीक ध्यान २७

११. प्रथमाध्याय सँ त्रयोदशाध्याय धरि संपूर्ण दुर्गा २९

१२. देवीसूक्तम् १२५

१३. नवार्ण विधि १२७

१४. पुनः देवीक ध्यान १२८

१५. सप्तशती न्यास १२९

१६. श्री देवी पूजा पद्धति १३०

१७. मैथिली देव्यपराध-क्षमापन-स्तोत्र १३७

१८. श्री दुर्गाक आरती १३८

१९. कुञ्जिका-स्तोत्रम् १४४

२०. सप्तश्लोकी दुर्गा १४६

२१. कल्याणी-स्तोत्रम् १४७

२२. मिथिलाक विशिष्ट विद्वान्
पं. सुरेश झा : जीवन परिचय १५१

मैथिली दुर्गा सप्तशतीक भूमिका स्वरूप
अपन किञ्चित् कथन

शार्दूल विक्रीडित छन्द

श्री दुर्गाक कथा सनातन प्रथा प्रख्याति पौने महा
गौने वेद पुराण शास्त्र सभ में व्यासादि कैने थिका।
तँ दुर्गाक समस्त बस्तु विषयो केँ मैथिली पद्य में,
कैलौं ई अनुवाद भक्त जन केँ, आनन्द हो एहिला ॥ १

कियो छी वैष्णव शैवशाक्त मतके, सम्मान कारी अहाँ,
कियो श्री सूर्य गणेश आदि सुर के, श्रद्धा सँ सेवा करी।
किन्तु श्री जगदम्बिकाक तुलना, कत्तौने देखी सुनी,
संसारी जन होथि शक्ति महिमा, मानैबला सर्वदा ॥ २

विद्या श्री प्रतिभा दया शुभकला, वाणी जयन्ती जया
धी ह्री बुद्धि शिवा प्रभा सुमतिदा माया जगद्व्यापिनी।
दुर्गा शक्ति विना हरोहरि विधी, क्यो ने सुखीशान्त हो
वर्षे वर्ष बनैछ चारि दशमी दुर्गार्चना हेतु तँ ॥ ३

गीता के अनुवाद कैल पहिने, सज्ञान विद्वान केँ
आगाँ राखि मनोविनोद कयलौं सेवा सिखा शास्त्र केँ।
दुर्गा के अनुवाद ई सफल हो श्री मैथिली क्षेत्र में
ई दुर्गा पढि भक्तिभाव करता नारी नरो मैथिली ॥ ४

स्रगधरा छन्द

दुर्गा रुद्रीक पाठी त्रिभुवन जनके मान्य भै' क" सुखी हो
वैरी के नाश कैने रहथि सदिखने, भोग संयोग सँ ओ,
तैं देवी शक्ति के ई स्तुति बचन कथा मैथिली माध्यमेसँ
कैलौं ई जानि आहाँ सभक मन खुशी हैत आशा करैछी ॥ ५

उपजाति छन्द

सुरेश झा मैथिल गाम "साँढा"
वासीक दुर्गा अनुवाद पूरा ।
सेवा बुझू मैथिल बन्धु के ई
लेबाक आहाँ सँ न वस्तु कोनो ॥ ६

राधा तथा श्री जयदेव झा जी
माता पिता के पदमें चढ़ा क' ।
पुराणके बात नवीन कैक'
दुर्गा प्रसादी हम बाँटि दै छी ॥ ७

सहृदय मैथिलसमाजसेवी
सुरेश झा भू.पू. प्राचार्य
गा.साँढा, जि. महोत्तरी (नेपाल)

॥ अथ दुर्गामाहात्म्यम् ॥

ओम् नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥
ब्रह्मन् केन प्रकारेण, दुर्गा-गाहात्म्यमुत्तम ।
शीघ्रं सिद्ध्यति तत्सर्वं कथयस्व महामते ॥ १

ब्रह्मोवाच ॥
अर्गलं कीलकं चादौ, पठित्वा कवचम्पठेत् ।
जपेत् सप्त-शतीम्पश्चात्-क्रम एष शिवोदित : ॥ २

अर्गलं दुरितं हन्ति, कीलकं फलदं भवेत् ।
कवचं रक्षते नित्यं, चण्डिका त्रितयं तथा ॥ ३

अर्गलं हृदये यस्य, तथाऽनर्गलवागसौ ।
भविष्यतीति निश्चित्य, शिवेन कथितं पुरा ॥ ४

कीलकं हृदये यस्य, सकीलितमनोरथ :
भविष्यति न सन्देहो, नान्यथा शिव भाषितम् ॥ ५

कवचं हृदये यस्य स वज्रकवचः खलु ।
भविष्यतीति निश्चित्य ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ॥ ६

मैथिली सारांश

मार्कण्डेय ऋषि ब्रह्मा सँ पुछलनि-

हे प्रजापति कोन तरहें, पाठ दुर्गाके करी ।
माहात्म्य के फल पाबि कोना अपन दुख संकट हरी ॥ १

ब्रह्मोवाच

अर्गला के आदि में पढ़ि तखन कीलक कवच पढ़ि ।
करैक चाही पाठ दुर्गा कें समुन्नति दिश बढ़ी ॥ १

अर्गला के पाठ कैने, पाप सबटा दूर हो ।
बाद में कीलक पढ़ी त', से फलद भरिपूर हो ॥ २

कवच पढ़ने चण्डिकाजी, नित्य दिन रक्षा करथि ।
एहि तरहें पाठ सँ शुभ, शान्ति सँ मनके भरथि ॥ ३

अर्गला के स्मरण पढ़ला, सँ ने कटुवाणी बने ।
ओ अनर्गल नहि करैअ, कहने शिव छथि एहने ॥ ४

मन्त्र कीलक स्मरण कैने, सभ मनोरथ सिद्ध हो ।
एहि में सन्देह नहि किछु, शिव कहल ई सिद्ध हो ॥ ५

विधि सँ निर्मित कवच जे जन, पढ़अ सेहो बज्रतनु ।
होए सुख सम्पत्तिबाला, कवच के फल शुभ गनू ॥ ६

अथ दुर्गा सप्तशती पाठक्रम

अर्गला कीलकं चादौ, जपित्वा कवचं पठेत् ।
जपेत् सप्तशतीं पश्चात्, क्रम एष शिवोदितः ॥

तन्त्रान्तरेऽपि

कवचं वीजमादिष्टमर्गलाशक्ति रुच्यते ।
कीलकं कीलकं प्राहुः सप्तशत्या महामनोः॥
चण्डी सप्तशतींमध्ये सम्पुटोऽयमुदाहृतः ।
प्रान्तेतु पठनीयं वै देवी सूक्तमिति क्रमः ॥
शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवार्णकम् ॥

अथ अर्गलास्तोत्रम्

ओं नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥

गीति छन्द

देवि चामुण्डे अहाँ दुख-हारिणी सभ ठाम छी ।
कालरात्री के सदा जय, कहि करैत प्रणाम छी ॥

जयन्ती मङ्गला काली, भद्रकाली कपालिनी ।
काली क्षमा शिवा धात्री, दुर्गा स्वाहा स्वधा अहाँ ॥

गीतिका

मधु तथा कैटभक नाशिनी, बह्माक हे वरदायिनी।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू, बनु वरदायिनी ॥

महिष सेना के विनाशिनि, हे भक्तजन सुखकारिणी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनु वरदायिनी ॥

धूम्रलोचन दर्पनाशिनि, हे देवि सुख शुभ दायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनु वरदायिनी ॥

रक्तबीजक वध विधायिनि, असुर वंश विनाशिनी ।
रूपजय यश दैक शत्रुक नाश करू बनु वरदायिनी ॥

हे निशुम्भक प्राणहन्त्री, असुर के कुल नाशिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनु बरदायिनी ॥

शुम्भ दानव के विनाशिनि, देवि हे वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनु वरदायिनी ॥

हे वन्दिताङ्घ्रियुगे सकल, सौभाग्य वर के दायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू वनु वरदायिनी ॥

हे अचिन्त्य स्वरूपवाली, हे सर्वशत्रु विनाशिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनु सुखदायिनी ॥

सौभाग्य ओ आरोग्य सुन्दर, सुख दिअ वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनु सुखदायिनी ॥

शत्रु के करू नाश दुर्गे, हमर बनि वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनु सुखदायिनी ॥

कल्याण करु शोभा धनश्री, सेहो दिअ' वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक नाश करू बनि सुखदायिनी ॥

प्रचण्ड भुजयुग दण्डवाला, दैत्य दर्प विनाशिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनु वरदायिनी ॥

हे भक्त जन आनन्दकारिणि, हे अम्बिके वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनु वरदायिनी ॥

स्तुति करथि नतभै पूजथि, तकर पाप विनाशिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक नाश करू बनि वरदायिनी ॥

जे अहाँ के सभक्ति पूजथि, तकर व्याधि विनाशिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक नाश करू बनि वरदायिनी ॥

हे चण्डिके अहाँक पूजा, करथि तिनका वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक नाश करू बनि सुखदायिनी॥

सुर असुर दूनू सँ पूजित, हे अम्बिके बरदायिनी ॥
रूप जय यश दैक शत्रुक नाश करू बनि सुखदायिनी॥

विद्वान कैक करू यशस्वी, धनिक करू हे वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक.नाश करु बनि सुखदायिनी ॥

प्रचण्ड दैत्यक दर्पनाशिनी, हे चण्डिके वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक नाश करु बनि सुख दायिनी ॥

हे चारि भुजवाली चतुर्मुखसंस्तुते: वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक नाश करू बनि सुखदायिनी ॥

श्रीकृष्णसँ पूजित अहीं छी, हे अम्बिके वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक नाश करू बनु सुखदायिनी ॥

हिमगिरि कन्याक पतिसँ, पूजिते वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक,नाश करू बनि सुखदायिनी ॥

हे शचीपति पूजिताङ्घ्रे, परमेश्वरी वरदायिनी ।
रूप जय यश दैक शत्रुक, नाश करू बनि सुखदायिनी ॥

मनोरमा सुन्दर रूपवाली,
मनोऽनुकूला भवतारिणी जे ।
धीरा तथा बुद्धिमती कुलीना,
हे देवि दीअ' सुखदायिनी स्त्री ॥

एहि स्तोत्रक पाठ क' क, तखन दुर्गा के पढ़ू ।
सातसय वर पावि आहाँ, सुख समुन्नति में बढ़ू ॥
अर्गला ई पाप नाशक दारिद्र्य के नाशक सदा ।
आदि में पढ़ु अर्गला ई, तखन दुर्गा के कथा ॥

॥ इत्यर्गला-स्तोत्रम् ॥

अथ कीलकम्

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥

विशुद्ध देही तिन आँखिबाला ,
कल्याण के दायक दिव्य रूपी ।
त्रिवेद रूपी शशिखण्ड धारी,
प्रणाम तैं श्री शिवके करै छी ॥ १

जे मन्त्र के शाप सुकीलनादि,
वस्तुस्थिती पाठक रीति जाने ।
दुर्गाक पाठी जप होमकर्ता,
से सर्व सौभाग्य फलादि पावे ॥ २

उच्चारणादिक सर्ववस्तुक, सिद्धि कीलक पाठ सँ ।
भगवती के सिद्धि पावे, स्तोत्रवृन्दक पाठ सँ ॥ ३

मन्त्र वा औषधि ने कोनो, काज दे कीलक बिना ।
मारणादिक नहि बनैअ, सविधि पाठन के विना ॥ ४

जानिक' ई बात शिवजी, ऋषि मुनि के बजायक' ।
सभक सङ्कट दूर कैलनि, मन्त्र कीलक गावि क' ॥ ५

चण्डिका के स्तोत्र सुन्दर, गुप्त रखलनि शङ्करे ।
बहुत पुण्यक प्राप्ति कैने, प्राप्त क्यो कीलक करे ॥ ६

कीलकादिक सहित चण्डी, पाठ फल शुभ प्राप्तिमें ।
हो न शंका कोनो तरहक, कल्याण शुभके प्राप्तिमें ॥ ७

प्रत्येक मासक कृष्ण नवमी, अष्टमी वा चतुर्दशी ।
तिथि मे दुर्गा सविधि पढ़ने, होथि दुर्गाजी खुशी ॥ ८

पाठकक अपन सरवस, सभ चढ़ाक प्रसन्न भै ।
लेथि देवी सँ प्रसादक, रूप में धन-धान्य कें ॥ ९

एहि तरहे कहि महाशिव, मन्त्र कीलक तत्व कें ।
ऋषि मुनी सभ कील के फल, सुनिक' हर्षित तत्वके । १०

कीलकादिक सहित दुर्गा-पाठसँ कल्याण हो ।
सब तरह सम्मान भेटे, सतत सभ ठाँ त्राण हो ॥ ११

सिद्ध वा गन्धर्व ओ नर होइत अछि कीलक जपी ।
सात सौ ई मन्त्र जपु सभ, भक्त बनि दुर्गा जपी ॥ १२

वन में घुमइत वा कतहुँ रहि, भय न हुनका होइत अछि ।
होय ने अपमृत्यु हुनका, मोक्ष अन्त में होइत अछि ॥ १३

कोनो कर्मठ विज्ञसँ बुझि, सविधि दुर्गा पाठ करू ।
अन्यथा विधिहीन दुर्गा-पाठ सँ शापित मरू ॥ १४

पाठ विधिपूर्वक न हो त' नाश दुर्गाजी करथि ।
कीलकादिक कवच सहिते, पाठ पण्डितजन करथि ॥ १५

सौभाग्य ललनाजनक जे किछु, देखैत छी संसार में।
से सकल दुर्गा कृपा सँ, होय विधि अनुसार में।। १६

मन्द स्वर सँ पाठ कैने, फल कनिके होइत अछि।
उच्च स्वर सँ पाठ के फल सम्पूर्ण रूप पबैत अछि ॥ १७

इन्द्रबज्रा

ऐश्वर्य हो सुन्दर रूपबाला,
आरोग्य सम्पत्तिक वृद्धि भारी।
शत्रुक नाशो भ'जाय मोक्षो,
भेटे महा स्तोत्रक पाठ कैने ॥ १५

ठाढ़ भ' देवीक आगां, शुचि तनू कीलक पढ़ी।
तखन दुर्गा पाठ क' क' निज अभीष्टक दिश बढ़ी ॥ १६

स्तोत्र के निष्कील क' क' तखन दुर्गा पाठ करू।
चण्डिका तखने प्रसन्ना, भ' क' बनती कल्पतरू ॥ १७

बसन्त तिलका

प्रत्येक वासर पवित्र शरीर क'क',
जे स्तोत्र ई पढ़थि सूनथि चण्डिका के,
से सर्वथा प्रिय बने मदिरेक्षणा के,
प्राप्ती करे सकल मङ्गल कामना के। १८

इति श्री सुरेश झा विरचित मैथिली दुर्गासप्तशती मे
कीलक स्तोत्र सम्पूर्ण।

॥ अथ श्री देवीकवचम् ॥

ओं नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥
ब्रह्मा सँ मार्कण्डेय ऋषि प्रश्न कैलनि ।
जे छिपावक योग्य सबठाँ, जे मन्त्र रक्षा करे सभक ।
आइ धरि कहलौं नें ककरो, कहू से हे पितामह सभक ॥ १

हे विप्र सबसँ गुह्य बस्तु ई, प्राणीक उपकारक महा ।
देवी कवच शुभ पुण्यदात्री, से सुनू मुनिजन अहाँ ॥ २

नाम पहिला शैल पुत्री, तखन श्री ब्रह्मचारिणी ।
चन्द्रघण्टा नाम तेसर, कुष्माण्डा चारिम गनी ॥ ३

स्कन्दमाता नाम पञ्चम, कात्यायनी छठमा सुनू ।
कालरात्री नाम सप्तम, महागौरी अष्टम सुनू ॥ ४

नाम नवमा सिद्धिदात्री, इएह नव दुर्गा थिकी ।
उक्त ई नौ नाम ब्रह्मा, सँ कहल दुर्गा थिकी ॥ ५

एहि नौ नामक स्मरण सँ, अग्नि शत्रुक भय न हो ।
विषम दुर्गम स्थल में पीड़ित, जनके कोनो भय न हो ।

जे पढ़े दुर्गा कवच ई, तकरा न संकट अशुभ हो ।
आपत्ति वा दुखशोक भय किछु, कवच पाठी के न हो ॥
जे कवच पढ़ि भक्तिपूर्वक, स्मरण दुर्गा के करे ।
वृद्धि तकरा होय रक्षा, करथि देवी ओ तरे ॥ ८

जे कवच पढ़ि कहथि दुर्गे, तकरा ने भय कोनो तरह ।
हे सुरेश्वरि अहाँ ओकर, रक्षिका छी सब तरह ॥ ९

अनुष्टुप्

चामुण्डा प्रेत संस्था छी, वाराही महिषासना ।
ऐन्द्री गज समारूढ़ा, वैष्णवी गरुड़ासना ॥ १०

माहेश्वरी वृषारूढ़ा, कौमारी शिखिवाहना॥
ब्राह्मी हंससमारूढ़ा,सर्वाभरणभूषिता ॥ ११

लक्ष्मी पद्मासना देवी, ईश्वरी वृषवाहना ।
एहि रूपक हे देवी सर्वयोगसमन्विता ॥ १२

श्रेष्ठ मौक्तिक माला सँ, शोभिता छी अहाँ सदा ।
इन्द्रनील महानील, पद्मराग सुशोभिता ॥ १३

नानाभरण शोभाढ्या, अहाँ छी रत्नशोभिता ।
रथारूढ़ा अहां देवी, क्रोध सँ संकुला थिकौं : । १४

शङ्ख चक्र गदाशक्ति, हलमूसल धारिणी ।
खेट तोमर परशु, पाश सँ शोभिता अहाँ ॥ १४

कुलायुध त्रिशूलादि, शार्ङ्ग सँ शोभिता अहाँ ।
त्रिशूल बज्र पट्टीश, मुग्दरो अछि हाथ मे ॥ १६

दैत्य के नाश हो अइ सँ भक्त निर्भय होथु तैं ।
देवता हित इच्छा सँ, शस्त्रादी धारण करी ॥ १७

नमस्ते हे महारौद्रे महा घोर पराक्रमे ।
महावले महाकाले महाभय विनाशिनी ॥ १८

रक्षा करू अहाँ देवी, शत्रु कें भयवर्द्धिनी ।
भिन्न-भिन्न स्वरूपा छी, दश देवी दशो दिशा ॥१९

ऐन्द्री आग्नेयि बाराही, वारुणी खड्गधारिणी ।
मृगवाहिनी कौमारी, ब्रह्माणी शूलधारिणी । २०

वैष्णवी दशदिग् देवी, रक्षा पूर्वादि में करू ।
दशो दिशा में चामुण्डा, रक्ष हे शववाहना ॥ २१

जया रक्षा करू आगां-पाछां मे विजया करू ।
अजिता वाम में रक्षा, दहिना अपराजिता ॥ २२

उद्योतिनी शिखा रक्षा, शिर रक्षा उमा करू ।
मालाधारी ललाटक, भ्रूक रक्षा यशस्विनी ॥ २३

त्रिनेत्रा यम घण्टाजी-भ्रू मध्यतक के करू ।
शंखिनी नेत्र के रक्षा कान के द्वारवासिनी ॥ २४

कालिका गाल के रक्षा, शाँकरी कर्णमूल के ।
सुगन्धा नाक के रक्षा, चर्चिका उत्तरोष्ठके । २५

निचला ओष्ठ के रक्षा हे अमृतकला करू ।
जिह्वा पर बैसि देवी, रहू अहां सरस्वती ॥ २६

दांत के रक्षिका देवी, कौमारी रहु सर्वदा ।
कंठ रक्षा करू अहाँ चण्डिका सर्वकाल में ॥ २७

चित्रघण्टा घण्टिका के करू रक्षा सदा अहां ।
महामाया अहाँ दूनू तालुके रक्षिका बनू ॥ २८

कामाक्षीजी करू रक्षा, सदा चिबुक अंग के ।
वाणी के रक्षिका देवी, बनू हे सर्वमङ्गला ॥ २९

ग्रीवा के रक्षिका देवी, भद्रकाली अहाँ बनू ।
धनुर्धरी अहाँ पृष्ठ वंश के रक्षिका बनू ॥ ३०

बाहरी कंठ के रक्षा, नीलग्रीवा अहाँ करू
सुरक्षा कण्ठनाली के, करू हे नल कूबरी ॥ ३१

खड्गनी स्कन्ध के रक्षा, बाहु के बज्रधारिणी ।
दण्डिनी हाथ दूनू के, रक्ष आङ्गुर अम्बिका ॥ ३२
शूलेश्वरी नौह रक्षा, कुक्षि रक्षा नखेश्वरी ।
स्तन रक्षा महादेवी, मनःशोक विनाशिनी ॥ ३३

हृदै के ललिता देवी, पेट के शूल धारिणी।
नाभि रक्षा कामिनी जी गुह्य रक्षा गुहेश्वरी ॥ ३४

पूतना कामिका अहाँ मेढ्र के रक्षिका बनू।
गुद रक्षा करू अहाँ देवी महिषवाहिनी ॥ ३५

कटि रक्षा भगवती जानु के विन्ध्यवासिनी।
महाबला जाँघ रक्षा करू काम प्रदायिनी ॥ ३६

गुल्फ रक्षा नारसिंही पाद पृष्ठक तैजसी।
पादाङ्गुलीक रक्षा में रहू हे श्रीधरी सदा ॥ ३७

दाँत रक्षा करालीजी केश के ऊर्ध्वकेशिनी।
कौमारीजी रोम रक्षा, त्वक् रक्षा वागीश्वरी। ३८

रक्त मज्जा वसा मांस अस्थि मेदक पार्वती।
रक्षा करू अहाँ कालरात्री जी आँत के सदा ॥ ३९

रक्षा पित्तक हे देवी, करू श्री मुकुटेश्वरी।
पद्मावती पद्मकोश रक्षा करू सदा अहाँ ॥४०

हे चूड़ामणि देवीजी, कफ रक्षा अहाँ करू।
ज्वालामुखी नखज्वाला के रक्षा करू सर्वदा ॥ ४१

सर्वसन्धिक रक्षा में, हे अभेद्या अहाँ रहू।
ब्रह्माणी शुक्र रक्षा में, छाया क्षत्रेश्वरी रहू। ४२

अहंकार मनोबुद्धि के राखू धर्मधारिणी ।
प्राणापान उदानादि पाँचो वायुक रक्षिणी ॥ ४३

अहाँ रहू बज्रहस्ता, देवीजी सर्वकाल में ।
प्राण रक्षा करू देवी, सदा कल्याणदायिनी ॥ ४४

रस रूप गन्ध स्पर्श, शब्द में योगिनी रहू ।
सत्त्व रज तमो रक्षा करू नारायणी सदा ॥ ४५

वाराही आयु रक्षा में वैष्णबी धर्म रक्षिका ।
यश कीर्ति लक्ष्मी विद्या, रक्षा में चक्रिणी रहू । ४६

इन्द्राणी गोत्र के रक्षा, पशु के करू चण्डिका ।
पुत्र रक्षा महालक्ष्मी, भार्या के भैरवी करू ॥ ४७

क्षेमकरी मार्ग रक्षा, सुपथा पान्थ के करू ।
महालक्ष्मी राजद्वार, सर्वत्र विजया करू ॥ ४८

सर्वांग रक्षिका दुर्गा बनू दुर्गापहारिणी ।
रक्षासँ हीन जे स्थान कवचादिक में न हो ॥ ४९

जयन्ती ताहिठाँ रक्षा, करू पापविनाशिनी ।
बिना कवच कत्तौ नजाइ एको पद अहाँ ॥ ५०

कवचावृत भैअेक, जाथि जे जहाँ तहाँ ।
लाभ हो अर्थ के तैठाँ, विजयादिक सिद्ध हो । ५१

जे-जे इच्छा करी से-से प्राप्त हो निश्चिते बुझू ।
परमैश्वर्य के प्राप्ति, हो कवच के पाठसँ । ५२

हो निर्भय संग्राम आदि में बिजयी सदा ।
पूज्य हो जग में मानू, कवचावृत अंग जे ॥ ५३

देवी कवच ई सर्व देवो के दुर्लभे बुझू ।
पढ़ि क' सुनि क' जे केओ रण में जाय से सदा ॥ ५४

त्रैलोक्य विजय भैक आवे ओ घरमे सुखी ।
भक्ति श्रद्धा विनय सँ, जे पढ़े तीन कालमे ॥ ५५

त्रैलोक्यविजयी सेहो देवीजी के कृपा बले ।
एक सौ वर्ष जीवे से अपमृत्यु न ओकरा ॥ ५६

व्याधिके नाश हो लूता-विस्फोटकादि दूर हो ।
कोनो तरहके घाती विष के न प्रभाव हो । ५७

अभिचार मन्त्र- यन्त्र भूचरादिक वस्तु जे ।
सर्वोपद्रव के शान्ति कवची के रहे सदा ॥ ५९

सहजा कुलजा माला, डाकिनी शाकिनीक भै ।
अन्तरिक्षक भै पूरा, कवची के न हो कतौ ॥ ६०

ग्रहभूत पिशाचादि, यक्ष राक्षस केर भय ।
ब्रह्म राक्षस बेताल-कुष्माण्डा भैरवादि भय । ६१

सबटा दूर हो शीघ्रे, जे कवच धारण करे ।
मान उन्नति राजा सँ-तेज वृद्धि सदा रहे ॥ ६२

कवची के यशोवृद्धि, कीर्ति हो जगमे सदा ।
जे कवच पुर्व सप्तशती पाठ करैत हो ॥ ६३

तकरा विघ्न ने कोनो, सिद्धि हो सर्व कार्यमे ।
सशैलवन पृथ्वी ई, यावत हो संसार मे ॥

सन्तती पुत्र पौत्रादि, सहिते से सदा रहे ।
मोक्ष देहान्तमे पावे, जे सुरो के न प्राप्त हो ॥

महामाया प्रभावे सँ, सर्वदा से सुखी रहे ।
सकवच सप्तशती, पाठ सँ उत्तम गती ॥
प्राप्ति कैं शम्भु के संग रहि क' मोदित रहे ॥

इति श्री देवी कवचं सम्पूर्णम्

अथ शापोद्धार:

ओं श्री दुर्गादेव्यै नमः !! चण्डीशाप विमोचन मन्त्रस्य बशिष्ठ नारद सामवेदाधिपति ब्रह्माण ऋषय: सर्वैश्वर्यकारिणी श्री दुर्गादिवता अनुष्टुपछन्दश्चरितत्रयं वीजं ह्रीं शक्तिरूपिणी चण्डीशाप-विमोचने विनियोग:

ओं रीरँत: स्वरूपायै मधुकैटभमर्दिन्यै ब्रह्मशापविमुक्ता भव ।
ओं श्रीँ बुद्धिरूपिण्यै महिषासुर-सैन्य नाशिन्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओँ रँ रक्तरूपिण्यै महिषासुरमर्दिन्यै ब्रह्म्शाप विमुक्ता भव ।
ओँ क्षुँक्षुधारूपिण्यै देववन्दिन्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओँ छाँ छायारूपिण्यै दूतसंवादिन्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओँ श्रीं शक्तिरूपिण्यै धूम्रलोचनघातिन्यै ब्रह्म्रशाप विमुक्ता भव ।
ओँ तृँ तृष्णारूपिण्यै चण्डमुण्डवध कारिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओँ क्षाँ क्षान्तिरूपिण्यै रक्तबीज वधकारिण्यै ब्रह्मशाप बिमुक्ता भव ।
ओँ जाँ जातिरूपिण्यै निशुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओँ लँ लज्जारूपिण्यै शुम्भवधकारिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओँ शाँ शान्तिरूपिण्यै देवस्तुत्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव
ओँ श्रँ श्रद्धारूपिण्यै फलदात्र्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओं काँ कान्तिरूपिण्यै राजवरदात्र्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।

ओँ माँ मातृरूपिण्यै अर्गलसहितायै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओँ ह्रीं श्रीं हूँ दुर्गायै सर्वैश्वर्यकारिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओँ क्लीं ह्रीं ओं नमः शिवायै अभेदकवचरूपिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।
ओँ काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेदरूपिण्यै ब्रह्मशाप विमुक्ता भव ।

इत्येवं हि महामन्त्रान् पठित्वा परमेश्वरि ।
चण्डीपाठं दिवारात्रौ कुर्यादेव न संशय : ॥
एवं मन्त्रं न जानाति चण्डीपाठं करोति यः ।
आत्मनश्चैव दातृणां क्षयं कुर्यान्न संशय : ॥

इति रुद्रयामले चण्डीशाप विमोचनस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

अथ काम्य प्रयोग विधि

प्रतिश्लोकमाद्यन्तयोः प्रणवं (ओम्) जपेन्मन्त्रसिद्धि : । १ (श्लोक-पदं मन्त्रोपलक्षणम्) सप्रणव-मनुलोम-व्याहृतित्रयमादौ अन्ते तु विलोमं तदित्येवं प्रतिश्लोकं कृत्वाशतावृत्तिपाठेऽतिशीघ्रं सिद्धिः ॥ २ प्रतिश्लो{कमादौ जातवेदस इत्यृचं पठेत् सर्वकामसिद्धिः ॥ ३ । अपमृत्युवारणाय त्रयम्बकमन्त्रं पठेत् । आदावन्ते च शतमित्यर्थः । प्रतिश्लोकं तन्मन्त्रजप इत्यन्यत्र । । ४ प्रतिश्लोकं शूलेन पाहिनो देवीतिपाठादपमृत्युनाशः । अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य लक्षमयुतं सहस्रं शतं वाजपे अपमृत्युवारणम् ॥ ५॥ प्रतिश्लोकं शरणागतदीनार्तेति श्लोकं पठेत् सर्वकार्यसिद्धि : ॥६॥ प्रतिश्लोकं करोतु सान : शुभहेतुरिदं पठेत् सर्वसिद्धिः ॥७॥ स्वाभीष्टवरप्राप्तये एवं देव्या बरंलब्ध्वेति श्लोकं पठेत् ॥८ ॥ सर्वापत्ति-वारणाय प्रतिश्लोकं दुर्गे स्मृतेति पठेत् अस्य केवलस्यापि श्लोकस्य कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्रं शतं वा जपः कर्तव्य : ॥९॥ सर्ववाधेत्यस्यलक्षजपे प्रतिश्लोक पाठे वा श्लोकोक्तं फलम् ॥ १०॥ इत्थंयदा यदा वाधेति श्लोक जपे महारोग शान्ति : ॥११॥ ततोवव्रे नृपो राज्यमिति मन्त्रस्य जपे पुनः स्वराज्य प्राप्तिः ॥ १२॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि इत्थमेव सदीप बलिदाने घन्टाबन्धने च बालग्रह शान्ति : ॥१३॥ आद्यावृत्ति-मनुलोमेन। पठित्वा ततो विपरीत-क्रमेण द्वितीया मनुलोमेन पठित्वा तृतीया मित्येवमावृत्तित्रयेण शीघ्रं कार्यसिद्धिः ॥१४॥ सर्वापत्ति वारणाय दुर्गे स्मृतेत्यर्द्ध ततो यदन्ति यच्च दूरके इत्यृचं तदन्ते दारिद्र्य

दुःखेत्यर्द्धम् । एवं कार्यानुसारेण लक्षमयुतं सहस्त्रं शतं जपः ॥१५॥ कां सोस्मीत्यृचं प्रतिश्लोकं पठेल्लक्ष्मी प्राप्तिः ॥१६॥ प्रतिश्लोकम् अनृणा अस्मिन्नित्यृचं पठेदृण परिहारः ॥१७॥ मरणार्थम् एवंमुक्त्वा समुत्पत्येति श्लोकं प्रति श्लोकं पठेत् मरणोक्तावृत्तिभिः फलसिद्धिः : ॥ १८॥ ज्ञानिनामपि चेतांसि इति श्लोक जप मन्त्रेण सद्योमोहन मित्यनुभव सिद्धम् ॥ प्रतिश्लोकं तच्छ्लोक पाठेत्ववश्यम् ॥ १९ ॥ रोगानशेषानिति श्लोकस्य प्रतिश्लोकं पाठे सकल रोग नाशः । तन्मात्र जपेऽपि सः ॥ २० ॥ इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरेति श्लोकस्य प्रतिश्लोकं पाठे पृथग्जपे वा विद्याप्राप्ति र्वाग् वैकृति नाशश्च ॥ २१ ॥ भगवत्या कृतं सर्वमित्यादि द्वादशोत्तर शताक्षरोमन्त्रः सर्वकामदः सर्वापत्ति वारणश्च ॥ २२ ॥ देवि प्रपन्नार्तिहरे इति श्लोकस्य यथा कार्यं लक्षायुत सहस्रशतान्यन्यतम संख्यजपे प्रतिश्लोकं पाठे वा सर्वापन्निवृत्तिः सर्व कामनाऽवाप्तिश्च ॥ एषु प्रयोगेषु प्रतिश्लोकं दीपाग्रे केवलमेव वा नमस्कारकरणेऽति शीघ्रं सिद्धिः ॥ प्रति श्लोकं कामबीज सम्पुटितस्य एक चत्वारिशद्दिनं त्रिरावृत्तौ सर्वकामसिद्धिः ॥२३॥ एकविंशति दिन पर्यन्तमुक्तरीत्या प्रत्यहँद्वादशावृत्तौ वशीकरणम् ॥२४॥ माया बीज सम्पुटितस्यषट् पल्लव सहितस्य सप्तदिन पर्यन्तं त्रयोदशावृत्ता वुच्चाटन सिद्धि : ॥२५॥ तादृश्यामेव दिन चतुष्टय मेकादशावृत्तौ सर्वोपद्रवशान्ति : ॥ २६ ॥ एकोनपञ्चाशद्दिन प्रतिश्लोकं श्रीबीजेन सम्पुटितस्य पञ्चदशावृत्तौ लक्ष्मीप्राप्ति : ॥२७॥

॥ इति कात्यायनी तन्त्रोक्तः काम्यःप्रयोगविधिः ॥

अथ शतचण्डी विधि :

शङ्करस्य भवान्या वा प्रसाद निकटे शुभम् ।
मण्डपं द्वार वेदाढ्यां, कुर्यात् सध्वज तोरणम् ॥ १

तत्र कुण्डं प्रकुर्वीत प्रतीच्यां मध्यतोऽपि वा ।
स्नात्वा नित्यं क्रियां कृत्वा वृणुयाद्दश वाडवान् ॥ २

जितेन्द्रियान् सदाचारान् कुलीनान् सत्यवादिनः ।
॥ वाडवाः ब्राह्मणाः॥
व्युत्पन्नांश्चण्डिका पाठ रतान् लज्जादयावतः ॥ ३

मधुपर्क विधानेन स्वर्णवस्त्रादि दानतः ।
जपार्थ मासनं मालां दद्यात् तेभ्योऽपि भोजनम् ॥ ४

ते हविष्यान्नमश्नन्तो मन्त्रार्थगतमानसा : ।
भूमौ शयानाः प्रत्येकं जपेयुश्चण्डिकास्तवम् ॥ ५

मार्कण्डेय पुराणोक्तं दशकृत्वः सचेतस : ।
नवार्ण चण्डिका मन्त्रं जपेयुश्चायुतं पृथक् ॥ ६

पृथक् सम्पुटी करणादिति शेषः । प्रत्येकंब्राह्मणैरयुत जपः कार्यः अष्टमी नवमी चतुर्दशीषु यथा शतावृत्ति समाप्तिर्भवति तथाऽरम्भः कर्त्तव्य इति साम्प्रदायिका : यंजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभभ् । द्विवर्षाद्या दशाब्दा : कुमारीः परिपूजयेत् ॥

॥ इति शतचण्डी विधिः ॥

दुर्गाशतनाम स्तोत्रम्

हे पार्वतीजी एक सौ ई नाम दुर्गा के कही।
एहि नामक पाठ वा सुनला सँ सुन्दर फल सही ॥ १

दुर्गा भवानी देवेशी विश्वनाथ प्रिया शिवा।
घोरदंष्ट्रा करालाऽस्या, मुण्डमाला विभूषणा ॥ २

रुद्राणी तारिणी तारा, माहेशी भवबल्लभा।
नारायणी जगद्धात्री महादेवप्रिया जया ॥ ३

विजया च जयाऽराध्या, शर्वाणी हरबल्लभा।
असिता अणिमा देवी, लधिमा गरिमा तथा ॥ ४

महेशशक्तिर्विश्वेशी, गौरी पर्वतनन्दिनी।
नित्या च निष्कलङ्का च निरीहा नित्य नूतना ॥ ५

रक्ता रक्तमुखी वाणी वसुयुक्ता वसुप्रिया।
रामप्रिया रामरता, रघुनाथ वरप्रदा ॥ ६

राज्येश्वरी राज्यरता कृष्णा कृष्ण वरप्रदा।
यशोदा राधिका चण्डी द्रौपदी रुक्मिणी तथा ॥ ७

गुहप्रिया गुहरता, गुहवंशविलासिनी।
गणेशजननी माता, विश्वरूपा च जाह्नवी ॥ ८

गङ्गा काली च काशी, च भैरवी भुवनेश्वरी ।
निर्मला च सुगन्धा च, देवकी देवपूजिता ॥ ९

दक्षजा दक्षिणा दक्षा दक्षयज्ञविनाशिनी ।
सुशीला सुन्दरी सौम्या मातङ्गी कमला कला । १०

निशुम्भनाशिनी शुम्भनाशिनी चण्डनाशिनी ।
धूम्रलोचनसंहर्त्री महिषासुरमर्दिद्नी ॥ ११

मधुकैटभसंहन्त्री, रक्तबीजहराऽमरा ।
जगदीशप्रिया जन्मनाशिनी भवनाशिनी ॥ १२

घोरवक्त्रा ललज्जिह्वा अट्टहासा दिगम्वरा ।
भारती स्वर्गदा रामा भोगमोक्षप्रदायिनी ॥ १३

उमा गौरी कराला च कामिनी विश्वमोहिनी ।
इत्येवं शत नामानि कथितानि वरानने ॥ १४

नाम स्मरण मात्रेण, जीवन्मुक्तो भवेन्नरः ॥
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, स्मृत्वा दुर्गा पदद्वयम् ॥ १५

मुच्यते जन्मबन्धेभ्यो, नात्र कार्या विचारणा ।
सन्ध्याकाले दिवाभागे, निशायां वा निशामुखे ॥ १६

पठित्वा शत नामानि, मन्त्र सिद्धिंलभेन्नर : ।
अज्ञात्वा स्तवराजञ्च दशविद्या भजेद्यदि : १७

तथापि नैव सिद्धि : स्यात् सत्यं सत्यं महेश्वरी ॥

इति मुण्डमाला तन्त्रे द्वितीय पटले
श्री दुर्गाशतनाम स्तोत्रं सम्पूर्णम्

दुर्गा शतनाम पढ़िक रुद्राक्ष माला पर १०८ बेर नवार्ण मन्त्र जपक चाही ॥ तदुत्तर ध्यान और दुर्गा पाठ करी ॥

॥ ओ३म् ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥ इति नर्वाण मन्त्रम् ॥

दुर्गाध्यानम्

श्री दुर्गाध्यानम्

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणाम्
कन्याभिः करवाल खेट विलसद्धस्ताभि रासेविताम् ।
हस्तैश्चक्र गदालिखेट विशिखाँश्चापँ गुणं तर्जनीं
विभ्राणाममलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥ १

श्री महाकालीध्यानम्

खङ्गञ्चक्रगदेषु चाप परिघाञ्छूलम्भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत् स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुम्मधुङ्कैटभम् ॥ २

श्री महालक्ष्मीध्यानम्

अक्षस्रक् परशुङ्गदेषु कुलिशम्पद्मन्धनुः कुण्डिकाम्
दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्मजलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलम्पाश सुदर्शनेच । दधतीं हस्तै प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ ३

श्री महासरस्वतीध्यानम्

घण्टा शूलहलानि शङ्खमुसले चक्रंधनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं धनान्ध विलसच्छीतांशु तुल्य प्रमाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिनयना माधारभूतां महा
पूर्वामंत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्दिनीम् ॥ ४

॥ इति पठित्वाऽष्टोत्तरशतसंख्या मन्त्रराजं जपेत् ॥

श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती तथा श्री दुर्गाक ध्यान

जे देवी करमे गदा भुशुण्डि शर ओ चक्रादि धैने थिकी,
अङ्गे अङ्ग सुभूषणावृत सदा जे तीन नेत्रावती ।
श्री ब्रह्मा स्तुति कै प्रणाम जिनका क' क' सुखी सर्वदा,
से देवी वरदा प्रणामकयने हेती महाकालिका ॥ १

माला रुद्राक्ष नेने कुलिश शर गदा पद्म ओ खड्ग नेने,
घण्टा भाला सुराके बरतन, जल जो हाथमे पाश शक्ती ।
दण्डा नेने प्रसन्ना रहथि हँसमुखी, चक्र लेने महाश्री,
लक्ष्मीजी के प्रणामाञ्जलि शत महिषामर्दिनी के करैछी ॥ २

घण्टा शूल हलादि शङ्ख मुसला, चक्रो धनुः सायको,
नेने पद्म सुशोभिता शशिमुखी शुम्भादि संमर्दिनी ।
गौरी देह समुद्भवा त्रिजगती के धारणी श्रीमहा-
पूर्वा सौम्य सरस्वतीक पदमें नित्यं प्रणामाञ्जली ॥ ३

जे देवी विजुली जकाँ चमकिते, सिंहस्थिता भीषणा,
भारी खड्गक साथ खेट धयने, कन्या सँ संसेविता ।
चक्रादि अतिखेट सुन्दर धनुर्वाणादि सँ शोभिता,
सौम्या निर्मलचन्द्र मस्तकधरा, दुर्गा त्रिनेत्रा भजी ॥ ४

अथ पं. श्री सुरेश झा कृत मैथिली दुर्गा सप्तशती ॥
प्रथम अध्याय

दोहा

श्री दुर्गा जे चण्डिका हुनका करी प्रणाम ।
मिथिला दुर्गा चरित ई पसरो गामे गाम ॥

ऊँ नमः श्री चण्डिकायैं ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥ १

गीतिका

सूर्य के पत्नी सवर्णा, हुनक सुत सावर्णि मनु ।
तिनक जन्मादिक कथाके हम कहैछी से सुनू ॥ २

श्री महामाया कृपासँ होइत अछि मन्वन्तर यथा ।
सावर्णि अष्टम मनु जगत्मे, सूर्य सुत हैता तथा ॥ ३

श्री स्वरोची मनुक अन्तर, चैत्र वंशी भूप में ।
सुरथ राजा जन्म नेने, रहथि कुल अनुरूप में ॥ ४

सम्पूर्ण पृथिवी केर पालन, अपन सुत सदृशे करथि ।
कोलनाशी यवन राजा, शत्रु सँ डरिते रहथि ॥ ५

कोलनाशी म्लेच्छगण सँ, सुरथ के जूझय पड़ल ।
रहनि कम्मे शत्रु तैओ, सुरथ के हारय पड़ल ॥ ६

युद्ध सँ ओ भागि अपना नगर मात्रक नृपति भअ ।
रहय लगला ताहि ठामो में उपद्रव विपति भय ॥ ७

आबि गेलनि शत्रुगण सँ, सव तरह आक्रान्त भै ।
अपन मंत्री मित्र सेहो, कियोने रहलनि शान्त भै ॥
मन्त्रिगण ओ शत्रुगण सँ कोश वल धन शासनो ।
छिनल गेलनि चुप्प रहला, गेल निज सिंहासनो ॥ ८

तखन मृगया व्याज सँ ओ, सुरथ राजा वनक दिश ।
भागि गेला अश्व पर चढ़ि, कियोने रहलनि नृपक दिश
गहन वन मे एसगरे औ, पहुँचि कोनो तरह सँ ।
शान्ति सुख बिनु दुखित भैक, घुमथि वन सब तरह सँ ॥ ९

देखि कोनो ठाम मेधा, मुनिक आश्रम शान्त सन ।
शिष्यगण सँ अति सुशोभित, क्योने छल उद्भ्रान्त सन ॥
जंगलक सभ जीव सेहो, बाघ सिंहादिक रहे ।
क्यो न ककरो शत्रु बूझल, जाय सब हर्षित रहे ॥ १०

किछु समय ओ आश्रमक बिच, ठाढ़ भेला मुनिक लग ।
मुनि सँ सत्कृत भैक राजा घुमथि आश्रम मे सुभग ॥ ११

सुरथ सोचय लागि गेला, प्रवल ममता मोह में ।
अपन पूर्वज सँ सुरक्षित, नगर राज्यक छोह में ॥
राजधानी हमर कोला, शत्रुकेर अधीन अछि ।
भागि ऐलहुँ डरसँ हमहूँ, सब तरह मन खीन अछि ॥ १२

हमर सवटा भृत्य मन्त्री, अति दुराचारी बनल ।
अछि कोना के ककर पालन, हैत करइत नहि बुझल ॥
जाइ अछि ने कोन तरहे, हमर हाथी शूर वर ।
मदक झरना सँ सुशोभित, हैत वा ओ क्षीणतर । १३

हमर शत्रुक वश में पड़ि क' इष्ट मित्र कुटुम्बजन ।
कोन भोग भोगैत हैता, से न बूझी एहिं खन ॥ १४

विसरि सभ क्यो आइ हमरा, करथि शत्रुक अनुगमन ।
दुष्टजन बनि गेल सम्प्रति, खर्च करइत हैत धन ॥ १५

कष्ट सँ अर्जित खजाना नाश सब हैबे करत ।
एहि तरहे बहुत चिन्ता, सुरथ के छल अनवरत । १६

मुनि सुमेधा केर आश्रम, पास मे कियो वैश्यजन ।
घुमथि हुनका देखि राजा, पूछि देलनि तों एखन ॥
घुमइ छ की नाम तोहर, कोन काजे आगमन ॥ १७

शोक सँ सन्तप्त तुल्ये मन खसल छौ कह किअ ।
नृपति पुछलनि वैश्यजन सँ, अपन परिचय कहि दिअ ॥ १८

सुरथ के सुनि प्रश्न एहन, ओ वणिक्जन विनय सँ ।
तुरत उत्तर देब लगला, वैश्यजी अति विनय सँ ॥ १९

वैश्य उवाच ॥ २०॥

हमर नाम समाधि अछि सुनु, धनिक वैश्यक वंश मे।
जन्म लैओक दुखित बनि, गेल छी सब अंश में। २१

धनक लोभी पुत्रदारा, सँ भगाओल गेल छी।
वित्त गेने चित्त फाटल, कर्मफुट्टू भेल छी॥ २२

अपन बान्धव बन्धु जन सँ, त्यक्त भ' आयल थिकौं।
वन में ऐलोपर हुनक विनु सतत चिन्तित हम थिकौं॥ २३

एहि बनमे रहि न किञ्चित् कुशल छेम बुझाइ अछि।
अपन भार्या-पुत्र-वित्तक विनु, न किच्छु सोहाइ अछि॥ २४

वनि सुमार्गी वा कुमार्गी, जीवनक पथ धरइ छथि।
हमर ओ परिवार के जन कोन तरहे रहइ छथि॥
से न जानल जाय हे नृप कहि न सकइत छी अधिक।
हम दुखी बनि बन घुमै छी, की कहू एहि सँ अधिक॥ २५

राजोवाच॥ २६॥

धनक लोभी पुत्र दारा स्वजन सँ परित्यक्त छी।
तैओ अहाँ अपन जन मे, कहु किए अनुरक्त छी। २७-२८

वैश्य उवाच॥ २९॥

हे नृपति आहाँ कहैछी सैम्ह बस्तुक स्थिति हमर।
तैओ शोकक वश पडल छी मन में होइत अछि कहर॥ ३०

की करू ई मन ने निष्ठुर होइत अछि परिवार पर।
पितृ भक्ति स्नेह तजि क' जे अधर्मी सुत हमर ॥ ३१

हे महिपति सुरथ राजन् जनइ छी सव बात के।
तैओं मन ने शान्त होइअछि छोड़ि बान्धव गात के ॥ ३२

निर्गुणो सुत बन्धु ऊपर प्रेम सँ मन अछि भरल।
बन्धुबान्धवक कुशल बिनु मन उदासी मे जरल ॥ ३३

श्वास ओ प्रश्वास बढ़लासँ शरीरो खसल अछि।
की करू ने स्वजन सँ मन, होय निष्ठुर फसल अछि ॥ ३४

मार्कण्डेय उवाच ॥ ३५

तखन ओ श्री सुरथ राजा वैश्य दूनू दुखित जन।
मुनि सुमेधा पास गेला, जे छला ज्ञानी सुमन ॥ ३६

श्री समाधी सुरथ दूनू पहुँचि मुनि के पास मे।
प्रणति साञ्जलि कें सुपूजित भैक वैसला आस में ॥ ३७

बैसि मेधा मुनिक लग मे ओ दूनु किछु क' कथा।
वैश्य ओ श्री सुरथ राजा कहय लगला निज व्यथा ॥ ३८

राजोवाच ॥ ३९॥

हे ऋषे भगवन् अहाँ सँ हम पुछैछी वस्तु किछु ।
तकर उत्तर कहु यथोचित, शान्ति जहि सँ होय किछु ॥ ४०

मन हमर ई दुखित चञ्चल स्थिर न कौखन होइत अछि ।
गेल राज्यक लेल ममता, मोह किए कहु होइत अछि ॥ ४१

हे मुने हम सब जनइ छी, तैओ मूर्खे सन करी ।
कोन तरहे हैत ममता, दूर जहि सँ हम तरी ॥

हमरे सन ई वैश्य सेहो, पुत्र दारा सँ त्यजल ।
मित्र संपत्ति सँ विवर्जित, सतत दुख मे छथि फसल ॥ ४२

स्वजन सँ परित्यक्त भेनौ स्वजन पर वड़ प्रेम छनि ।
एहि तरहे हम तथा ई, वैश्य दुखिया गेलहुँ बनि ॥ ४३

दोष देखल जाय सवठाँ विषय सांसारिक जते ।
तैओ ममता बश घुमै अछि, मन सदच्छन कहु कते ।
हे महामुनि भाग्यशाली ज्ञानिओ के मोह किए ।
होइत अछि संसार विषयक, से बुझाक कहि दिअ ॥ ४४

हम विवेकी थिकहुं आन्हर बनल ममता केर वश ।
हमरे सन ई वैश्य सेहो छथि दुखी ममताक वश । ४५

ऋषि उवाच ॥ ४६ ।

नीक वा अधलाह विषयक, ज्ञान सभके रहइ अछि ॥
तैओ जगतक लोक कोना, मोह में सभ फसइ अछि ॥ ४७

हे महाभागी सुरथजी, इन्द्रियक सभ ज्ञान ई ।
पृथक पृथके सन मनुष्यक, होइत अछि अनुमान ई ॥
दिनमे आन्हर केओ प्राणी, राति मे आन्हर कते ।
राति दिन दूनू मे आन्हर होइत अछि प्राणी कते ॥
मानवे हो ज्ञान वाला, से न निश्चित सन बुझू ।
आन जीवा जन्तु सेहो, होइत अछि ज्ञानी बुझू ॥ ४८-४९

पशु तथा पक्षी मृगादिक, जीव सभ सज्ञान हो ।
मनुष तुल्ये सकल प्राणी, जगत मे सज्ञान हो ॥ ५०

जे मनुष्यक देखि रहलौं, प्राण धारण के क्रिया ।
तादृशे पशु पक्षिओ के, जीवनक सवटा क्रिया ॥
पक्षिओ सज्ञान होइ अछि तैं त बच्चा चोच में ।
दैअ चारा आनि सवदिन रहि स्वयं दुख सोच मे ॥ ५१

प्रेम सँ वच्चा के पालय रहि, स्वयं भोजन विना ।
हे सुरथ सभ साभिलाषी हेतु निज आनक विना ॥ ५२

अपन प्रत्युपकार कारण, सुतक पालन सभ करे ।
से न आहाँ किए बुझै छी, लोक मोहक वश भरे ।
मोह खाधि मे सब गिराओल गेल छी ममताक वश ।
एहि ममता मोह पारक, हेतु हम सभ छी विवश ॥ ५३

श्री महामाया प्रभावे, सँ जगत के स्थिति गती ।
एहि मे संशय न कोनो, करू अहाँ एको रती ॥
योगनिद्रा जगतपति के खेल अछि प्राणीक प्रति ॥ ५४

ई महामाया हरिक छनि, एहि सँ मोहित मती ।
•ज्ञानियों के चित्त चञ्चल, करथि बश मे भगवती ॥ ५५

जे महामाया सभक मन, मोहखोह मे धरइ छथि ।
सैह रचना जगत के कय, चर अचर सँ भरइ छथि ॥ ५६

सैह देवी यदि प्रसन्ना होथि तँ वरदायिनी ।
वनिक विद्या बुद्धि दै छथि, मुक्तिदा ओ सनातनी ॥ ५७

जीवके बन्धन जगत में करथि ओ सर्वेश्वरी ॥ ५८

राजोवाच ॥ ५९ ॥

हे महामुनि श्री सुमेधा, के महामाया थिकी ।
हुनक परिचय दिअ कनेको, सर्वेश्वरी बनि जे थिकी ॥ ६०

जन्म लै छथि ओ कोनाक' कर्म हुनकर की एतै ।
जै प्रभावक जहि स्वरूपक, उत्पत्ति कारण छनि कतै ॥
सब सविस्तर सुनय चाही ब्रह्मवित् अपने थिकौं ।
श्री महामायाक परिचय, कहु किए झपने थिकौं ॥ ६१-६२ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ६३

ओ जगन्मूर्त्तिस्वरूपा, ओ सदा नित्या थिकी ।
एहि दृष्टि सँ सृष्टि देखी, सभक कर्त्री ओ थिकी । ६४

तैओ हुनकर जन्मकारण, बहुत तरहे सुनि लिअ ।
हम कही देवीक जन्मक, बात ई सभ सुनि लिअ ॥
देव लोकक कार्य करवा, लेल प्रकटित रूप मे ।
होथि तऽओ जन्म लेलनि, सभ कहे अनुरूप में ॥
भगवती नित्या कहाबथि, ओ न जन्मथि पेट सँ ॥
होथि आविर्भूत कौखन, कतहु कोनो छेट सँ ॥ ६५

योगनिद्रा के वशी भै विष्णु सूतथि प्रलय मे ।
शेष नागे हुनक शय्या, रूप हो ओहि समय में ॥ ६६

सुतल विष्णुक कान सँ दू, असुर घोर पराक्रमी ।
मधु तथा कैटभक जन्मो भेल दुष्टक संगमी ॥ ६७

विष्णु कानक गोजि सँ ओ, जनमि ब्रह्मा पर छुटल ।
विष्णु नाभीकमल उपर, रहथि ब्रह्मा बनि अटल ॥ ६८

देखि दूनू असुर के विधि, विष्णु सूतल छथि एखन ।
योग निद्रा भगवती के, स्तुति करै लगला तखन ॥ ६९

विष्णु जागथु करथु रक्षा, हमर ओ एहि दुष्ट सँ ।
एहि कारण सँ प्रजापति, स्तुति सुनौता पुष्ट सँ ॥ ७०

विष्णु के दुनु आँखि झपने, रहथि निद्रा भगवती ।
सैह देंवी विश्वकर्त्री, प्रलय पालन के स्थिती ॥
विष्णु तेज स्वरूप निद्रा, भगवती छथि सभक गति ॥ ७१

ब्रह्मोवाच ॥ ७२ ॥

यज्ञ में स्वाहा अहाँ छी, श्राद्ध में आहाँ स्वधा ।
वषट्कारक छी स्वरूपा, सकल स्वर मात्रात्मिका ॥ ७३

भुजङ्गप्रयातछन्द

सुधा छी अहाँ अक्षरा और नित्या
त्रिधा ह्स्व दीर्घादि मात्रा स्वरूपा ।
थिकौं ओं पदस्था अहाँ अर्द्धमात्रा
लिखावट प्रणालीक जे चन्द्रविन्दू ॥ ७४

अहीं ब्राह्मोणोके बनैछी त्रिसन्ध्या
थिकौं सर्व प्राणीक माता सावित्री ।
अहीं सँ जगत्सृष्टि कार्यो बनैए
अहाँ विश्व के धारणो से करै छी ॥ ७५

अहीं पालिका सृष्टि क'क' सदा छी,
अहीं सृष्टि के अन्त मे भक्षिका छी ।
विसृष्टीक सृष्टिस्वरूपा अहाँ छी,
स्थिती हो अहीं सँ जगत्पालनो हो ॥ ७६

थिकौं संहती रूपिणी अन्तकाले,
अहाँ छी जगद्रूपिणी मोहकर्त्री ।
महापूर्व विद्या महापूर्व माया ,
महापूर्व मेधा महासंस्मृती छी ॥ ७७

महापूर्व मोहा महापूर्व देवी,
सुरी छी महापूर्विका छी प्रकृत्या ।
अहीं सत्वरूपा रजोरूपिणी छी,
तमोरूपिणी तीनरूपा अहाँ छी ॥ ७८

अहीं कालरात्री महारात्रि रूपा,
महामोह रात्री अहीं दारूणा छी ।
अहीं श्री अहीं ईश्वरी ह्रीं स्वरूपा
अहीं बुद्धिबोध स्वरूपा सुरूपा ॥ ७९

अहीं आँखि दूनूक शोभा छी लज्जा,
अहीं पुष्टि देवी अहीं तुष्टि देवी ।
अहीं खड्गिनी शूलिनी और घोरा,
गदाधारिणी चक्रिणी देवि आहाँ ॥ ८०

अहीं खड्गिनी चापिनी वाणवाली,
अहीं छी भुशुण्डीवती पारिघाली ।
अहाँ सर्व सौम्यात्मिका सुन्दरी छी,
महासुन्दरी देवि दुर्गे अहीं छी ॥ ८१

गीति

पर अपर मे थिकहुँ परमा, छी अहीं परमेश्वरी।
जतय किञ्चित् बस्तु सदसत्, सब अहीं जगदीश्वरी।
सर्व वस्तुक शक्ति आहाँ थिकहुँ कोना स्तुति करू।
योगनिद्रे देवि दुर्गे, स्तुति हमर निज श्रुति धरू॥ ८३

जगत कर्ता जगत पालक, जगत के संहार कर।
विष्णु सेहो अहाँक वश में, भ'क' सूतथि शेषपर॥
के अहाँ के स्तुति कर' में सकत अपना बुद्धि पर॥ ८४

विष्णु शिव ब्रह्मा तिनू के देहधारी करइ छी।
जखन जेना होय इच्छा तखन तेना करइ छी॥
के एहन अछि शक्तिवाला जे अहाँके स्तुति करत।
दैत्य डर सँ थरथरायल भ'क' हम छी स्तवन पर॥ ८५

दैत्य मधु ओ कैटभक पुनि बुद्धिके झट मोहि दिअ'।
हमर रक्षा हेतु सूतल विष्णुजी कें जगा दिअ'। ८६

एहि दूनू असुर कें झट, जाहिं सँ मारथि हरी।
बोध एहन विष्णु कें करू हैव हम तैखन बरी॥ ८७

ऋषिरुवाच॥ ८८

ब्रह्माक स्तुतिक बादमे मार्कण्डेय ऋषि बजलाह।
ब्रह्माक स्तुति सुनि एहि तरहें, योग निद्रा भगवती।
तामसी देवी प्रसन्ना, हरि जगाओल जगवती॥ ८९

विष्णु जागथु एहि दूनू, दैत्य के झट मारि क' ।
करथु ब्रह्मके सुरक्षित, देथु संकट टारि क' ॥
आँखि मुंह युग नासिकाकर, हृदय हीलल सन वनल ।
छोड़ि देलनि निन्न हरिजी, जागृतावस्था बनल ॥ ९०

योगनिद्रा सँ तजल हरि, अव्यक्त ब्रह्मा सामने ।
ठाढ़ भेला श्री जनार्दन, आमने हरि सामने । ९१

उदधि में स्थित शेषशय्या, सँ उठल भगवान हरि ।
ऊठिते मधु कैटभ द्वय के उपर कैलनि नजरि ॥
अति दुरात्मा वीर्य विक्रमशालि मधुकैटभ रहे ।
श्री प्रजापति के हननला, ताकमे लागल रहे ॥ ९२

क्रोध सँ ओ तमतमायल, विधिके खैबा लेल छल ।
विष्णु के तैं ओहि दूनू, के देखावअ बल परल ॥
युद्ध ठनलनि विष्णु दूनू, दैत्य सँ ललकारि क' ।
चलय लागल युद्ध पेचापेचि, पूर्ण सम्हारिक ॥ ९३

वर्ष पाँच हजार धरि हरि, वाहुए वल सँ लड़ल ।
असुर सेहो बड़ बली छल, अपन बलबुत्ता चढ़ल ॥
अन्त मे ओ श्री महामाया सँ मोहित भ' फसल ॥९४

हारिक' केशव सँ बाजल, हम अहाँ के युद्ध सँ ।
छी प्रसन्न विमुक्त कै दिअ, माँगु वर मन शुद्ध सँ ॥ ९५

श्री भगवानुवाच ॥ ९६ ॥

हमर बाहुक बल सँ आहाँ, दैत्य दुनु यदि तुष्ट छी ।
त' हमर होउ वध्य आहाँ, दीअ बर यदि तुष्ट छी ॥ ९७

आन कोनो बर के देने, हैब ने खुश हम कही ।
हमरे हाथे हो अहाँ के मरण ई बर अछि सही ॥ ९८

ऋषिरुवाच ॥ ९९ ॥

एहि तरहे भेल वञ्चित, असुर दूनू भाई ओ ।
की करी से किंछु न सूझै, मनेमन घबराय ओ ॥ १००

देखि एकार्णवजगत के, विष्णु सँ बाजल दूनू ।
बड़ चलाकी कैल भगवन, बात हमरो किछु सुनू
जाहि ठाँ पृथिवीने डूबल, होय ताहि ठां ल' चलू ।
बध करू वा आन वर लि अ', करक हो से क' चलू ॥१०१

भगवानुवाच ॥ १०२॥

अस्तु अहूँ के शर्त मानल, भगवान विष्णु श्री हरि
शङ्ख चक्र गदाक धारी, शीघ्र कैलनि धरफरी ॥
लै सुदर्शन चक्र कर मे, जाँघ पर दूनूक शिर ।
राखि काटल दैत्य दूनू, के हनन सँ बेफिकिर ॥ १०३

एहि तरहें जन्म ल'क', पूजनीया भगवती ।
विष्णु ब्रह्मा शिव सुरादि सँ, पूजिता भेली सती ।
देवि दुर्गा के पराक्रम, सत्प्रभावो सुनि अहाँ ।
सुनअं, चाही यदि अधिकत' हम कहब सूनू अहाँ ॥
श्री सुरेश कवि कैल ई-दुर्गा चरित महान ।
पढ़ला सुनला सँ हटत छोह मोह अज्ञान ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये
मधुकैटभवध: ॥

॥ अथ द्वितीय अध्याय ॥

ऋषिरुवाच ॥ १

गीति छन्द

ई अछि चण्डिका दुर्गाचरित मे, अध्याय दोसर के कथा ।
मारकण्डे ऋषि सुनौलनि, सूनि से हरु मन व्यथा ।
पूर्व युग मे महिष राजा, असुरगण के छल महा ।
देवताधिप श्री पुरन्दर, रहथि आनन्दित महा ॥ १

देवगण के असुर के सँग, युद्ध कोनो बात पर ।
छिरल ओ सौवर्ष लरला एक दोसर घात पर ॥ २

अधिक बलशाली असुर सँ, देवगण हारल जख़न ।
देवता के जीति भेला, इन्द्र महिषासुर तखन ॥ ३

युद्ध में हारल सकल सुर, सहित ब्रह्मा आस में ।
पहुँचला श्री विष्णुशङ्कर, उभय रक्षक पास में ॥ ४

जाहि तरहे भेल सब किछु, महिष दानव के क्रिया ।
से सुनौलनि देवतागण, निज पराज़य प्रक्रिया ॥ ५

सूर्य के ओ इन्द्र वायुक अग्नि शशि यम बरुण के ।
सभक ओ अधिकार लेलक महिष नृप निष्करूण ओ ॥ ६

स्वर्ग सँ सब भ' वहिष्कृत, देवतागण हारि क'।
मनुष तुल्ये मर्त्यलोके मे घुमथि मन मारि क' ॥ ७

महिष दैत्यक सब कुचेष्टा कहि सुना शिव विष्णु के।
लग मे चुप भै ठाढ़ भेला, शरण मे शिव विष्णु के ॥८

सूनि सबटा देववाणी, कोप कैलनि शिव हरी॥
कुटिल भृकुटी भेल मुख पर, क्रोध के सङ्ग थरथरी ॥ ९

क्रोध सँ परिपूर्ण ब्रह्मा, विष्णु, शिव के वदन सँ।
तेज पुञ्जक भेल सर्जन, शिव हरि विधि कथन सँ ॥ १०

आन देवो इन्द्रआदिक देह सँ ओहि काल मे।
निकलि भारी तेज मीलल, काल रूप विशाल मे ॥ ११

अति विशाल ज्वलन्त पर्वत सन ओ तेजक पुञ्ज छल।
जकर ज्वाला पसरि फैलल, दग्ध करइत कुञ्ज छल ॥ १२

सर्वदेव शरीर के ओ, तेज राशी संगठित।
एक नारी रूप धैलक स्वाङ्ग शोभित संगठित। १३

ओहि नारी केर मुख छल, शम्भु तेजक रूप लै।
केश कारी यमक तेजे बाहु विष्णुक रूप लै ॥ १४

चन्द्र तेजक रूप स्तन युग इन्द्र सँ कटिउदर धरि।
जाँघ ऊरु युग वरुण तेजक नितम्ब भेलनि भू पसरि ॥ १५

तेज ब्रह्मक चरणयुग पादाङ्गुली सभ रवि बनल।
बसुक तेज सँ सब कराङ्गुलि नासिका धनपति बनल॥ १६

दाँत सुन्दर धवल चमचम श्री प्रजापति तेज सँ।
आँखि तीनू शिव समाने बनल पावक तेज सँ॥ १७

भ्रू युगल सन्ध्याक तेजे कान अनिलक तेज सँ।
श्री शिवा देवीक सर्जन सर्वदेवक तेज सँ॥१८

सर्व देवक तेज पुञ्जे सँ प्रकटि नव भगवती।
श्री शिवा के देखि देवो मे बढ़ल सुखरत रती॥
दुष्ट महिषासुर के पीड़ा दूर करती श्री शिवा।
तै सकल सुर शस्त्र देलनि आबि आगां ससरि वा॥ १९

विश्वकर्मा के बजा क' नव नवोत्तम शस्त्र कैं।
श्री शिवा कें क' सुसज्जित विविध भूषण बस्त्र दै॥
श्री पिनाकी शूल नूतन अपन शूल सन देलनि।
निज सुदर्शन चक्र सदृशे चक्र कृष्णोजी देलनि॥२०

विश्वकर्मा के प्रभावे सब नवीन छल बनल।
देल जाइछ श्री शिवा के शस्त्र वस्त्रादिक बनल।
शंख देलनि वरुणजी निज आनि शक्तिक दान कै।
धनुष बाणक संग तरकस वायु देलनि मान कै॥ २१

वज्र देलनि इन्द्र अति नव श्री शिवा के हाथ मे।
अपन ऐरावतक घण्टा बाघ सेहो साथ मे॥ २२

काल देलनि काल दण्डा, पाश देलनि अम्बुपति ।
श्री प्रजापति अक्षमाला विधि कमण्डलु कर्मपति ॥ २३

श्री दिवाकर रश्मि देलनि चमकि ऊठल रोम सब ॥ २४

खड्ग दैक ढाल देलनि काल देवो निज विभव ॥
अजर अम्बर सहित सुन्दर हार देलनि क्षीरनिधि ।
दिव्य चूड़ामणि ओ कुण्डल कटक देलनि नव सविधि ॥ २५

शिरक ऊपर अर्द्धचन्द्राकार मनटिक्का देलनि ।
बाहु मे केयूर देलनि पद मे नूपुर से देलनि
भेल ग्रीवा मे सुशोभित हार ग्रैवेयक मणी ॥ २६

सकल आङ्गुर मे सुसज्जित रत्न के औंठी देलनि ।
विश्वकर्मा नव नवोत्तम शस्त्र परशु से देलनि ॥ २७

विविध रङ्गक अस्त्र भारी कवच से सुन्दर देलनि ।
अम्लान पङ्कज के सुमाला शिरक ऊपर ध' देलनि ॥ २८

जलधि देलनि श्री शिवा के हाथ मे फुल्लित कमल ।
गिरि हिमालय सिंह वाहन देल रत्नो अति विमल ॥ २९

सत्सुरायुत पान पात्रो श्री धनाधिप द' देलनि ।
शेषनागाधिप अपन मणि श्री शिवा के द' देलनि ॥ ३०

सुमणिभूषित नागहारो श्री शिवा के भेटलनि।
अन्य देवो निज प्रियोत्तम शस्त्र भूषण द' देलनि॥ ३१

पावि सुर सम्मान भारी अट्टहासक संग मे।
घोर गर्जन कै शिवा ओ नभ भरल प्रत्यंग मे॥ ३२

श्री शिवा के नाद ध्वनि सँ, जगत ई थर्राइ छल।
उदधि कम्पित भ' क' उछलै, पानि पसरल जाइ छल॥ ३३

चलल वसुधा हिलल पर्वत, देवगण एकत्र भै।
सिहबाहिनि श्री शिवा के जय कहल एकत्र भै॥३४

भक्तिपूर्वक नम्रता सँ मुनिक मण्डल स्तुति करथि।
दैत्य सँ सन्त्राण पावक लेल शुभ आशा करथि॥
देखि तीनू लोक मे हरकम्प सबठाँ भेल अछि।
अपन आयुध हाथ मे ल' महिषगण डरि गेल अछि॥ ३५

तैयार सैनिकगण के क' क' अस्त्र - शस्त्रो साजिक।
ठाढ़ भेला असुर राजा, भेल की ई बाजि क'॥ ३६

सोर भारी जाहि दिश छल, ताहि दिश दौरल असुर।
देखलक देदीप्यमाना, देवि दुर्गा कें असुर। ३७

श्री शिवा के कान्ति सुन्दर सँ त्रिलोकी व्याप्त छल ।
झुकल पृथ्वी हुनक पादाक्रान्ति सँ अति व्याप्त छल ॥
निज मुकुट सँ गगन रेखा के विराजित ओ छली ।
कैने सब पाताल क्षोभित धनुष धैने ओ छली ॥ ३८

भुज सहस्र पसारि सब दिश, संस्थिता देवी रहथि ।
देखि अद्‌भुत रूप सुन्दर सब शिवा सेवी बनथि ॥
किन्तु महिषासुरक सेना, युद्ध देवी सँ करक ।
हेतु आगाँ बढ़िक दौरल कर्म फूटल छनि मरक ॥ ३९

अस्त्र-शस्त्र प्रयोग करइत दिग्, दिगन्त मे भरि रहल ।
असुर सेनापति क्यो चिक्षुर-युद्ध मे कैलनि पहल ॥ ४०

अपन चतुरंगीक संगे छौ अयुतरथ संगमे ।
कै उदग्रो नामबाला, डटल युद्ध प्रसंग मे ॥ ४१

अयुत सेना ल' हजारो रण मे पहुँचल महा हनू ।
लै पचास नियुत सेना बढ़ल असि लोमा दनू । ४२

छौ अयुत शत संग सेना, असुर वाष्कल के रहे ।
अश्व गज़ रथ केर संख्या अनगिनित क्यो से कहे ॥ ४३

विडाल नामक असुर सेनापति रहे ओहि युद्ध मे ।
कोटिओ रथ लै बढ़ल छल विकट रूपक युद्ध मे ॥ ४४

ताहि संयुग मे भरल छल अश्व गज रथ कोटिओ ।
अस्त्र-शस्त्रक नाम गिनती के करत बुध कोटिओ ॥ ४५

सब लड़य देवीक सँगे, मरल क्रमशः जाइ छल ।
सकल सेनापति असुर के युद्ध मे हहराइ छल ॥
अश्व रथ पर चढ़ि क महिषासुर स्वयं आगाँ रहे ।
शक्ति तोमर भिन्दिपालो मुसल लेने ओ रहे ॥
परशु पट्टिश खड्ग सब के हाथ मे चमकैत छल ।
सब के सब देवीक आगाँ, युद्ध मे धमकैत छल ॥ ४६

अस्त्र-शस्त्र प्रहार देवी, के ऊपर वर्षा जकाँ ॥
गनगनाइत शस्त्र नचइत रहय घर चर्खा जकाँ ॥
असुर शस्त्र प्रहार के ओ चण्डिका करइत छली ॥
काटि अरि शिर माटिये मे असुर के पटइत छली ॥ ४७

एहि तरहे कौतुके सँ, असुर शर के काटि क' ।
चण्डिका देवी बढ़ल सन, जाथि अरिगण छांटि कऽ॥ ४८

अस्त्र-शस्त्रक वर्षिणी ओ, चण्डिका अति हर्षिणी ।
ऋषि मुनी सँ पूज्य मान्या रहथि अति आकर्षिणी ॥ ४९

असुर के संहार मे ओ लागि गेली ईश्वरी ।
फट फटर व धुत सटा के, बढ़ल वाहन केशरी ॥ ५०

वन मे लागल आगि के सन, सिंह संयुग मे घुमै।
देखि असुरक गण हताशे युद्ध सँ भागल घुमै॥
युद्ध मे श्री चण्डिके नि:श्वास भारी जे छुटल।
सैह शीघ्रे वीरगण बनि शत सहस्त्रो मे जुटल॥
सेहो सब लै हाथ मे शर परशु असि शूलादि के।
असुरगण सँ लरय लागल फेकि शर शूलादि के॥ ५१-५२

नाश करइत असुरगण के श्री शिवा देवीक गण।
बढ़ि रहल छल बाढ़ि सदृशे, लै लराइक उपकरण॥ ५३

शंख के धुधुआ रहल छल ढोल पटहा क्यो पिटे।
कियो उमंग मे ल' मृदङ्गो, गरगरा ताली पिटे॥
युद्ध भारी कै महोत्सव, वरहसिंहा बजा बजा।
चण्डिका के गण मनौने, बढ़य आगाँ लै ध्वजा॥ ५४

तखन देवी बढ़ि समर मे विविध शस्त्रक मारि कै।
सैकरो संख्यक महासुरके खसौलनि फाड़ि कै। ५५

किछु के घंटास्वन विमोहित किछु के पाश मे बान्हि क'।
ककरो शिर दू टूक कैलनि.ककरो रखलनि छानि क' ।५६

कियो घसीटल जाय कतहु कतहु पीटल जाय कियो।
क्यो गदा सँ चूर्णं भेला मरल केयो कहराय कियो॥ ५७

रणक प्राङ्गण मे कतेको शूल घोंपल परल छल ।
वाण के वर्षा निरन्तर डर सँ सब धरफर रहल ॥ ५८

बाज सन झपटाह राक्षस से कते मरि गेल छल ।
बहुत के कर शिर कटल ओ गरदनों कटि परल छल ॥ ५९

ककरो मस्तक कटल कत के पेट फाड़ल गेल छल ।
छिन्न जंघा कै कतेको के कहर मचि गेल छल ॥ ६०

ककरो एके वाहु कटलनि ककरो एके चरण के ।
ककरो एके आँखि फोड़ल गेल पौलनि मरण के ॥
क्यो मरल दू टूक भ'क' कटल शिर क्यो ठाढ़ भै ।
लड़ि रहल छल कत कबन्धे शस्त्र ल'क' चाँढ़ भै ॥ ६१

कटल शिर धड़मात्र बहुतो युद्ध मे नचइत रहे ।
गान कोनो कै रहल छल वीभत्स रस बढ़इत रहे ॥ ६२

कटल शिर बहुतो महासुर हाथ से असि शूल धै ।
ठहर-ठहर कहैत दौरे चण्डिका प्रतिकूल भै । ६३

युद्ध मे मारल असुर ओ अश्व गज रथ ढ़ेरसँ ।
ओ अगम्या भेल रण के भूमि मुर्दा ढ़ेर सँ ॥ ६४

शोणितक भारी नदी बहि गेल चारू दिश कते ।
असुर सेना केर हाथी अश्व मारल छल कते ॥ ६५

असुर सेना के क्षणे मे नाश देवी क' देलनि ।
आगि सूखल तृणक जंगल जारि दे तेना भेलनि ॥ ६६

अन्तमे देवीक सिंहो गरजि घुर मैदान मे
के कोना अछि मरल बाँचल से देखथि वड़ शान मे ॥ ६७

चण्डिका के गण लड़ल छल असुर सँ जहि रूप मे ।
तादृशे सुर पुष्पवर्षा क' देलनि अनुरूप मे ॥ ६८

इतिश्री पण्डित सुरेश झा विरचित मैथिली दुर्गा सप्तशती
मे असुर सेना बध :।

अथ तृतीयो अध्याय :

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

देखि मरइत असुर सेना, के महाक्षति भै कोपमे ।
चलल चिक्षुर लड़य देवी, सँ महा आटोप मे ॥ २

बाणवर्षा करय लागल, अम्बिका पर जोरसँ ।
मेरु गिरि के शिखर पर जनु, मेघ बरिसय जोर सँ ॥ ३

चिक्षुरक शर मण्डलीके, काटिक' देवी बढ़ल ।
रथक घोडा सारथी के, मारिक' रणमे चढ़ल । ४

ध्वज पताका रथक कटलनि, धनुष कटलनि चण्डिका ।
चिक्षुरक देहोके बिंधलक, शर असुरजन खण्डिका । ५

छिन्नधन्वाविरथचिक्षुर, खड्ग लेलक ढाल ओ ।
आक्रमण देवीक ऊपर कै देलक उत्फाल ओ ॥ ६

सिंहके शिरपर प्रथम ओ, तेज खड्ग प्रहार कै ।
देविओ के वामभुज पर, असि चलौलक मार कै ॥ ७

खड्ग ओ देवी भुजापर टूटि खसि नीचा पड़ल ।
तखन चिक्षुरके त्रिशूले, हाथ मे लेबै पड़ल ॥ ८

भद्रकाली पर महासुर, फेकलक शूले जखन ।
सूर्य विम्बक सन प्रखर ओहि, शूल सँ चमकल गगन ॥९

देखि-देवी अरिक शूल, अपन शूल चला देलनि ।
ताहि देवी शूल सँ अरि चिक्षुरक वध भ' गेलनि ॥१०

महिष सेनापति बली ओ मृत जखन चिक्षुर बनल ।
तखन चामर दैत्य गजपर आबि समुपस्थित डटल ॥ ११

ओ चलौलक चण्डिका पर शक्ति भारी सुप्रभा ।
ताहिके हुंकार क'क' देवि कैलनि निष्प्रभा ॥ १२

गिरल टूटल शक्ति देखिते दोसरो देलक चला ।
तकरो देवी कय विखण्डित शोभिता अति जज्वला ॥ १३

तखन देवीजीक सिंहो कूदि हाथी पर चढ़ल ।
ओहि चामर दैत्यके सँग बाहु युद्धो मे बढ़ल ॥ १४

युद्ध करइत गज सँ उतरल भूमि पर लड़िते रहल ।
एक दोसर पर झपट्टा मारि रण करिते रहल । १५

सिंह कूदल फानि झट ओ चामरक शिर तोरिक' ।
पृथक कैलक धरसँ दूरे राखि देलक छोड़िक' ॥ १६

एहि बीचमे उदग्रो, चण्डिका सँ हत भेला ।
कर चमेटा मुष्टिका सँ कराल मारल से गेला ।१७

कुपित देवी के गदा सँ भिन्दिपाल ओ वाण सँ ।
हाथ ध्वैलनि बाष्कलक सङ ताम्र अन्धक प्राण सँ । १८

श्री त्रिनेत्रा भगवती निज त्रिशूलक मारिक' ।
उग्रास्य के बध कय महाहनु धनु के देलनि फारि क' ॥
उग्रवीर्यक वध दुनू सँग भेल शूलक मारि सँ १९

शिर विडालक काटि फेकलनि गेल दुर्धर यमक घर ।
दुर्मुखो मरि गेल देवी वाण वीधल क' कहर ॥ २०

एहि तरहे सैन्य दुर्बल, भेलमहिषासुर जखन ।
रूप भैंसाके बनाक' शत्रु के मारय तखन ॥ २१

ककरो पर थूथुन चलाबै, ककरो खुरसँ पीचि क' ।
ककरो नाङरि मारि मारै, ककरो सिंघसँ खीचि क' ॥२२

वेगसँ निज नाद सँ पुनि, भ्रमण सँ निःश्वास सँ ।
भगवती गणके खसावे, बहि पवन उन्चास सन ॥ २३

प्रथम सेना के खसा क'सिंह दिश दौरल जखन ।
देखि कुपिताकृति बनौलनि, श्री महादेवी तखन । २४

ओहो महिषासुर महाबल-कुपित भयक खूर सँ ।
खोदि पृथ्वी सिंघ सँ ओ, गिरि उठा फेकय दूर सँ ॥ २५

महिष शिरसँ भ्रमित पर्वत, चूर्ण बहुतो होइत छल ।
लाङ्गुलक हत उदधिप्लावित, चारु दिशमे बहैत छल ॥ २६

अपन सिंघ बढ़ाय नभमे, मेघके खण्डित करे ।
निःश्वास वायुक जोरसँ गिरि, उरि गगनसँ गिरिचरे ॥ २७

देखि क्रोधातुर महासुर, महिषके बध लेल ओ ।
देल यम सँ पाश फेकलनि, चण्डिका कय खेल ओ ॥ २८

पाश मे बन्धि गेल भैंसासुर तखन निजरूप तजि ।
सिंहरूप समान भय गेल, सेहो बान्हल गेल गजि ॥ २९

सिंह के शिर काटि देवक लेल देवी तत्परा ।
जखन भेली त तुरत ओ खड्गधारी चेहरा ॥
पुरुष सन ओ महिष बदलल, कय नबीने चेहरा ॥ ३०

खड्गधारी पुरूषके जँ बाणसँ कटइत रहथि
ताहि समयो मे महागज, रूप ध' गर्जति रहथि ॥ ३१

भ'क' भैंसासुर महागज, सिंहके धय सूँढ़ सँ ।
पकरि खीचय गरजि चिघरै समरमे रहि मूड सँ ॥ ३२

सूँढ़ हाथिक काटि देलनि, खड्ग सँ देवी जखन ।
तुरते अपन रूप पहिला, ध' लेलक महिषा तखन ॥ ३३

ओ महासुर विदित महिषासुर पुन: त्रैलोक्य मे ।
क' उपद्रव क्षुभित कैलक, चर अचर सब शोक मे ॥ ३४

देखि महिषासुरक खेला, चण्डिका अति कोपना ।
मद्य प्याला लै गटागट पिबथि अरुणालोचना ॥ ३५

पिबथि देवी मधु जखन ओ, ताहि खन ओ तड़तड़ा ।
आबि पहुँचल सिंघ दूनू, सँ उठा पर्वत बरा ॥
फेकलक देवीक ऊपर ओ महासुर जोर सँ ।
खलबली मचि गेल चहु दिश, गिरि प्रहारक सोर सँ ॥ ३६

ओहि पर्वतके तुरन्ते, चूर्ण कै निज वाण सँ ।
ओहि महिषासुरके कहलनि, बनि अरुणमुख चाँन सँ । ३७

देव्युवाच ॥ ३८ ॥

रे मूर्ख मिनटे भरि गरजि ले, मधु पिबै छी याबत धरि ।
खेल किछु तों रे मदारी, तुरत मरबे तों कुहरि ॥ ३९

हम अमृत मधु पीबि शीघ्रे, वध करब तोहर सुनह ।
देवता हैता प्रमोदित, सत्यवाणी ई सुनह । ४०

ऋषिरुवाच ॥ ४१ ॥

एहि तरहे कहि तुरन्ते, छरपि महिषासुर उपर ।
पैर सँ आक्रान्त क'क'-कण्ठ कैलनि शूलतर । ४२

पैर सँ आक्रान्त भेनहु, सशिर धर बाहर कने ।
तैओ लरिते छल महासुर, बल न ओकर कहि बने ॥ ४३

किन्तु दबने रहथि दुर्गा, खड्ग लेलनि हाथ मे ।
काटि देलनि शिर महिष के, क्योने रहलनि साथ मे ॥ ४४

तखन हाहाकार करइत, सैन्य भागल सटपटा ।
हर्ष पौलनि देवतागण, गेल दुख दर्दक घटा ॥ ४५

देवता सभ कहथि जै जै, पुष्पके वर्षा करथि ।
ऋषि महर्षि चण्डिका के, स्तुति सुना मनके भरथि ॥ ४६

दोहा

महिषासुर ओ मरल त' मुदित भेल संसार ॥
सभ सुर सङ्ग "सुरेश" के, सङ्कट हटल अपार ॥

इति मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत सावर्णिक मन्वन्तरमे,
देवी चरित मैथिली दुर्गासप्तशतीमे महिषासुर वध ।

अथ चतुर्थोऽध्यायः

महिष दानव राजक मृत्यु सँ
मुदित देवक संघ एकत्र भ' ।
स्तुति करै लगला गुण गावि क'
जगत के जननी पदमे नमः ॥ द्रु.वि

ऋषिरुवाच ॥ १॥

वसन्त तिलका

त्रैलोक्य लोक दुख कारक दानवेन्द्र
भैसा सुरादिक विनाशक वाद शीघ्रे ।
इन्द्रादि देव नत मस्तक साञ्जली भ'
देवीक संस्तुति करै लगला सहर्ष ॥ २

देवा ऊचुः ॥

जे चण्डिका सकल सृष्टिक एककर्त्री,
धर्त्री थिकी बनल देव समूह मूर्ती ।
तै अम्बिका चरण मे हम भ' विनम्र,
भक्त्या प्रणाम करि मङ्गल कामना सँ ॥ ३

जै श्री शिवा भगवतीक महाप्रभाव,
शक्तीक वर्णन करै नहि पार पावे ।
ब्रह्मा हरो हरि न होथि समर्थ वाला,
से चण्डिका जगत पालथु भै हटा क' ॥४

जे श्री स्वयं सुकृति लोकक गेह लक्ष्मी,
पापीक आङन घर स्थित जे दरिद्रा ।
सद्बुद्धि पण्डितक सज्जन लोकलज्जा,
श्रद्धा थिकी हुनक पैर सभक्ति पूजी ॥ ५

क्यों ने अहाँक शुभ सुन्दर रूप शक्ति,
शोभाक वर्णन विधानक रीति जाने ।
के हैत धीर रणवीर अहाँक तुल्या,
अत्यद्भुता सुचरिता विदिता अहाँ छी ॥ ६

छी सर्वहेतु जगतीक गुणत्रयी भ',
दोषादि सँ रहित विष्णु हराद्यपारा ।
सर्वाश्रया थिकहुँ अंश अहाँक भू ई,
अव्याकृता प्रकृति भ'क' अहाँ अनाद्या ॥ ७

यज्ञादि मे सकल देवक तृप्तिदात्री,
स्वाहा अहां थिकहुँ बह्निन प्रिया स्वरूपा ।
श्राद्धादिकाल समुपस्थित जन्मदाता,
के हेतु हे जननि पाठन हो स्वधा के ॥ ८

छी मुक्ति हेतु अविचिन्त्य महाव्रता छी,
अभ्यास हो अहिंक इन्द्रिय्र सैंयमी छी।
मोक्षार्थि विज्ञमुनि मानव के सुपूज्या,
विद्या अहाँ भगवती चमकैत देवी ॥ ९

शब्द स्वरूप ऋग्वेद यजुः स्वरूपा,
उद्गीथ रम्यपदपाठवती अहाँ छी।
वेदत्रयी भगवती सुख सम्पदा के,
दात्री अहीं थिकहुँ जीवनदायिनी छी ॥ १०

मेधा थिकौं सकल शास्त्रक बोधकर्त्री,
संसार सागरक पार करी तरी छी।
लक्ष्मी अहाँ हरिक मानसवासिनी छी,
गौरी अहाँ शिवक संगिनि सुप्रतिष्ठा ॥ ११

किञ्चित् सुहास परिलक्षित पूर्णचन्द्र,
विम्बानुकारिमुखि शुद्ध सुवर्णरूपा।
आहाँक देखि मुख मोदित के न हैता,
तैओ प्रहार कअ देलक दैत्य कोना ? १२

आहाँक चन्द्र सदृच्छवि कोप टेंढ़,
देखैत आस्य महिषासुर जे मरल ने।
आश्चर्य सैह वर भेल न जीव बाँचे,
क्रोधान्ध अन्तकक दशर्नवाद देही ॥ १३

देवी प्रसन्न अहाँ होइत' भाग्यवात् हो,
कुपिता अहाँ करइ छी कुलनाश शीघ्रे ।
ई देखि लेल हम सम्प्रति दैत्यराज,
निर्मूल भेल महिषासुर वंश साथे ॥ १४

ओ सर्वसम्मत बने धनवान ओहे,
ओ कीर्तिमान सुकृती यश धर्मवाला ।
ओ धन्य हो सतत रक्षित पुत्रवाला,
होइ छी प्रसन्न जकरा पर देवि आहाँ ॥ १५

यज्ञादि कर्म सब सादर नीक रूपे,
जे क्यो करे सुकृति सञ्चय नित्य धर्म ।
स्वर्ग प्रदान तकरा सुख सम्पदा ओ,
दै छी प्रसन्न भ' क' फलदा अहाँ छी ।१६

दुर्गे अहाँ हरइ छी सभ भीतिभार,
सम्यक् स्मृता अति शुभामति दै छि आहाँ ।
दारिद्रय् दुःखहरणी उपकार कर्त्री,
आहाँ बिना भुवन मे कहु के दयार्द्रा ॥ १७

ई पापिओ निखिल दानव मारला सँ,
स्वर्ग प्रयाण क' लेथु ई ताहि बुद्धया ।
मारी अहाँ समर मध्य पुकारि तारी,
गारी गलौज करितो अरिकें सम्हारी ॥ १८

देखैत भस्म किये ने अरि के करै छी,
जे शत्रु के उपर हाथसँ शस्त्र फेकी।
स्वलोक जा सुख करो सब शत्रु ओ ई,
से जानि देवि निज हाथहि सँ हनै छी॥ १९

खड्गप्रभा चमक शूलक कान्ति द्रष्टा,
शत्रूक दग्ध किये ने युग आँखि भेल।
आहाँक चन्द्रसन आस्यक दर्शने सँ,
शत्रुक आँखि बचि जाय ई हेतु मानी॥ २०

दुर्वृत्तवृत्त शमनी दमनी अरी के,
आहाँक शील अछि सुन्दर रूप सेहो।
देवादि के सुख पराक्रम, नाशकारी,
के मारि नीक गति द' क' कृपा करैछी। २१

आहाँक शक्ति बलके उपमा कत्तो ने,
देखी अहाँक सन सुन्दर रूप कत्तौ।
चित्ते कृपा समर मे निष्ठुरता करै छी,
आहाँ समान अहिं छी भुवनत्रयी मे॥ २२

त्रैलोक्य कें सकल शत्रुक नाश क' क'
अहाँ बचाय कृपया सुखपूर्ण कैलौं।
शत्रुक नाश क' दुःख हटाय देलौ,
तें देवि सर्ब सुखदे प्रणती करै छी॥ २३

गीतिका

शूल ल' कर मे अहाँ पुनि, खड्ग ल' पालन करू ।
सतत घण्टा के बजा क' धनुष ल' संकट हरू । ।२४

पूर्व पश्चिम दक्षिणोदिश, उत्तरो दिश सदिखने ।
हे ईश्वरी निज शूल फेरू, करू कुशल जेना बने ॥ २५

सौम्य सुन्दर मुख बना क' वा विकट विकराल भै ।
घूमि घूमिक' हमर रक्षा, करू अहाँ जग के अभै ॥ २६

जे अहाँके हाथमे अछि, खड्ग शूल गदा महा ।
ताहि सभ सँ करू सुरक्षा, दिअ' शान्ति के सरिता बहा ॥ २७

ऋषिरुवाच ॥ २८

एहि तरहें नन्दनोद्भव, फूल माला चन्दनो ।
लै'क' सभ सुर चण्डिका के पूजलनि कै बन्दनो ॥ २९

भक्तिपूर्वक देवता सँ, पूजिता देवी तखन ।
सानन्द सुमुखी भ' क' बजली, बहुत सुन्दर शुभ वचन ॥ ३०

देव्युवाच ॥ ३१ ॥

हे देवगण । किछु माङु हमरा, सँ अपन मन बाञ्छिते ।
छी प्रसन्ना देव सब किछु, करब सुर आकाङ्क्षिते ॥ ३२

देवाऊचुः ॥३३॥

हे देवि । सभ किछु कैल अहाँ, आब नहि किछु शेष अछि ।
शत्रु महिषासुर के मारल, सैह सबसँ बिशेष अछि । ३४

एहि शत्रुक वध सँ बेशी, और देवक मन करी ।
त' हे महेश्वरी माङि रहलौं,सुनु सुरासुर शुभ करी ॥ ३५

स्मरण करिते देवि अहाँ, सुरक संकट हरु सदा ।
इऐह वर हम सभ मङैछी ध्यान राखू सर्वदा ॥ ३६

लोक जे एहि स्तुतिक सँगे, संस्मरण पूजन कथा ।
करथि हुनकर घर भरल हो, धान्यधन रिधि सिधि जथा।
वंश बृद्धिक संग सङ्गे, हो शुभ सुख सम्पदा ।
देवगण ऊपर प्रसन्ना रहि हरू दुख आपदा ॥ ३७

ऋषिरुवाच ॥ ३८॥

एहि तरहें जगत हित ओ, अपन हित के कामना ।
सँ सुनौलनि देवता स्तृति, क' बहुत आराधना ।
भद्रकाली भ' प्रसन्ना हँसि तथाऽस्तु प्रण सहति ।
बचन कहि अन्तर्हिता ओ भ' गेली जै जै सहित ॥ ३९

हे सुरथ राजन् सुनौलौं, श्री शिवा देवी कथा ।
सर्व देवक देहसँ ओ, जन्म लेने छथि यथा ॥ ४०

पुनः गौरी देह सँ ओ, जन्म लेती बाद मे ।
दुष्ट शुम्भासुर निशुम्भासुरक अति उन्माद मे ॥ ४१

दुष्ट दूनू दैत्य के वध, हैत हुनके हाथ सँ ।
देवता मानवक रक्षा, हैत हुनके हाथ सँ ॥ ४२

सर्वदा ओ देव मानव जीवके उपकारिणी ।
भगवती देवी बनै छथि, जन्म ल' सुखकारिणी ॥
प्रख्यात जेना जे जत' अछि, से सुना हम दैत छी ।
हे सुरथ मायाक बन्धन, कहि क' मन हरि लैत छी ॥ ४३

दोहा
श्री सुरेश झा कैल ई, देव स्तुति अनुवाद ।
भक्तजनक मनके हरो, देवी भक्ति प्रसाद ।

इतिश्री मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत सावर्णिक मन्वन्तर देवी महात्म्य
स्वरुप मैथिली दुर्गा-सप्तशती में शक्रादि स्तुति ॥

अथ पञ्चमोऽध्याय :

ओम् ऋषिरुवाच ॥ १

दोहा

महिषासुर के मरण बुझि, स्तुति मे सुर लगलाह ।
तकर बाद जे भेल से, मार्कण्डे वजलाह ॥

गीति भारती

पूर्व कोनो कल्प मे छल, सभ दानवक राजा बनल ।
शुम्भ और निशुम्भ नामक, त्रैलोक्य मे नामी बनल ॥
श्री शचीपति सूर्य आदिक, शुभ यंज्ञ भागो हरइ छल ।
स्वर्ग लोको धरि पहुँचि क' दुख दर्द सबके करइ छल ॥ २

इन्द्र रवि शशि यम बरुण ओ, पवन अग्नि सँ युद्ध क' ।
सभक शासन छीनि लेलक, रहय सभ पर क्रुद्ध भ' ॥ ३

ओहि दूनू दानवाधिप, सँ पराजित देवता ।
भागि क' ऐला भुवन मे करथि सभ ओ एकता ॥ ४

गेल सभ अधिकार जैखन, तखन ओ सब मन मने ।
अपराजिता देवीक वरके, स्मरण कैलनि सदिखने ॥ ५

चण्डिका देवी सुनौने, रहथि जहि वरदान के।
से स्मरण भेलनि त्रिदशके, जखन धैलनि ध्यानके॥
आपत्ति मे हम देवता के हरब संकट आबिक'।
तैं स्मरण हुनके करी से, कहि रहथि सभ गाविक' ॥ ६

एहि तरहक बुद्धि क'क', सकल सुर हिमवान् गिरि।
पहुँचि देवी विष्णुमाया, के रिझाबथि घूमि फिरी॥
स्तुति करै लगलाह सभ ओ, देवतागण एक स्वर।
कै आवाहन पूजनादिक, स्तुति सुनावथि एक स्वर। ७

देवा ऊचु : ॥ ८ ॥

देवितुभ्यं नमः कहि-कहि, श्री महादेवी शिवा।
प्रकृति भद्रा नाम ल' ल', नमन करि हम शिर लिबा॥ ९

हे गौरि नित्या थिकहुँ रौद्रा, धात्रीक शुभ ल' नाम के।
इन्दु रूपिणि हे सुखे हे चन्द्रिके लिअ प्रणाम के।। १०

प्रणति सिद्धि वृद्धि कहिक, कल्याणि कहि हम करि नमन।
निर्ऋती लक्ष्मी नमस्ते, शर्वाणि हे हम करि नमन॥ ११

स्रग्धराछन्द
हे दुर्गे दुर्गपारे, प्रणति शिर झुका, साञ्जली भ' करै छी,
हे सारे सर्वकारे नमन हम करी, ख्याति संज्ञ नमस्ते।
कृष्णेधूम्रे नमस्ते सतत हम करी, सौम्यते पूर्ण रौद्रे,
सर्व प्राणी प्रतिष्ठे सकलजन हिते, हाथ जोड़ी कृतीके ॥१२

इन्द्रबज्रा

जे सर्वभूत स्थित विष्णु माया,
काया जकाँ जानल जाथि देवी ।
भक्त्या प्रणामाञ्जली तीन बेर,
क'क' बुझी वस्तु गुणत्रयी ओ ॥ १६

जे चेतना रूप शरीर मे ई,
देवी थिकी ज्ञान गुमानबाली
तस्यै नमो मानस देह वाणी,
के रूप मे तीन प्रणाम बाजी ॥ १८

जे बुद्धिरूपा सब देह मे छी ।
देवी अहाँ वस्तु बूझाय दै छी
तें देह वाणी मन के समान,
हे बुद्धिदे तीन प्रणाम लीअ' ॥ २२

निद्रा अहाँ सर्व सुख प्रदात्री,
प्राणी शरीरस्थित शोभमाना ।
तैं काय वाणी मनसँ त्रिरूपे,
हे देवि अहाँ पद मे प्रणाम ॥ २४

देवी क्षुधा भै सब देह मे छी,
मान प्रतिष्ठा धन मूल हन्त्री ।
तैं देह वाणी मन सँ करै छी,
देवी क्षुधा के पद मे प्रणाम । २८

छाया थिकौं देहक संग सङ्गे,
माया जकाँ दूर न होइ आहाँ ।
तैं देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि आहाँ पद मे प्रणाम ॥ ३१

जे शक्तिरूपा भ' संस्थिता छी ,
संसार के प्राणि शरीरवर्ती ।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि आहाँ पद मे नमस्ते ॥ ३४

तृष्णा अहाँ देवि शरीर मे छी,
जे लोभ कैने जग बीच निन्दा ।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि अहाँ पद मे प्रणाम ॥ ३७

शान्ति स्वरूपा भ' देह मे छी,
जे क' क' हो मानव मानबाला ।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
क्षान्ते अहाँ के पद मे प्रणाम । ४०

जे जाति रूपा कहबै छि आहाँ,
देह स्थिता गोत्व नरत्व रूपा ।
तैं देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि आहाँ पद मे प्रणाम ॥ ४३

लज्जा स्वरूपा बनि विद्यमाना,
देह स्थिता लोक सुख प्रदात्री।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि आहाँ पद में प्रणाम ॥ ४६

शान्ति स्वरूपा बनि संस्थिता छी,
संसार मे लोक सुख प्रदात्री।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि शान्ते पद मे प्रणाम ॥ ४८

श्रद्धा स्वरूपा बनि लोक में छी,
पूजा प्रतिष्ठा गुरु वर्ग में से।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि आहाँ पद मे प्रणाम। ५२

कान्ति स्वरूपा बनि वर्तमाना,
संसार मे सुन्दरताक मूला।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि कान्ते पद मे प्रणाम ॥ ५५

लक्ष्मीस्वरूपा बनि संस्थिता छी,
संसार मे सर्व सुख प्रदात्री।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि लक्ष्मी पद मे प्रणाम ॥ ५८

जे वृत्ति रूपा भ'अ जीविका दी,
व्यापार खेती मृतिकादि कार्य ।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि वृत्ते पद मे प्रणाम ॥।६१

जे संस्मृती वा स्मृति रूप आहाँ,
विद्यालयी छात्रक बोध रूपा ।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
देवि स्मृती के पद मे प्रणाम । ६४

दया स्वरूपा भ' संस्थिता छी,
दु:खार्त के रक्षण कारिणी भ' ।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि आहाँ पद मे प्रणाम ॥।६७

जे तुष्टिरूपा बनि वर्त्तमाना,
अल्पे धनो धान्यसंतोषदात्री ।
तें देह वाणी मन सँ करै छी
हे देवि तुष्टे पद में प्रणाम ॥ ७०

जे मातृरूपा बनि वर्तमाना,
संसार में प्राणिक जन्मदात्री ।
तें देह वाणी मन सँ करै छी,
हे देवि माता पद मे प्रणाम । ७३

जे भ्रान्ति रूपा बनि संस्थिता छी,
सज्ञानिओं के मति के बिगाड़ी।
तें देह बाणी मन सँ करै छी,
हे देवि आहाँ पद मे प्रणाम ॥ ७६

गीति

छी अधिष्ठात्री अहाँ सब, इन्द्रियक देवी बनल।
प्राणि मात्रे मे सदा छी, व्याप्ति देवी से बनल ॥ ७७

व्याप्त क' मानव शरीर के, चिति स्वरूपा रहल छी।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं, नमस्तुभ्यं कहइ छी ॥ ८०

शार्दूल बिक्रीडित छन्द

एवं रीति विधान सँ बहुदिने, शक्रादि सँ संस्तुता,
देवी दुर्गतिनाशिनी भगवती, भेली प्रसन्ना उमा।
आपत्तीक विनाश कैक' पहिने गौरीश्वरी पार्वती,
सर्वाभीष्ट प्रदायिनी बनथु ओ कल्याण के कारिणी ॥ ८१

श्रद्धा भक्ति विनम्र भाव कयने, ब्रह्मादि देवेन्द्र कें,
पूजा स्तोत्रक पाठ ओ नमन सँ, भेली प्रसन्नानना।
ओ देवी दनु पुत्र शुम्भ सभके, संहारि शीघ्रे पुनः,
देवापत्ति विनाश कै जगत मे हैती शुभा संस्मृता ॥ ८२

ऋषिरुवाच ॥ ३८

एवं प्रकारे स्तुति सुनाव, मे रहथि सुरगण जखन ।
ताहि ठां श्री पार्वती जी, पहुँचली नृप सुनु तखन ॥
स्नान करबा लेल गंगा में उमा जाइत छली ।
देखि ओ सुर मण्डली के, बाजि उठली निश्छली ॥ ८४

हे देवगण ! सभ मीलि किनकर, स्तुति करै छी शिर लिवा ।
पूछिते एतवहि मे देवी, प्रकटि भेली श्री शिवा ॥
पार्वती के देहकोश सँ निकलि बजली ओ शिवा ॥ ८५

शुम्भ और निशुम्भ दूनू, दैत्य सँ सब तंग भ' ।
आबि स्तुति हमरे करै छथि, देवगण सब सँग भै ॥ ८६

पार्वती के देह कोशे सँ, हुनक उत्पत्ति छल ।
तें त्रिलोकी मे शिवा के, कौशिकी ई नाम छल ॥ ८७

कौशिकी के चल गेला पर, बहुत कृष्णा पार्वती ।
कालिका विख्यात भेली, पहुँचि हिमगिरि पर सती ॥ ८८

गिरिशिखर पर अम्बिका ओ रूप सुन्दरतम बना ॥
रहथि शोभथि स्थिति अपन ओ-दूर तक देलनि जना ।
एक दिन दानव निशुम्भक भृत्य चण्ड ओ मुण्ड अरि,
देखि देवी के सुमुख ओ, शुम्भ के कैलक खवरि ॥ ८९

शुम्भ लग ओ पहुँचि बाजल, हे महाराजा सुनू ।
गिरि हिमालय के उपर मे, स्त्री बसल सुन्दर तनू ॥ ९०

आइ धरि ने केओ देखने, अछि एहन उत्तम रूप के।
चलि के देखू पकरि लाऊ ओ हैत स्त्री अनुरूप के॥ ९१

ओहि सुन्दर रूपवालिक, कान्ति के की वर्णन करू।
चलि स्वयं देखू अहाँ ओहि, स्त्री रत्न पर कब्जा करू॥ ९२

त्रैलोक्य के सब रत्न उत्तम, अश्व गज मणि आदि अछि।
सब अहीं के घर मे शोभा, पाबि देखल जाइ अछि॥९३

गज मे रत्न समान ऐरावत पुरन्दर सँ छिनल।
कल्पतरु उच्चैःश्रवा हय, सेहो इन्द्रे सँ छिनल॥ ९४

हंसयुक्त विमान ब्रह्मा, सँ छिनल शोभा करे।
अहाँक आङन मे सुसज्जित, भ'क'मन सभ के हरे।९५

श्री कुबेरक छीनि लैने, थिकहुँ निधि महापद्म के।
किञ्जल्किनी माला उदधि सँ लाबि सजलहुँ सद्म के॥ ९६

छत्र काञ्चन वरुण सँ छिनि, घर मे रखने छी अहाँ।
श्री प्रजापति के सुस्यन्दन, छीन रखने छी अहाँ॥ ९७

उत्क्रान्तिदा नामक महा ई शक्ति हरने छी अहाँ।
सलिल राजक पाश छिनने छथि सहज जानू अहाँ॥९८

अहाँक सोदर श्री निशुम्भके रत्न देने छथि जलधि,
वह्नि सुन्दर वस्त्र देने छथि पवित्रक जे अवधि॥९९

संसार के सब रत्न छिनि क' घरमे राखल गेल अछि।
स्त्री शिरोमणि रत्न एहो जन्मली से कहि देल अछि ॥ १००

ऋषिरुवाच ॥॥१०१॥

एहि तरहे सुनि शुम्भ,चण्ड मुण्डक वात नव।
सुग्रीव दैत्य के कहि बुझा क' झट पठौलनि दूत नव ॥ १०२

ओहि तरहे एहि तरहे कहि सुना फुसलाय क'।
जाहि तरहे सुन्दरीओ आबि जाय लुभाय क' ॥
प्रीति हमरा मे करे ओ सुन्दरी तेना करह।
जाहि तरहे स्त्री वने ओ सुग्रीव तों तेना करह ॥ १०३

ऋषिरुवाच ॥ १०४

हिमगिरिक ऊपर जत' ओ रहथि देवी शोभना।
ताहि ठाँ ओ दूत पहुँचल सन्देशवाहक दनदना ॥ १०४

दूत उवाच ॥॥ १०५

त्रैलोक्य स्वामी शुम्भके हम दूत छी हे देवी सुनू।
सन्देश देबक लेल अहाँ पास आयल छी सुनू ॥ १०६

देवतो मे क्योनि काटय, शुम्भ कृत आदेश कैं।
सर्वशत्रुक ओ विजेता, सुनु हुनक सन्देश कैं ॥ १०७

त्रैलोक्य भरि अछि बशमे हमरे, चलय हमरे पाछु सब ।
सकल देवक यज्ञ भागो, हमहि भोगी कै विवश ॥ १०८

त्रैलोक्य मे जे रत्न सुन्दर, सबटा हमरे पास अछि ।
देवेन्द्र के ओ रत्न गज सेहो, हमरे पास अछि ॥ १०९

क्षीर सागर मथि निकालल, अश्वरत्नो द' देलनि ।
अमरगण सव वस्तु सुन्दर, प्रणति पूर्वे दै देलनि ॥ ११०

देवता गन्धर्व नागक रत्न भूत निधान जे ।
सव समर्पित भ' क' शोभै, नीक खानापान जे ॥ १११

स्त्री मे रत्नक सदृश अहाँ के बुझै छी हमहु सव ।
तें अहाँ झट आउ हमरे घरमे शोभित भ' रहव ॥ ११२

रत्न भोगी हम थिकहुँ वा हमर सोदर भाइ अछि ।
ककरो पत्नी बनि सुशोभा, करू अहुँक सुखदाइ अछि ॥ ११३

हमर पाणिग्रहण कैने, ऐश्वर्य अनुपम पाबिक' ।
रहब ई बुझि आउ हमरा संग रहु गुण गाविक' ॥ ११४

ऋषिरुवाच ॥ ११५ ॥

सूनि ई सन्देश शुम्भक हँसि क' बजली भगवती ।
जगतधारण शक्तिवाली दुर्गा सुभद्रा श्रीमती ॥ ११६

देव्युवाच ॥११७॥

सन्देश वाणी सत्य अहाँ केर अछि मानैत छी ॥ ७४ ॥

त्रैलोक्य के अधिपति न आहाँ, आधिपति मानैत छी ।
अछि निशुम्भो अहिंक सन वनि आधिपति सव लोकके ।
सत्य सँ अछि मुक्त अधिपति, आधि कहि जन शोकके ॥
वास्तवो में छी अहाँ दुनू भाइ लोकमे आधिपति ।
तें सुनू सन्देश उत्तर, कहि रही हे असुरपति ॥।११८

अछि प्रतिज्ञा कैल हमरा, से न मिथ्या भ' सकत ।
सूनि लिअ' ओ अल्पबुद्धिक, जे प्रतिज्ञा नहि हटत ॥११९

जीति सकता युद्ध क' क', दर्प हरता हमर जे ।
सैह स्वामी हमर हैता, विजय कारी समर में ॥ १२०

तें तोहर ओ शुम्भ अथवा निशुम्भ आबथु जीति क' ।
ल' चलथु पाणिग्रहण कै, रहथु सब दिन प्रीति क' ॥ १२१

ऋषिरुवाच ॥(१२२॥

भ' घमण्डी एहि रूपक, बात हमरा नहि कहू ।
शुम्भ दूनू भाइ आगू, के टिकत से कनि कहू ॥ १२३

आन दैत्यो केर सन्मुख, देवता नहि समर मे ।
जीतलनि त दुर्वला स्त्री, की जितत चढ़ि समर मे ॥ १२४

इन्द्रादि सुरपति जकर आगू युद्धमे नहि स्थिर रहे ।
ताहि शुम्भक साथ कोना, बात युद्धक स्त्री कहे ॥ १२४

तें अहाँ चलु हमरे कहने, दैत्येन्द्र शुम्भक पास मे ।
नहि त' गौरव ढाहि केशे पकरि जायब सोल्लास मे ॥१२६

देव्युवाच ॥ १२७ ॥

बात सबटा सत्य बूझी शुम्भादि दनु ओ बर बली ।
किन्तु तोरव नहि प्रतिज्ञा, शुम्भ सँ कहु भ' निश्छली ॥१२८

जाउ अाहाँ शुम्भ सँ कहु हमर बाजल ठीक सँ ।
जे उचित हो से करथु ओ बूझिसूझिक नीक सँ ॥ १२९

महिषासुर संवादके सुनि उत्तर प्रतिवाद ।
होथु भक्तजन मुदितमन, लेथु मैथिलिक स्वाद

इतिश्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिक मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये देव्यादूत संवादः ।

अथ छठम अध्याय

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

एहि तरहें सूनि देवी, के बचन फटकार सन ।
क्रुद्ध भ' सुग्रीव सुनबय, चलल निज सरकार सँ ॥
आबिक ओ शुम्भ लगमे, सब सुनौलक बात के ।
चण्डिका के जे प्रतिज्ञा, वचन छल आघात के ॥ २

दूत मुख सँ सूनि सब किछु शुम्भ क्रोधातुर महा ।
भ'क' बाजल धूम्रलोचन दैत्यपति सँ दुस्सहा ॥ ३

हे धूम्रलोचन जाउ अंहाँ अपन सेना साथ क' ।
ओहि स्त्री के केश धैने, लाउ अपने साथ क' ॥ ४

ओकर रक्षा करयबाला केओ आवे सामने ।
सवके मारब यक्ष वा सुर-गन्धर्व हो जेना बने ॥ ५

ऋषिरुवाच ॥६॥

आज्ञप्त भ'क' शुम्भ सँ ओ, धूम्रलोचन झट चलल ।
षट्अयुत सेनाक सँगे युद्ध के खलबल मचल ॥ ७

हिमगिरिक ऊपरमे बैसल, अम्बिका के जा निकट
जोर सँ ओ गरजि बाजल रूप धयने अति विकट
शुम्भ के घर वा निशुम्भक घर मे चल हमरा सङे ।
शुम्भ के रानी तों बनिहे करिहे सव सुख सङ-सङे ॥ ८

प्रीति पूर्वे चल तों देबी नहि त' केशे पकरि क' ।
ल' चलब कोनो प्रकारे देवि तोरा जकरिक ॥ ९

देव्युवाच ॥ १० ॥

दैत्यपति सँ तों पठाओल गेल छ तों बलवला ।
यदि पकड़ब ल' क' चलब त' करब की निर्बला ॥ ११

ऋषिरुवाच ॥ १२ ॥

सूनि देवी के वचन ओ धूम्र आगाँ जँ भेलनि ।
हुँकार क' देवी तुरन्ते भस्म हुनका क' देलनि । १३

क्रुद्ध असुर सैन्यगण पर अम्बिका सायक चला ।
शक्ति परशु आदि शस्त्रो के चलौलनि बौखला ॥ १४

तखन गर्दन के उठौने गरजि भीषण सोर क' ।
सिंह सेहो असुर सेनो, दिश बढ़ल बर जोर क' ॥ १५

ककरो पञ्जा मारि ककरो पकरि मुह मे क' लेलक ।
दाबि दाँतो सँ कतेको के हताहत क' देलक ॥ १६

कोनो दैत्यक शीर फाटल रुधिर चाटल गेल अछि ।
कर चपेटा सँ शिरो उरि, पृथक-पृथके भेल अछि । १७

कत असुर के जाँघ मस्तक काटि देलक केशरी ।
दाँत बाहर क' क' कतके माँस खैलक केशरी ॥ १८

बहुत कम्मे काल में ओ असुरसेना क्षय भेला ।
कुपित सिंह ओ चण्डिका सँ असुरगण सब लय गेला ॥ १९

धूम्रलोचन मरल ओकर संग सेना सब मरल ।
सिंह देवी के क्रिया सुनि शुम्भ कोपानल भरल ॥ २०

क्रोध सँ ओ दांत पिसइत शुम्भ बाजल असुरपति ।
चण्ड मुण्डो के बजा आज्ञप्त कैलक ओ कुमति ॥ २१

हे चण्ड मुण्ड तों अपन सेना लैक जा झट समर मे ।
ओहि देवी के पकरि क' शीघ्र लाबह नजर मे ॥ २२

केश ध' क' बान्हबा मे जँ कोनो संशय रहो ।
मारि दीह ओहि देवी के न बांचल ओ रहे ॥ २३

सिंह मारल जाय सेहो अम्बिका के मारि क' ।
बान्हि रासा मे दुनू के मुर्द लाब' सम्हारिक' ॥ २४

इति पण्डित श्री सुरेश झा रचित मैथिली दुर्गासप्तशती में
धूम्रलोचनबध नामक छठम अध्याय समाप्त ।
इति श्री मार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी माहात्म्ये
धूम्रलोचनबध : ॥

अथ सत्तम अध्याय

ओम् ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

दोहा

शुम्भक आज्ञा पाबिक चलल चण्ड ओ मुण्ड ।
चतुरंगी सेना सहित जे छल झुण्डक झुण्ड ॥ २

गीति

जाक देखय हँसि रहल छथि देवि सिंहक पीठपर ।
गिरि हिमालय शिखर ऊपर कैने अरि के दृष्टि पर ॥ ३

देखि देवी के पकड़बा लेल उद्यम क' रहल ।
धनुष शर असि अस्त्र लेने अम्बिका सन्मुख रहल ॥ ४

नजर पड़िते दैत्यगण पर, अम्बिका के मुख तखन ।
क्रोध सँ कारी मुखाकृति, भेल छल मसि वर्ण सन ॥ ५

कुटिल भ्रुकुटी सँ भयानक, अम्बिकाक ललाट सँ ।
काली कराला प्रकट भेली, पाश असि लै छाँट सँ ॥ ६

आश्चर्यकर खट्वाङ्ग कर मे नर माल गरमे से रहे ।
पहिरने गजचर्म देवी निर्मांस जनु काले रहे ॥ ७

मुख पसारल दाँत कट कट जीभ लपकौने रहथि ।
रक्तनयना नाद भारी सँ दिशा भरने रहथि ॥ ८

आकाश लागल लम्बदेहा ओ कराली कालिका ।
अरि महासुर के पकरि क' खाथि भुजबल शालिका ॥
सुरारि शुम्भक सैन्य के ओ मारि खा आगाँ बढ़थि ।
देखि काली के भयानक रूप अरि भागल फिरथि ॥ ९

फिलवान घण्टा महथवाहक सहित हाथि के पकरि ॥
एक हाथें ओ काली, मुख में राखथि कै जकरि ॥ १०

ताहि तरहें समर में स्थित अश्व रथ ओ सवार के ।
पकरि मुख में धैने गेली चट चिबा संहार क' ॥ ११

ककरो केशे पकरि ककरो गर्दनि' के जकरिक' ।
ककरो पैरे सँ दबौने, रहथि अरि के रगरिक' ॥ १२

दैत्य योद्धागण सँ फेकल अस्त्र शस्त्रो मुख मे धए ।
दाँत सँ चिबबैत काली, सुरशत्रुता जेना सधे ॥ १३

अरि दुरात्मा असुरगण के पीसि दै छथि मारिक' ।
खैने अरि के जाथि काली कूटि पिटि संहारिक' ॥ १४

खड्ग सँ क्यो निहत भेला, होथि कियो खट्वाङ्ग सँ ।
दाँत दाबल कियो गेला, दुष्ट जे सर्वाङ्ग सँ ॥ १५

बहुत कम्मे काल मे सब दैत्य के सेना मरल ।
आक्रमण कालीक ऊपर चण्ड कैलक बल भरल ॥ १६

वाणवर्षा क' महासुर देवी के रण मे ढकि देलक ।
मुन्ड सेहो चक्र फेकलक कालिका के विंधि देलक ॥ १७

अरि के फेकल चक्र शर सव, कालिका मुख मे धरथि ।
कृष्णमेघक मध्य मे जनु सूर्य बैसल सन बनथि ॥ १८

तखन काली हँसिक' शीघ्रे बनिक' अरि भयकारिणी ।
अति कराला उग्रदन्ता कुटिल मुख संहारिणी ॥ १९

सिंह सँ झट उतरि काली, खड्ग कर मे ल' लेलनि ।
चण्ड के टीकी पकडिक, शिर के दू टुक क' देलनि ॥ २०

चण्ड के गिरितहिं समर मे मुण्ड आयल तेज सँ ।
मारि झट हुनको खसौलनि अम्बिका अति तेज सँ ॥ २१

चण्ड हत गीरल पड़ल छल मुण्ड मूर्च्छित भ' पड़ल ।
शेष सेना के सभय भ' युद्ध सँ भागै पडल । २२

चण्डमुण्डक शिर के काली हाथ मे धैने गेली ।
चण्डिका के निकट हँसि हँसि जोर सँ बजइत भेली ॥ २३

हे चण्डिके उपहार दै छी चण्ड-मुण्डक शिर चरू।
शुम्भ दूनू भाइ के रण, यज्ञ मे वध अपने करू॥ २४

ऋषिरुवाच ॥२५॥

अति महासुर चण्डमुण्डक शिर के काटल देखिक'।
ललित वाणी चण्डिकाजी बजली शिर के देखिक' ।२६

हे कालिके जें चण्डमुण्डक वध कयल तें वर सुनू।
नाम चामुण्डा अहाँके भेल जग मे से सुनू॥ २७

इतिश्री मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत मन्वन्तरम देवी माहात्म्य मैथिली दुर्गा-सप्तशती में चण्ड मुण्ड वधः ।

अथ अष्टम अध्याय

ॐ ऋषिरुवाच ॥ १॥

गीतिछंद

चण्ड मारल गेल मुण्डो मरल सेनगण बहुत ।
सूनिक' ओ दैत्य राजा शुम्भ बाजल किछु बहुत ॥ २

भ'क' कोपानल सँ दग्धल शुम्भ फरमाओल बचन ।
भेल निज सब सैन्यगण परयुद्ध भारी केर सन ॥ ३

भुजङ्ग प्रयात छन्द

चलू दैत्य कम्बू अहाँ ल' छियासी,
कुलोके लड़ाकू तथा चारि अस्सी ।
थिकौं आसुरी कोटि पञ्चासवंशी,
महा शक्तिशाली चलू सर्व सेना ॥ ४-५

चलू कालका दौर्हृदा मौर्यवंशी,
चलू कालकेया अहुँ ल' क' सेना ।
चलू सज्जिक' धज्जिक' आइ अहाँ,
करू युद्ध भारी हरू सुन्दरी के ॥ ६

गीति छन्द

एहि तरहे द' क' आज्ञा शुम्भ भीषण शासनी ।
नगर सँ सभ भेल बाहर कोटि सेना के धनी ॥ ७

देखि अवइत सैन्यगण के चापशर लै हाथ मे।
चण्डिका धनु शब्द ध्वनि सँ भरल नभ जग साथ मे ॥ ८

सिंह सेहो गरजि भारी शब्द कैलक बल भरल।
किन्तु ओ घण्टाक शव्दे सँ छिपल सन भेल छल ॥९

धनुष डोरी सिंह घण्टा शब्द सँ पूरित दिशा।
क'क' अतिशय जोर जै जै कालिका कैलनि रिशा ॥ १०

जैकार सुनिते दैत्य सेना चारू दिशासँ आबिक'।
एकवर्गी सिंह काली के घेरल भ्कट धाविक' ॥ ११

ताहि अन्तर मे सुरथ हे, असुरगणसंहारिणी।
सिंह काली के कुशलता हेतु बनि उपकारिणी ॥१२

शक्ति ब्रह्मा विष्णु शम्भुक देह सँ बाहर भेली।
आबि क' ओ चण्डिका में सम्मिलित शोभित भेली ॥१३

जाहि देवक रूप जे अछि प्रिय वस्त्र भूषण बाहनो।
तादृशे ओ शक्ति बनली मन्त्र विनु आवाहनो,
असुर संघक संग युद्धे मात्र छल मनकामनो ॥ १४

शार्दूल विक्रीड़ितछन्द

हंस स्कन्ध विमान शोभित पदा, रुद्राक्ष मालावती।
यज्ञादीक पवित्र सूत्र गर मे कमण्डलु हाथ मे।
श्री ब्रह्माक प्रतीक शस्त्र धयने क्रोधातुरा भासुरा,
ब्रह्माणी समुपस्थिता समर में कालीक भ' साथिनी ॥ १५

बरद आसन क' करमे महा
कठिन लोहक शूल सँ शोभिता ।
बलय सर्प महाशक्ति मस्तकी
पहुँचली रण मध्य महेश्वरी ॥ १६

कुमार के शक्ति मयूरबाली,
ल' हाथ मे शक्ति महान शस्त्रो ।
युद्धार्थ शुम्भासुर संग ऐली
अत्यन्त उग्रा गुहरूपिणी ओ ॥ १७ ॥

चक्रादिबाली शंख समेत शार्ङ्ग
वाली सखी कालिका वैष्णबीओ ।
गरूड़ के उपर वैसि ऐली,
श्री विष्णु के शक्ति गदावती भ' ॥ १८

वराह के शक्ति प्रहारकर्त्री,
धर्तीक़ धत्री भयदायिनी जे ।
से शूकरी रूपवती कराला ।
वाराहि देवी समुपस्थिता से ॥ १९

नृसिंह के शक्ति नृसिंह रूपे ,
कैने सटा फेकि अकाश मे क' ।
श्री नारसिंही रण मध्य ऐली,
काली सखी हिम्मतकारिणी ओ ॥ २०

सहस्र नेत्रा गजसंस्थिता भ',
श्री इन्द्र के शक्ति सुरूप कैने ।
युद्धार्थ हस्तङ्गत बज्र लेने,
ऐन्द्री सुरी संगत आबि भेली ॥ २१

एहि तरहे सर्व देवक, शक्ति देवी सँ घेरल ।
शम्भु कहलनि चण्डिका के प्रेम सुन्दर सँ भरल ।
दानवाधिप सहित सबके मारि ओ संहारिक' ।
शुद्ध करू तीनू भुवन के विपति के दिअ' टारिक ॥ २२

तखन सब देवी शरीरक, शक्ति संग विराजिता ।
चण्डिका शक्ति उग्र, रूप मे अपराजिता ॥
सैकड़ो नढ़नीक शब्दे मे, सन भयावह शब्द क' ।
धूम्र जटिलो शिव सँ बजली, राखिजग निस्तब्ध क' ॥ २३

युद्ध करबा लेल जे क्यो, असुर छथि मैदान मे ।
शुम्भ दूनू भाइओ के, कहु ग' जाक' कान मे ॥ २४

तीन लोकक राज्य पाबथु, इन्द्र सुर हवि खाथु सव ।
पाताल में सब जाउ आहाँ, जँ जिवै चाहै छी सब ॥२६

गर्व सँ यदि युद्ध करवा लेल, उद्यत होइ सव ।
आउ लड़ु आहाँक शोणित, सँ शिवा खुश हैत सब ॥ २७

दूत कार्यक हेतु शिवजी, शुम्भ लग पहुँचल छला ।
नाम शिवदूती हुनक तैं, परल अन्वर्थक बला ॥ २८

शर्त सुनितहि सब महासुर, भ'क'क्रोधातुर बढ़ल ।
कात्यायनी जहि ठाँ रहथि तै दिश मे दैत्यक गण बढ़ल ॥ २९

पहुँचि देवी पास सब ओ, दैत्यगण शरवृद्धि कैं ।
देवीक ऊपर शक्ति ऋद्धिक वृष्टि कैलक दृष्टि कै ॥ ३०

तखन देवी धनुष लेलनि, वाण फेकलनि खेल कै ।
दैत्य के शरशक्ति परशु, काटि देलनि खेल कै ॥ ३१

शूल ल'क' तुरत काली, मारि अरि के खट्वांग सँ ।
शत्रुके संहार क' क' रण मे घूमथि स्वाङ्ग सँ ॥ ३२

शार्दूल विक्रीडित छन्द

ब्रह्माणी पढ़ि मन्त्र मारथि अरी, कमण्डलु पानि सँ ।
पक्का लोहक शूल फेकि अरि के मारैछ माहेश्वरी ।
चक्रे फेकि समस्त शत्रु जनके, मारै छली वैष्णवी,
कौमारी निज शक्ति शस्त्रक बले, सँ शत्रुसंहारिणी ॥३३, ३४

ऐन्द्री वज्रकपात चोट खअने, सौ सौ हतप्राण भै ।
पृथ्वी से भरि गेल दैत्यगण के, मुर्दा तथा खून सँ ।
वाराही निज तुण्ड दाँतक बले, शत्रुक विध्वंस कै,
सौ सौ दैत्यक अंग फारि नख सँ सिंही नरी मोद मे ॥ ३५

दोहा
शिव दूती के अति विकट हाथहि सँ मरि जाय ।
जे सब तकरा पकरि खा लेथि शिवा शिरकाय ॥ ३६

एहि तरहें नाश मर्दन असुर के जँ भेल त' ।
जान बचबक हेतु भागल असुर घर चलि गेल त' ॥ ३७

देखि भगइत असुर सेना डरल छ्ल मन मारिक' ।
युद्धार्थ आयल झट महासुर रक्त बीज सम्हारि क' ॥ ३८

लरय लागल चण्डिका सँ भेल ओ घायल जखन ।
ओकर देहक रक्त बिन्दू भेल नव नव असुर जन ॥ ३९

सेहो सभ ओ नव महासुर लरथि रण मे सोर कै ।
रक्तबीजक उपर ऐन्द्री वज्र फेकलनि जोर कैं ॥ ४०

रक्तबीज ओ भेल घायल अति तेज कुलिश प्रहार सँ ।
ओकर शोणित रक्तबीजे सन बढ़ल असुराकार सँ ॥ ४१

रक्त के छ्ल विन्दु जतबा तावते संख्याक औ ।
रक्तबीज समान पूरुष बनल रण मे असुर ओ ॥ ४२

रक्त सँ जन्मल असुर सब मातृदेवी सँ लरै ।
अत्युग्र शस्त्र प्रहार कैने, जाय झटपट तरफरे ॥ ४३

तखन ऐन्द्री ध' क' देलनि बज्र ओकरा शिर उपर।
फुटल मस्तक बहल शोणित असुर नव नव हो उपर। ४४

वैष्णवी ओहि रक्तबीजक उपर चक्र प्रहार कै।
शक्ति ऐन्द्री निज गदा सँ मारलनि हुँकार कै॥ ४५

वैष्णवी के चक्र छेदित देह सँ शोणित तरल।
बहल से सब ज्ञात सहस्रो नव रक्तबीज सँ जग भरल॥ ४६

कौमारिका शक्ति चलायवारा-
ही के महा खड्ग प्रहार कैनौं।
माहेश्वरी शूलक चोट खैनौ,

ओ रक्त वीर्यासुर शान्त नै हो॥ ४७

नव महासुर सेहो रण मे, कर मे लै भारी गदा।
सवहि देवी के पिटै छल पृथक पृथके भ' सदा।। ४८

किन्तु देवी गण सँ आहत रक्तबीजक खून ओ।
भेल लाखो रक्तबीजे, रणमे अफलातून ओ॥ ४९

रक्त सँ संभूत दानव-गण सँ जग भरि गेल सव।
देवता भयभीत भेला, निपटि कोना हम सकब॥ ५०

देखि क'भयभीत सुर के श्री चण्डिका बजली तखन।
हे सखी काली अहाँ करु, विस्तीर्ण मुख जीभो अपन। ५१

हमर शस्त्राघात सँ जे एकर रक्त बहैत हो ।
चाटि झटपट जाउ आहाँ, जाहि सँ नव ई न हो ॥ ५२

एहि तरहे खून चटने, नव न दानव भ' सकत ।
एहि तरहे युद्ध कैने क्षीण ई सब भ' सकत ॥ ५३

बहुत उग्रा होउ काली, सावधान होउ सदा ।
कहि के ई श्री चण्डिकाजी, शूल फेकलनि ओ गदा ॥ ५४

तखन काली रक्तबीजक, खून चटने जाथि झट ।
रक्तबीजो निज गदा सँ, सबके मारे जा निकट । ५५

किन्तु देवी के न होइ छल वेदना देहक पतन ।
असुर के खर शर गदा ओ, चण्डिका के फूल सन ।
चण्डिका सँ हत असुर के देह सँ बह रक्त धन ॥ ५६

एहि तरहें हत असुर के, रक्त चाटल जाय सब ।
कालीक मुख मे पहुँचि शोणित, पेट मे पचि जाय सब । ५७

रक्त सँ उत्पन्न सब के खा गेली देवी जखन ।
शोणित पीबि रक्तबीज के, क' देलनि दुर्बल तखन ।
तखन देवी हाथ मे ल', शूल बज्र ओ वाण असि ।
रक्तबीज शरीर पर झट, चोट देलनि शस्त्र कसि ॥ ५८

एक समये मे अनेको शस्त्र सँ आहत भेला ।
रक्त बिनु दुर्बल महासुर, रक्तबीज ओ मरि गेला ॥ ५९

छोरि सब किछु तोरि दम ओ, भूमि पर खसला जखन ।
हे सुरथ राजन् महासुर, रक्तबीजक सुनि पतन ॥ ६०

हर्ष निर्भय देवतागण, फूल बरसाबथि गगन सँ ।
मातृगण सानन्द भ' क', नाँचि रहली मगन सँ ॥ ६१

इतिश्री मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत मन्वन्तक् देवी माहात्म्य श्री मैथिली
दुर्गा-सप्तशती में रक्तवीज वधः ।

अथ नवम अध्याय

ओम् श्री राजोवाच ॥ १ ॥

भगवन् अहाँ आश्चर्य रूपक, कहल देवी के चरित ।
रक्तबीजक बध सुनैलौं, माहात्म्य देवी के सहित ॥ २

रक्तबीजक मरण बादो के, कथा सब सुनबाक अछि ।
क्रुद्ध शुम्भ निशुम्भ कैलक, तखन की से बुझबाक अछि । ३

ऋषिरुवाच ॥ ४ ॥

बहुत दैत्यक संग रण मे, मरल रक्तबीजो जखन ।
शुम्भ और निशुम्भ दून्, भेल क्रोधातुर तखन ॥ ५

बहुत सेना के निहत सुनि, सामर्ष सेना ल' बहुत ।
चलल शुम्भो समर करबा, लेल दौड़ल शस्त्रयुत ॥ ६

आगु पाछू छल महासुर, शुम्भ के सङ संगठित ।
चण्डिका के पास पहुँचल, असुर सेना संगठित ॥७

अपन दल बल संग शुम्भो, पहुँचि देवी पास मे ।
चण्डिका के संग भारी, युद्ध पसरल शुम्भ कैं ।
वाण वर्षा मेघ जल सन, भेल शुम्भ निशुम्भ कैं ॥ ८-९

शुम्भ के शर काटि देवी, शुम्भ दूनू भाइ पर ।
फेकि कतिपय शस्त्र देवी, शुम्भ के कैलनि शिहर ॥ १०

एहि बीचे मे निशुम्भो, ढाल ओ तरुआरि लै ।
सिंह के शिर पर चलौलक, जोर सँ ओ सम्हारि कै ॥ ११

अपन वाहन के प्रतारित, देखि देवी खड्ग सँ ।
निशुम्भ के ओ ढाल सहिते, खड्ग कटलनि खड्ग सँ ॥ १२

गेल काटल ढाल असि त' शक्ति फेकलक ओ असुर ।
शक्तिओ के काटि फेकलनि, चण्डिका जी बहुत दुर । १३

भ'क' क्रोधातुर निशुम्भो, शूल फेकलक झटकार सँ ।
शूल सेहो चूर्ण भेला, मुष्टिकाक प्रहार सँ ॥ १४

लै गदा के सेहो फेकलक चण्डिका पर ओ असुर ।
चण्डिकाक त्रिशूल सँ ओ, भस्म भेला चूर-चूर ॥ १५

दैत्यराज निशुम्भ दौरल, परशु ल' क' ओ जखन ।
चण्डिका के वाण सँ हत, भ' गिरल पापी तखन ॥ १६

निशुम्भ मूर्च्छित भेल अछि सुनि, भाय ओकर कोप सँ ।
चण्डिका के मारबा ले बढ़ल वर आटोप सँ ॥ १७

रथक ऊपर छल ओ तैओ, अपन आठो हाथ में ।
शस्त्र लेने छल बहुतो, व्याप्त भै नभ साथ में ॥ १८

देखि अबइत शुम्भ के श्री चण्डिका शंखक ध्वनी।
धनुष के टंकार कैलनि, शब्द दुस्सह रनरनी॥ १९

पूर्ण कैलनि सव दिशा के, अपन घण्टा नाद सँ।
कैल सूचित सब असुर कें, मरण के सम्वाद सँ॥ २०

सिंह सेहो अपन गर्जन, सँ गजक मद हरि रहे।
निज दहारक शोर सँ ओ, गगन दश दिश भरि रहे। २१

तखन काली उछलि नभ मे, मारि पंजा भूमि पर।
गर्जली जहि गर्जना सँ, दबल सव रव आशुतर।। २२

कैल शिवदूती अशुभ सन, अट्टहास आकाश मे।
ताहि सँ सब असुर डरला शुम्भ सेहो त्रास मे॥ २३

ठहर तो किछु समय तावत, रे दुरात्मा मगन सँ।
ताहि समय मे जयध्वनि, देव कैलनि गगन सँ। २४

शुम्भ छोरने छल ज्वलित जे, शक्ति देवी के उपर।
ताहि के उल्काग्निद्वारा, कै देलनि तितरे वितर॥ २५

शुम्भ के रण गर्जना सँ, लोक तीनू भरल छल।
किन्तु देवी के धनुष रव, अन्दरे ओ दबल छल॥ २६

शुम्भ छोरल शरके देवी, शुम्भ देवी के छोरल।
एक दोसर के कटै छल, मुख ने ककरो छल मोरल॥ २७

तखन क्रुद्धा भ' क' देवी, शूल फेकलनि जोर सँ।
चोट खा क' शुम्भ खसला, भूमि पर भरि नोर सँ ॥ २८

ताहि बीचे मे निशुम्भो चेतना मे भेल छल।
धनुष लैक रण मे पहुँचल, क्रोधान्ध ओ अति भेल छल ॥ २९

सिंह देवी दूनू ऊपर, वाण फेकने जाइ छल।
कहर कैने रहय ओ, देवीके ने सोहाइ छल। ३०

दानवेश्वर ओ अपन भुज, दश हजारो क' लेलक।
अयुत कर सँ चक्रशर फेकि, ढांकि देवीके देलक ॥ ३१

तखन दुर्गा भगवती ओ, अपन खरतर शर चला।
शत्रुके शर चक्र काटल, क' क' नूतन रण कला ॥ ३२

दैत्य सेना सँ सुसज्जित, भै निशुम्भो लै गदा।
चण्डिका सँ लरय लागल, जोर कयने सर्वदा ॥ ३३

अपन दिश अवइत गदा के, अति तेज खड्ग प्रहार सँ।
काटि देलनि चण्डिका त' ओ शूल लेलक प्यार सँ ॥ ३४

शूल लैक देखि अवइत, ओहि असुर निशुम्भ के।
चण्डिका झट निज त्रिशूले, फेकि मारल निशुम्भ के ॥ ३५

शूल सँ आहत हृदय के, खून सँ दोसर पुरुष।
भेल बाहर कहि रहल छल, ठहर देवी ओ पुरुष ॥ ३६

प्रकट होइतहि ओहि पुरुष के, हँसि क'देवी झटपटे।
खङ्ग लै शिर काटि देलनि, खसल भूपर छुटपटे। ३७

प्राणान्त भेलनि झट निशुम्भक, असुर गण हाहा रहे।
सिंह चखि चखि खाथि मुर्दा, भेल निशुम्भक माथ के।
कालिका शिवदूति खैलनि धरक मांस ओ हाथ के॥ ३८

दोहा

कौमारी के शक्ति सँ मरि क" महासुर ढेर।
ब्रह्माणिक जल सिंचिते, प्राण गेल कत केर। ३९

माहेश्वरी त्रिशूल सँ, छिन्नभिन्न कत भेल।
वाराही के थुथुन सँ, चूर्ण चूर्ण कत भेल॥ ४०

भारती

वैष्णवी के तेज चक्रे सँ कते खण्डित भेला।
ऐन्द्रीक बज्रे सँ कतेको, असुर अरि मारल गेला। ४१

देखि भीषणता समर के, प्राणान्त कैलक कत असुर।
भेल भक्षित कालिका सँ, मृगराज दूती सँ असुर॥ ४२

दोहा

शिवदूती काली तथा, सिंह कते के मारि।
खैलनि रण के अन्त मे, भेल असुर के हारि॥ ४३

इतिश्री मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी माहात्म्य स्वरुप मैथिली दुर्गा-सप्तशती में निशुम्भ वधः।

अथ दशम अध्याय

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

प्राणसन सोदर निशुम्भक, मरण सुनि ओ जानिक' ।
बूझि असुर क मरण बहुतो शुम्भ बाजल तानि क' ॥ २

हे दुष्ट दुर्गे गर्व नहि कर, आनके बल पाविक' ।
युद्धमे तो लरि रहल छे, निजबाहुवलके हँसाबि क' ॥ ३

देव्युवाच ॥ ४ ॥

जगत मे हम एक मात्रे छी, न दोसर के ओ अछि ।
देख तों सबशक्ति देवी, घुसि रहल हमरे मे छथि ॥ ५

तखन ब्रह्माणी सहित सब, शक्ति दुर्गा देह मे ।
घुसिं गेली ओ एक बचली, क्यो ने अछि सन्देह मे ॥ ६

देव्युवाच ॥ ७ ॥

भिन्न-भिन्न विभूति सँ हम, रूप कै भिन्ने तरह ।
आब हम छी एक रूपा, युद्ध मे तो स्थिर रह ॥ ८

ऋषिरुवाच ॥ ९ ॥

तखन देवी संग शुम्भक, युद्ध भारी भै चलल ।
देवता ओ दानवकगण, युद्ध देखइत सब रहल । १०

वाण वर्षा सँ तथा अति, तेजशस्त्र प्रहार सँ ।
युद्धभारी अतिभयंकर, संगठित हथियार सँ ॥ ११

सैकरों दिव्यास्त्र देविक, शुम्भ कटने जाइ छल ।
शुम्भ के शरशस्त्र देवी सँ विफल भै जाइ छल ॥ १२-१३

सैकरों शर फेंकि देवी, के असुर ढकि देलत' ।
तखन शुम्भक धनुष देवीक, शरसँ काटल गेल त' ॥ १४

धनुष के कटिते असुरपति, शक्ति लेलक हाथ मे ।
शक्तिओ के काटि देलनि, चक्र लै निज हाथ मे ॥ १५

तखन ओ दैत्येन्द्र दौरल, खड्ग लैक जोर सँ ।
आक्रमण देवीक ऊपर, कै देलक वर जोर सँ ॥ १६

आक्रमण करईत शुम्भक, खड्ग कटलनि चण्डिका ।
मारि शुभ्भक अश्व के ओ, ढाल कटलनि चण्डिका ॥ १७

मरल घोरा कटल धनुषो, भै विगतरथ शुम्भ ओ ।
देवी के मारय हेतु लेलक, मोट मुग्दर शुम्भ ओ ॥ १८

चललं मुग्दर कटल सेहो, देवीक शर ओ तेग सँ ।
तैओ दानव ओ बढ़ौलक, अपन मुक्के वेग सँ ॥ १९

धैक मुक्का ओ लगौलक, श्री चण्डिका के हृदय मे ।
ध' चपेटा देविओ झट, ओकरो देलनि हृदय मे ॥ २०

लगिते देवी के चपेटा, शुम्भ खसला भूमि पर ।
किन्तु शीघ्रे असुरपति ओ, ठाढ़ भ' गेल भूमि पर ॥ २१

कूदि झट ओ शुम्भ देवी के पकरि आकाश मे ।
रहय ताहू ठाम देवी, लरथि बलविश्वास मे ॥ २२

गगन मे ओ शुम्भ देवी, लरथि हाथा पाइ कै ।
सिद्ध मुनिजन सव के विस्मय, भेल देखि लराइ के ॥ २३

तखन बाहू युद्ध करइत, शुम्भ के ओ पकरि क' ।
किछु घुमाक भूमि पर झट, पटकि देलनि रगरि क' ॥ २४

भूमि पर पटकल असुर ओ, मुक्का उठा दौड़ल तखन ।
चण्डिका के मारबाले, भेल उद्यत ओ तखन ॥ २५

देखि अबइत दैत्यपति के, चण्डिका निज शूल सँ ।
शुम्भ के छातीक ऊपर, मारलनि समतूल सँ ॥ २६

देवीक शूल प्रहार सँ ओ, शुम्भ मरला छटपटा ।
भेल कम्पित उदधि पर्वत भुवन भरि में अटपटा ॥ २७

ओ दुरात्मा मरल तैखन, गगन निर्मल सन बनल ।
भरि भुवन आनन्द पसरल, चारू दिश रमने चमन ॥ २८

उत्पात मेघक हटल उल्का पतन सवटा शान्त सन ।
चलल नदिओ छल छलाक, मरल शुम्भासुर जखन ॥ २९

देवगण अति हर्ष निर्भय, भ' क' घूमथि फिरथि सव ।
गन्धर्व सुन्दर गान गावथि, वढ़य लागल सर विभव ॥३०

अप्सरा सब नाचि रहली, वाद्य बाजय नीक सँ ।
वायु सुन्दर वहय लागल, सूर्य उगला पूर्व सँ ॥३१

अग्नि तीनू शान्त भेला, शान्त कोलाहल सबहि ।
सव दिशा में सुख समुन्नति वस्तु सब किछु नव नवहि ॥ ३२

शुम्भासुरके विकट बध, श्री सुरेश कवि गावि ।
देलनि सुनि से मुदित बनु, श्री दुर्गा गोहरावि ॥ ३३ ।

इतिश्री मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी माहात्म्य स्वरुप मैथिली
दुर्गा-सप्तशती में शुम्भ वधः ।

अथ एगारहम अध्याय

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

देवी सँ हत भेल शुम्भ तखने, श्री शक्रब्रह्मादि के,
आगाँ क' क' समस्त देव चलला, कात्यायनी पास मे ।
सर्वाभीष्टक लाभ पाबि सुर ओ आनन्द में मग्न भ',
देवी के स्तुति कैल पूर्ण तरहे, श्रद्धा तथा भक्ति सँ ॥ २

देवा ऊचुः ॥ ३ ॥

हे देवि सर्वार्त्तिहरे प्रसन्ना,
माता जकाँ लोकक पालिनी छी
विश्वेश्वरी होउ अहाँ प्रसन्ना,
छी ईश्वरी सर्व चराचरो के ॥ ४

आधारभूता जग के अहाँ छी,
पृथ्वीस्वरूपा वनि सर्वकाले ।
ज़ल स्वरूपा भ' एक आहाँ,
तृष्णा हरी प्राणिक रक्षिका भ' ॥ ५

हे वैष्णवी शक्ति अनन्त वीर्ये,
संसार के बीज अहाँ छी माता।
हे देवि अहाँ सब लोक मोही,
मुक्तिप्रदा होउ सदा प्रसन्ना ॥ ६

विद्या अहीं सर्व प्रकार के छी,
कलावती स्त्री जग में समस्ता।
हे अम्बिके ई जगती अहीं सँ,
पूर्णा रहे की स्तुति और वाजू ॥ ७

गीति

सर्वभूता छी जगत में स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी।
की करू परमोक्ति स्तुति मे, देवि हे सुखदायिनी ॥ ८

सर्व प्राणी के हृदय मे, वुद्धि रूपे स्तवन हो।
स्वर्ग मोक्षक जे प्रदात्री, नारायणी के नमन हो ॥ ९

काष्ठा कला ओ घटिक स्वरूपे,
नामी अहाँ काल अरूपिओ के।
संसार के नाशिनि सर्वशक्ते,
नारायणीक पद मे नमस्ते ॥ १० इन्द्र वज्रा

माङ्गल्य आहाँ शुभ मङ्गला छी,
सर्वार्थके सिद्धि करी अहीं छी ।
छी त्र्यम्बिका पीड़ित के शरण्या,
नारायणीक पद मे प्रणाम ॥ ११

सृष्टि स्थिती नाशन शक्तिबाली,
सनातनी सर्वगुणाश्रया छी ।
गुणस्वरूपा गुणकारिणी ओ,
नारायणीक पद मे प्रणाम ॥ १२

रक्षा करी दीनक भै शरण्या,
पीरा हरै छी सव ठाम जा क' ।
हे देवि तुभ्यं सततं नमस्ते,
नारायणीक पद मे प्रणाम ॥ १३

विमान हंसे पर संस्थिता छी,
कुशाम्भ सँ सिञ्चन कारिणी भै ।
ब्रह्माणि के बह्मक शक्ति अहाँ
नारायणीक पद मे प्रणाम । १४

शशी अहीं चन्द्रक धारिणी छी,
महावृषस्था भअ शोभिता छी ।
माहेश्वरी छी अहाँ सर्व रूपा,
नारायणीक पदमे प्रणाम ॥ १५

मयूर ओ कुक्कुटबाहिनी छी,
शुद्धा महाशक्तिधरा अहाँ छी।
कौमारिका भिन्न विभिन्न रूपा,
नारायणीक पद मे प्रणाम।। १६

शंखादि चारू हरि चिह्नवाली,
अहाँ कहाबी शुभ वैष्णवी जी।
प्रसन्नता हो स्तुति सूनि देवी,
नारायणीक पद में प्रणाम॥ १७

गृहीत चक्रे पृथ्वी उठौने,
छी दाँत के ऊपर राखि लेने।
शिवे आहाँ शूकर रूप वाली,
नारायणीक पद मे प्रणाम। १८

नृसिंहरूपा भ' दैत्य मारी,
त्रैलोक्य के त्राणकरी अहाँ छी,
माता अहाँ छी सुखशान्ति वाली,
नारायणीक पद मे प्रणाम। १९

किरीटिनी बज्रधरा अहाँ छी,
सहस्रनेत्र अति उज्जवला छी।
ऐन्द्री अहाँ बृत्रक नाशिनी छी,
नारायणीक पद मे प्रणाम॥ २०

शिवा अहाँ छी शिव दूति अहाँ,
संसार के दानव मारि देलौं ।
हे घोर रूपे रविकारिणी छी,
नारायणीक पद में प्रणाम ॥ २१

कराल दंष्ट्रावदना अहाँ छी,
छी मुण्डमाला रखने गरा मे ।
हे चण्डमुण्डासुर नाशकर्त्री,
नारायणीक पद मे प्रणाम ॥ २२

अनुष्टुप्

लक्ष्मी लज्जा महाविद्या, श्रद्धा पुष्टि स्वधा ध्रुवा ।
महारात्री अहीं देवि, नारायणि नमोनम : ॥ २३

मेधा अहाँ बाभ्रवि भूति ईशा,
सरस्वती छी नियता वरा छी ।
छी तामसी सर्व सुरूपबाली,
नारायणीक पद मे प्रणाम ॥ २४

दुर्गे अहाँ सर्वस्वरूपबाली,
छी स्वामिनी शक्ति समन्विता भै ।
रक्षा करू भीति हटाय अहाँ
हे देवि तुभ्यं सततं नमस्ते ॥ २५

गीति

लोचनत्रय शोभिताङ्गी सौम्य सुन्दर वदन अछि।
करू अहाँ भय सँ सुरक्षा, कात्यायनी नमन अछि ॥ २६

प्रज्वलित अति उग्र शूल ई -हाथ मे अहाँ धरू।
हे भद्रकाली नमन हम, करइत छी रक्षा, करू ॥ २७

जाहि घण्टा के बजाक, तेज दैत्यक हरइ छी।
ताहि सँ सभ पाप हरि लिअ', हम नमनशत करइ छी ॥ २८

असुर शोणित पांक लागल, खड्ग जे अछि हाथ मे।
से हमर सुख कारके हो, प्रणत हम छी साथ मे ॥ २९

तुष्टा हरै छी सव रोग अहाँ
रुष्टा हरी मानव कामना के।
स्वभक्त के सर्व विपत् हरै छी,
देवी अहाँ आश्रयदायिनी छी ॥ ३०

महा महा दानव नाश जे ई,
कैलौं अहाँ रूप अनेक ध' क'।
एना कहू के क' लेत आन
हे देवि आहाँ सब शक्तिवाली ॥ ३१

विद्या शुभा शास्त्र विवेकवाली,
आहाँ तुल्या ककरो न देखी।
ममत्व के खाधिक मध्य राखी,
संसार के देवि अहाँ नचाबी॥ ३२

रक्षा करी दानव यक्ष नाग,
पिशाच शत्रूगण मण्डली सँ।
दावाग्नि मे घोर समुद्र मे जा,
संसार के पालन मे रहै छी॥ ३३

विश्वेश्वरी पालन विश्व के क',
विश्वात्मिका भ' धरणी धरै छी।
वन्द्या अहाँ विश्वक छी न निन्द्या,
विश्वाश्रयी भक्त अहाँक होथि॥ ३४

देवी करू पालन शत्रु भय सँ,
जेना अहाँ दैत्यक नाश कैलौं।
संसार के पाप समाप्ति क' क',
उत्पात के नाश करू नमस्ते॥
द्रुत विलंबित
प्रणत भक्तक ऊपर देवि हे,
बनि प्रसन्न अहाँ हरू दुःख के।
सकल लोकक पूज्यतमा थिकौं,
सभक लेल अहाँ वरदा बनू'॥ ३५

देव्युवाच । ३६

हे देवतागण माङु मनमे, जे रुचै अछि देब से ।
जगत उपकारक वस्तु की मङइ छी, वर सुन्दर देवसे ॥ ३७

देवा ऊचु : ॥ ३८

सर्ववाधा के शमन हो, त्रैलोक्य मे सब तरह सँ ।
एहिना करू हमर सभके, शत्रुनाशन सब तरह ॥ ३९

देव्युवाच ॥ ४०

वैवस्वतक मनुकेर अन्तर, युग अठाइस मे हयत ।
ताहि मे ओ जनमि शुम्भासुर निशुम्भासुर रहत ॥ ४१

नन्दके घर श्री यशोदा, गर्भ सँ हम जन्मव जखन ।
रहब विन्ध्याचलक ऊपर, शुभ्भादिके मारब तखन ॥ ४२

पुनः अतिरौद्रा स्वरूपा, अवतीर्ण जगमे हैव हम ।
वैप्रचित दानवो के, वध अवश्ये करब हम ॥ ४३

वैप्रचित्तादिका महासुर, के रुधिर माँसादि खा ।
हैत दाड़िम सन दशन सब, लाल लाले माँस खा ॥ ४४

स्वर्ग लोकक देवता सब, मानवो भरि भुवन के।
रक्तदन्ता कहिक हमरा, पूजि करता नमन के॥ ४५

पुनः जग मे भरि शताब्दी, रौदीक सन जग के सजा।
जखन मुनिजन सँ स्मृता भ', प्रकट हैव अयोनिजा॥ ४६

हम तखन सौ नेत्र क' क' , मुनिजनक दर्शन करब।
सकल मानव कहि शताक्षी, हमर पूजा स्तुति करब॥ ४७

जखन हम भूखल भुवन के, देखि अपना देह सँ।
साग पाते के निकालब, भरब सबके स्नेह सँ॥ ४८

साग सँ पालब जगत के तैं सब कहत शाकम्भरी।
दुर्ग नामक दनुज के हम, बध करव शाकम्भरी॥ ४९

तखन दुर्गा नाम सँ हम, विख्यात होयब जगत मे।
वाद मे हम भीमरूपा, हैव हिमगिरि गहन मे॥ ५०

मुनिक रक्षा हेतु बहुतो, असुरगण के वध करब।
तखन मुनिजन पूजि हमरा, नाम दोसर नव धरव॥ ५१

होएव भीमा देविनवका, नामसँ विख्यात हम।
एहिना नव नव बहूतो नाम सँ प्रख्यात हम॥ ५२

अरुण नामक दैत्य जैखन, त्रैलोक्यमे वाधा करत।

अनगिनित हम हैव षट्पद, रूप सँ जग मे तुरत ॥ ५३

तीनु लोकक हित करब हम, अरुण के झट मारिक'।
भ्रामरी नव नाम लैक, सभ स्तुति करत हाथ पसारि क' ॥ ५४

एहि तरहे जखन जखने, वढ़त बाधा दानवक।
ताहि समये मे सुरक्षा करब हम सन्तान तक ॥ ५५

करु दुर्गा गुणगान संकट सब हटवे करत।
बढ़त लोक मे मान, शक्ति हैत पेटो भरत ॥ ५६

इतिश्री मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत सावर्णिक मन्वन्तर मे
दुर्गा-सप्तशती में देवी स्तुति।

अथ द्वादशोऽध्याय

देव्युवाच ॥ १ ॥

एहि स्तोत्रक पाठ करइत, जे हमर पूजा करत ।
तकर हम सब विघ्न वाधा, हरब निश्चित अनवरत ॥ २

दुष्ट मधु कैटभक वध सँ, और महिषासुर निधन ।
शुम्भ और निशुम्भके वध, सूनि हर्षित होय मन ॥ ३

अष्टमी नवमी चतुर्दशि, तिथि मे भ' एकाग्रमन ।
जे सुनथि दुर्गा चरित के सभक्ति भ' क' पवित्रतन ॥ ४

ताहि जनके पाप सबटा, नाश आपत्तिक तथा ।
पूर्ण होइछ कामना सब, दारिद्र्य नहि हो सर्वथा ॥ ५

शत्रुगण सँ भय न हुनका, चोर वा नृपदण्ड सँ ।
शस्त्र सँ वा अनलजलसँ, भय न कोनो चण्ड सँ ॥ ६

तें हमर माहात्म्य के करू, पाठ नियमित रूप सँ ।
सुनक चाही भक्ति पूर्वक, बूझि मङ्गल रूप सँ ॥ ७

जे महामारी उपद्रव, उत्पात तीनू तरह के ।
माहात्म्य सुनने दूर होइछ, पाप सब दूरे रहे ॥ ८

जाहि घरमे पाठ दुर्गा के चलै नित नियम सँ।
ताहि घरमे हम रहै छी, निश्चिते नित नियम सँ। ९

बलि प्रदानक समय मे ओ, होमादि उत्सव समय मे।
सम्पूर्ण दुर्गा पढ़क चाही, सुनक चाही शुभ समय मे॥ १०

जानि वा अनजानि जे क्यो- वलि चढ़ाबथि होम वा।
सप्रीति ग्रहण करैत छी सब, त्रुटि न बूझी खोम वा॥ ११

जे महापूजा शरद मे, करथि सब कियो वार्षिकी।
ताहि मे माहात्म्य सूनी, होय सुखदा हार्षिकी॥ १२

सर्व बाधा सँ हटय ओ, धान्य-धन घर मे बढ़े।
दुर्गा श्रवण पाठन बले सँ, मानवक उन्नति बढ़े॥ १३

देवीक सुनि उत्पत्ति वार्ता, माहात्म्य सुन्दर जे पढ़े।
युद्धमे तिनका पराक्रम संग निर्भयता बढ़े॥ १४

शत्रु के हो नाश हुनका, कल्याण धन बढ़ि जाइ अछि।
हर्षिते रह कुलक सब जन, माहात्म्य के ई वड़ाइ अछि॥ १५

शान्ति कर्मक समय मे वा, दुःस्वप्न देखक़ समय मे।
सुनक चाही चरित सबटा, ग्रहक पीरा समय मे॥ १६

ग्रहक पीड़ा सब हटै अछि, सब उपद्रव शान्त हो।
दुःस्वप्न सेहो शुभक सूचक, माहाम्य सँ सब शान्त हो॥ १७

बाल शिशु के जन्म कालिक, ग्रह उपद्रव दूर हो ।
शत्रु ओ बनि जाय मित्रे सभ मनोरथ पूर हो ॥ १८

दुर्वृत्त दुष्टक बल हटै अछि, दुर्गा चरित के सुनब सँ ।
भूत-प्रेत-पिशाच के दुख, दर्द नाश हो सुनब सँ ॥ १९

सबटा ई माहात्म्य होइ अछि, हमर सन्निधि कारके ।
पशुक बलि पुष्पार्ध्य चन्दन, धूपादि सब उपकारके ॥ २०

विप्र भोजन होम प्रोक्षण, भोगराग प्रदान सँ ।
राति दिन जे तन मनो सँ, करय पूजा ध्यान सँ ॥
वर्ष भरि जे नित नवोत्तम, भक्ति स्तुति समान सँ ।
करथि से रह सुखित सब दिन, सुनु अहाँ सब ध्यान सँ ॥ २१

एक वेरे चरित के पढ़ला सँ वा सुनला सँ हो ।
प्रीति हमरा ओहि जन पर, माहात्म्य के सुनला सँ हो ॥
दुर्गाचरित सुनला सँ पापक नाश हो, आरोग्य हो ।
बन्धु-बान्धव संग सब दिन, सब तरह सुख भोग्य हो ॥ २२

भूत सँ रक्षा करै अछि, जन्म संकीर्तन हमर ।
दुष्ट दानव पर विजय हो, चरित सुनला सँ हमर ॥ २३

दुर्गाचरित सुनला सँ वैरिक, भय न कोनो काल मे ।
अहाँ सभक ब्रह्मर्षिके ई स्तुति शुभद सब काल मे ॥ २४

ब्रह्माक स्तुति शुभ बुद्धि दै अछि, सुनल कोनो ठाम मे ।
देव ब्रह्मादिक स्तवन पढ़ि रहय सब आराम मे ॥ २५

मार्ग जंगल पाँतरक बिच, दावाग्नि सँ घेरल रही
चोर वा अरि सिंह चित्ता, भालु सँ खेहरल रही ॥ २६

कुद्ध भूपक आज्ञा सँ बध्य बान्हल जाइ त'।
चक्रवायू मे परी वा उदधिमे फँसि जाइ त' ॥ २७

संग्राम दारुण में परी वा कठिन वाधा में परी।
दर्द देहक वेदनादिक, संकटक कोनो घरी ॥ २८

स्मरण कैने हमर चरितक, दूर संकट होइ अछि।
सार्दूल सिंहो चोर वैरी, फेरिक मुँह जाइ अछि ॥ २९

जे स्मरण कै रहथि चरितक, माहात्म्य सूनथि वा पढ़थि।
हुनक संकट दूर भागे, सन्मार्ग मे जन ओ बढ़थि ॥ ३०

ऋषिरुवाच ॥ ३१ ॥

एहि तरहे कहि क' बहुतो, चरित के फल चण्डिका।
वीर विक्रमशक्तिवाली, भगवती जगमण्डिका ॥ ३२

देखिते देखैत सुर के, भेलि अन्तर्धान ओ।
अम्बिका वर दैक सुर के, कैल बहुविध मान ओ ॥
आतङ्क सबठाँ हटल सुरके, पाबि पंद अधिकार के।
सानन्द सवठाँ घुमथि फीरथि, अपन सीमा पार के ॥
जगत भरि के यज्ञ मे जा, पहुँचि निज निज भाग के।
लेथि सुर सानन्द सब ठाँ क' कृपा अनुराग के ॥ ३३

युद्धमे देवीक द्वारा, गेल मारल शुम्भ ओ ।
अतुल विक्रम जगतनाशक, मरल असुर निशुम्भ ओ ॥ ३४

दैत्य जे छल वचल खूचल, सब परा पाताल मे ।
जा क' बैसला रहय लगला, चैन सँ पाताल मे ॥ ३५

हे सुरथ देवी ओ नित्या, छथि सदा संसार मे ।
तदपि जन्मथि करथि पालन, रहिक जग उपकार मे ॥ ३६

देविये सँ विश्वमोहित, होय विश्वो के करथि ॥
भ' प्रसन्ना भक्त के ओ, ज्ञान द' विद्वानो करथि ॥
याचना कैने ओ देवी, ऋद्धि सिद्धि सँ घर भरथि ॥ ३७

ओ महाकाली स्वरूपा, छथि महामारीक घर ।
हे सुरथ राजन् सुनू ई, ब्रह्माण्ड हुनके सँ भरल ॥ ३८

देविये ओ प्रलयकर्त्री, सृष्टिकर्त्री होइ छथि ।
स्थिति बनाक सकल प्राणिक, पालनो क' रहल छथि ॥ ३९

पूजिता ओ स्नान चन्दन, फूल फलसँ होइ छथि ।
द' क' सोन धन धान्य शुभ मति-सभक मनमे सोहाइ छथि ॥ ४०

इति श्रीमार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी माहात्म्य मैथिली
दुर्गा सप्तशतीमे फलस्तुति ।

अथ त्रयोदशोऽध्याय :

ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

हे भूप दुर्गा के चरित ई, माहात्म्य सुन्दर से कहल
अति प्रभावें देवियें छथि, भुवन धारण क' रहल ॥ २

विष्णु माया रूप देवी, देथि विद्या बुद्धि धन ।
वैश्य ओ अँहाँ के मोहने छथि, तथा आनोक मन ॥ ३

हुनके सँ मोहित हो विवेकी, हे भूप तीनू काल मे ।
जाउ ओहि देवी शरण मे, हैब मालोमाल मे ॥ ४

पूजिता भ' यदि प्रसन्ना, होथि त' सुख सम्पदा ।
देथि स्वर्गो मोक्ष सेहो, परमेश्वरी ओ सर्वदा ॥ ५

मार्कण्डेय उवाच ॥ ६ ॥

मुनि सुमेधा के वचन सुनि, सुरथ नृप अति प्रीतिरत ।
ऋषि सुमेधा के प्रणति कै, ठाढ़ रहला भक्तियुत ॥ ७

खिन्न मन ममता सँ भेला, निज राज्य के गेला सँ ओ ।
शोचिते किछु समय रहला, विपति के भेला सँ ओ ॥ ८

शीघ्र चलला तप करै ओ, नृपति वैश्यक साथ मे ।
अम्बिका के दर्शनार्थी, वन मे गेला साथ ओ ॥
एक कोनो नदिक तट पर, आसन लगौलनि स्नान क' ।
सुरथ राजा वैश्य सेहो, बैंसला शुभ ध्यान कै ॥ ९

नृपति के सङ वैश्य सेहो, जपथि देवीसूक्त के ।
तप करथि जप यज्ञ रूपे, सोचि युक्तायुक्त के ॥
तखन ओ दुनु तटक ऊपर, पाँक माटि मङाय क' ।
मूर्ति देवी के बनौलनि, विविध रंग सजाय क' ॥ १०.

ताहि मूर्तिक करथि पूजा, स्नान चन्दन फूल सँ ।
धूपदीप ओ होम तर्पण, वस्तु ल' अनुकूल सँ ॥
रहि निराहारे कते दिन, बाद फल आहार क' ।
मन लगौने रहथि देवी, पर बहुत उपचार क' ॥ ११

अपन देहक मांस शोणित, के देलनि बलि ओ दुनू ।
एहि तरहें तीन वर्षक तप कयल जप ओ दुनू ॥ १२

जगत धारण करयबाली, देवी प्रसन्नानन जखन ।
चण्डिका प्रत्यक्ष भ' क', बाजि उठली वर वचन.। १३

देव्युवाच ॥ १४ ॥

हे भूप माङू वर प्रसन्ना, भेल छी अहाँ उपर ।
हे वैश्य अहुँ वर माङि लीअ, छी प्रसन्ना अहूँ उपर ॥ १५

मार्कण्डेय उवाच ॥ १६ ॥

तखन बजला सुरथ राजा, हमर पुरना राज्य दिअ।
जन्म जन्मान्तरमे स्थिर हो, निष्कण्टको शासन दिअ' ॥ १७

वैश्य सेहो ज्ञान मङलनि, जाहि सँ सन्तुष्ट भ'।
रहब सब दिन मोह निर्गत, हैत मति गति पुष्ट भ' ॥
हमर ई अछि हम हुनक छी, मायाक फेरी सँ हटी।
सैह शुभ वरदान चाही, हटय माया ई नटी ॥ १८

देव्युवाच ॥ १९ ॥

हे नृपति किछुअे दिने मे, अपन राज्य के पाबि क'।
शत्रु सब के मारि आहाँ रहब सवके सोहाविक' ॥ २० - २१

राज्य बहुतो वर्ष क'क', मरव अन्त मे जँ अहाँ।
हे सुरथ, जानू विवस्वत्, वंश मे जन्मब अहाँ। २२

श्री विवस्वत् के सवर्णा पत्नीक शुभ आगार मे।
जनमि सुत सावर्णिनामक, हैब मनु संसार मे ॥ २३

हे वैश्य अहुँ वर सूनि लीअ', जे अहाँक अभीष्ट अछि।
ज्ञान पायव सैह अहाँ, वर महा ई क्लिष्ट अछि ॥ २४-२५

मार्कण्डेय उवाच ॥ २६ ॥

एहि तरहे द' क' देवी, सुरथ के वर मनचहा ।
वैश्य के वर ज्ञान देलनि, दुनूक वर सुन्दर महा ॥ २७

चण्डिका अन्तर्हिंता ओ, शीघ्र दूनुक सामने ।
भैक अपना स्थान गेली, ओ छटा कहिते बने ॥ २८

क्षत्रियक शिररत्न राजा, सुरथ पौता सुसमय जखन ।
सूर्य सँ ओ जन्म लैक, सावर्णि मनु हैता तखन ॥ २९

सावर्णि मनु हैता तखन ॥

श्री सुरेश कवि कैल ई, मैथिलीक अनुवाद ।
पढ़ि पौता सज्ञान जन, देवी भक्ति प्रसाद ॥

इति श्री मार्कण्डेय पुराणान्तर्गत देवी माहात्म्य स्वरूप-
राजा तथा समाधि वैश्यक वर प्रदान नामक प्रकरण ॥
त्रयोदश अध्याय ॥

अथ देवीसूक्तम

अहं रुद्रेभिरित्यस्य वागाम्भृणी ऋषिस्त्रिष्टुप्
छन्दोवाग्देवता देवी सूक्तजपे विनियोग : ।
ॐ रूद्रेभिर्व्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवै:
अहं मित्रावरुणो भाविभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमश्विनो भा ॥ १

अहं सोम माहनसम्बिभर्म्यहन्त्वष्टारमुत पूषणम्भगम्
अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥ २

अहं राष्ट्री संगमनी वसूनाञ्चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्
तान्माम् देवा ब्यदधु : पुरुत्रा भूरिस्थात्राम्भूर्या वेशयन्तीम् ॥ ३

मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति य: प्राणिति य ईं शृणोत्युक्तम् ।
अमन्तवो मान्त उपक्षियन्ति श्रुधिश्रुत श्रद्धिवन्ते वदामि ॥ ४

अहमेव स्वयमिदव्वँदामि-जुष्टन्देवेभिरुतमानुषेभि: यं कामये तन्तमुग्रं
कृणोमि तम्ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥ ५

अहं रुद्राय धनुरातनोमि ब्रह्मद्विषे शरवे हन्तवाउ । अहञ्जनाय
समदं कृणोम्यहम् द्यावा पृथिवी आविवेश ॥ ६

अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वन्त : समुद्रे ।
ततो वितिष्ठे भुवनानि विश्वोता मृन्धांवाणोपस्पृशामि ॥ ७

अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानिविश्वा । परो दिवा पर एना पृथिव्यै तावती महाना सम्बभूव ॥ ८

इति ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम् ।

॥ अथ नवार्ण विधि ॥

अस्य श्री देवी नवार्ण्णमन्त्रस्य ब्रह्मविष्णु महेश्वरा ऋषयः गायत्र्युष्णिभश्छन्दाँसि श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, ऐँ बीजम् ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलम्, श्रीं महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोग : ॥

अथ ऋष्यादिन्यासः ।

ब्रह्म विष्णु महेश्वर ऋषिभ्यो नमः, शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप् छन्दोभ्यो नमः, मुखे । महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमः, हृदि । ऐँ बीजाय नमः, गुह्ये । ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ ॥

अथ करन्यासः ।

ॐ ऐँ अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः । ओम् ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा । ओम् क्लीं मध्यामाभ्यांवषट् । ओम् चामुण्डायै अनामिकाभ्यां हुँ । ओम् विच्चे कनिष्ठकाभ्यां वौषट् । ओम् ऐँ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे करतल करपृष्ठाभ्यां नमः । एवं हृदयादि न्यासः । ततोऽक्षरन्यासः । ओम् ऐँ नमः शिखायाम् । ओमह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे । ओम् ल्कीं नमः वाम नेत्रे । ओम् चाँ नमः दक्षिण कर्णे । ओम् मुँ नमः वामकर्णे । ओँ डाँ नमः दक्षिण नासायाम् । ओँ नमः वाम नासायाम् । ओँ विँ नमः, मुखे । ओँ च्चैँ नमः गुह्ये । एवं विन्यस्याष्टवारं मूलेन - अर्थात् सम्पूर्णनबार्णमन्त्रेण व्यापकं कुर्यात् समस्ताङ्गं, स्पृशेदितिभावः ।

ओं ऐं प्राच्यै नमः । ओं ऐं आग्नेय्यै नमः । ओं ह्रीं दक्षिणायै नमः ओं ह्रीं नैर्ऋत्यै नमः । ओं क्लीं प्रतीच्यै नमः । ओं क्लीं वायव्यै नमः । ओं चामुण्डायै उदीच्यै नमः । ओं विच्चे ईशान्यै नमः । ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः । ओं ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः ॥

अथ ध्यानम्

खड्गचक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलम्भुशुण्डीं शिरः ।
शङ्खं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषाऽऽवृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकाँ सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुम्मधुङ्कैटभम् ॥ १

अक्षस्रक् परशुङ्गदेषु कुलिशम्पद्मन्धनुः कुण्डिकां ।
दण्डंशक्तिमसिञ्च चर्म्मजलजं घण्टां सुराभाजनम् ।
शूलम्पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥ २

घण्टा शूल हलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जै र्दधतीं घनान्धविलच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरी देहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूताँ महा-
पूर्वामत्र सरस्वती मनुभजेच्छुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥ ३

इति पठित्वाष्टोत्तरशतसंख्यया मन्त्रराजं नवार्ण्णं जपेत् ॥

॥ इति नवार्ण्ण विधिः ॥

अथ प्रथममध्यमोत्तम-चरित्राणां ब्रह्माविष्णु-महेश्वरा ऋषयः । श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः, गायत्र्युष्णिगनुष्टुभश्छन्दांसि, नन्दाशाकम्भरी भीमाः शक्तयः रक्तदन्तिका दुर्गाभ्रामर्यो वीजानि, अग्निर्वायुः सूर्य्यस्तत्वानि, ऋग्यजुः सामवेदा ध्यानानि, सकलकामना सिद्धये महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे पाठे वा विनियोगः ॥

तत्रादौ न्यासा : ॥

करन्यास : खड्गिनी शूलिनी घोरेति अङ्गुष्ठाभ्यान्नमः शूलेन पाहीति तर्ज्जनीभ्यां स्वाहा । प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां चेति मध्यमाभ्यां बषट् । सौम्यानि यानि रूपाणीति अनामिकाभ्यां हुँ । खड्गशूलगदादीनीति कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् । सर्वस्वरूपे सर्वेशे इति करतल करपृष्ठाभ्यां फट् ॥

एवं हृदयादिन्यासो यथा-खड्गिनी शूलिनीति हृदयाय नमः । शूलेन पाहीति शिरसे स्वाहा । प्राच्यांरक्षेति शिखायै बषट् सौम्यानि यानीति कवचाय हुँ । खड्गशूल गदादीनीति नेत्रत्रयाय वौषट् । सर्वस्वरूपे इति अस्त्राय फट् ।

प्रथम चरित्रस्य ध्यानं यथा खड्गञ्चक्रेत्यादि ।
मध्यम चरित्रस्य ध्यानं यथा अक्षस्रगित्यादि ॥
उत्तम चरित्रस्य ध्यानं यथा घण्टा शूलेत्यादीतिवोध्यम् ।।

॥ इति सप्तशतीन्यासः ॥

॥ श्री जगदम्बिकार्पणमस्तु ॥

अथ परिशिष्ट भाग :

श्री दुर्गापूजा पद्धति :

साधक अर्थात् पूजा कैनिहार व्यक्ति स्नाननित्य कर्मादि क' क' आसन पर पूर्व मुख बैसि हाथ मे जल ल' क' आचमनि करथि तदुत्तर प्राणायाम क' क' कुश अक्षत जल ल' क' सङ्कल्प करथि -

ओं विष्णुर्विष्णुर्विष्णु : श्रीमतो भगवतो महापुरुषस्य विष्णो राज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णु पदे श्रीश्वेतवराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथमे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशे अमुकनाम्नि क्षेत्रे अमुकायने अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकदिने अमुक गोत्रोत्पन्नः अमुकशर्मा सपत्नीकोऽहम् आत्मनः श्रुतिस्मृति पुराणेक्त फलप्राप्त्यर्थं कायिकवाचिकमानसिक पापशमनार्थम् अखिल ब्रह्माण्ड नायिकायाः पराम्बायाः श्री दुगदिव्याः श्री सूक्तद्वारा षोडशोपचारेण पञ्चोपचारेण वा पूजनमहम् करिष्ये - ई पढ़िक जलके भूमि पर फेकि दी।

तखन हाथ में लाल फूल ल' क' ध्यान करी -

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै-नियताः प्रणताः स्मताम् ॥
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥

ई पढ़ि प्रतिमा पर फूल चढ़ाबी। तखन हाथ मे अक्षतादि ल' क' दुर्गाक आवाहन करी -

ओं हिरण्यवर्णां हरिणी सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्राँ हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोहमावहे ॥

ई मन्त्र पढ़िक प्रतिमा पर वा पात पर अक्षतादि राखि दी ।
तखन आसन दी ई मन्त्र पढ़िक अक्षत ल' क' ।

ओं ताम् आवह जातवेदो लक्ष्मीमनय गामिनीम् ।
यस्या हिरण्यं विन्देयं गामश्वपुरुषानहम् ॥

तखन जल ल'क' मन्त्र पढ़ी - पाद्य-जल दी,
अश्वपूर्वा रथ मध्यां हस्तिनादप्रबोधनीम्
श्रियं देवी मुपह्वये - श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥

जल ल' क' अर्घ्य दी -

ऊँ का सो स्मिता हिरण्य प्रकाश मार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्ता तर्पयन्तीम्,
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

पुनः हाथ मे जल ल' क' पढी ओ आचमनि दी -

ऊँ चन्द्रा प्रभासा यशसाज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टा मुदाराम् ।
तां नेमिं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मी मे नश्यतांत्वा वृणे ॥
इदमाचमनीयं श्री दुगदिव्यै नमः ।

तखन पञ्चामृत स्नान कराबी -

पञ्चामृतं मयाऽनीतं, पयोदधि घृतं मधु ।
ऊँ शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
इदं पञ्चामृतस्नानीयं श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

तखन शुद्ध जल सँ स्नान कराबी- मन्त्र पढ़ी -

ऊँ आदित्य वर्णे तमसोऽधिजाते वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथवित्वः
तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरा याश्च बाह्वा अलक्ष्मीः ॥
इदं शुद्धजलस्नानीयं श्री दुर्गा देंव्यै नमः ।

तखन वस्त्र ल' क' चढ़ाबी-मन्त्र पढ़ी -

ऊँ उपैतुमा देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ।
इदं परिधानवस्त्रं श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

तदुत्तर - उपवस्त्र - कञ्चुकी चढ़ाबी मन्त्र पढ़ी ।

क्षुत् पिपासा मला ज्येष्ठा मलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्
अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्वा निर्णुद मे गृहात् ॥
ओं इदंमुपवस्त्रं श्री दुर्गादिव्यै नमः । ऊँ
तखन चन्दन ल' क' मन्त्र पढ़ि चढ़ाबी

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहो पह्ल्ये श्रियम् ।
इदं चन्दनं श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

अक्षत ल' क' मन्त्र पढ़ी और चढ़ाबी -
ऊँ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ता : सुशोभिता : ॥
मया निवेदिता भक्तया गृहाण परमेश्वरि ।
एते अक्षताः श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

पुष्प ल'क' मन्त्र पढ़ी और मूर्ति पर चढ़ाबी

माल्यादीनि सुगन्धीनि, मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयाऽहृतानि पूजार्थं, पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम् ॥
एतानि पुष्पाणि श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

तखन सौभाग्य द्रव्य - सिन्दूर चढ़ाबी -

अवीरञ्च गुलालञ्च चोवा चन्दन मेव वा ।
अंवीरेणार्चिता देवी, गृह्यतां परमेश्वरि ॥
इदमवीरं गुलालं सिन्दूरं वा श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

मन्त्र पढ़िक धूप दी -

मनस : काममाकूतिं वाच सायमसी महि ।
पशुना रूप मन्नस्य सयि श्रीः श्रयताम् ॥
एषधूप : श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

निम्न मन्त्र पढ़िक दीप दानकरी -
कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ।

शियं वासय मे कुले, मातरं पद्‌ममालिनीम् ।
ऊँ एषदीप: श्री दुर्गा देव्यै नम:

कहिकउत्सर्गकरी दीपके ।

नैवेद्यदान जल ल' क' - मन्त्र पढ़ी -
ऊँ अप: सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
निच देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥
इदं नानाविधं नैवेद्यं श्री दुर्गा देव्यै नम:
कहि क नैवेद्यक उत्सर्ग करी ।

फल दान

इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्ति र्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥
एतानि फलानि श्री दुर्गा देव्यै नम:
कहिक उत्सर्ग करी ।

ताम्बूल दान निम्नमन्त्र पढ़िक करी -

पूगी फलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ।
एलादि चूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्
इदं सपूगं ताम्बूलं श्री दुर्गा देव्यै; नम: ।
कहिक उत्सर्गकरी ।

तखन जल ल' क' आचमन कराबी

ओं इदमाचमनीयं श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

दक्षिणा दान जल अक्षत ल' क' करी -

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिंपिङ्गमा पदम्मालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ।।
इदं दक्षिणाद्रव्यं श्री दुर्गा देव्यै नमः ।
कहिक उत्सर्ग करी तखन पुष्पाञ्जलि दी - मन्त्र पढ़ी -

आर्द्रा य कारिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जात वेदो म आहव ॥

तखन थार मे वा सराइ मे आरतीक सब सामान राखि पजारि - अक्षत जल ल'क' पढ़ी-"इदं कर्पूरार्त्तिकं" श्री दुगदिव्यै नमः" । कहिक उत्सर्ग करी = जय अंवे गौरी आदि स्तुति पढ़ी

ऊँ एष पुष्पाञ्जलिः श्री दुर्गा देव्यै नमः ।

तखन-प्रदक्षिणा करी मन्त्र पढ़िक ।

तां म आहव जात वेदो लंक्ष्मीमनपगामिनीम्
यस्यां हिरण्यं प्रभूति गावो दास्योऽश्वान विन्देयं
पुरुषानहम् ॥

ई मन्त्र पढ़ि मूर्तिक चारूकात घूमी ३
नमस्कारक मन्त्र पढ़ी -

यः शुचिः प्रयतोभूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् .
सूक्तं पञ्चदशार्चञ्च श्रीकाम : सततं जपेत् ॥
इति पठित्वा देवीं साष्टाङ्गं प्रणमेत् ॥

क्षमा प्रार्थना

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्
पूजां चैव न जानामि, क्षमस्व परमेश्वरी ॥
प्रमादात्कुर्वतां कर्म, प्रच्यवेताध्वरेषुयत्
स्मरणादेवतद्देव्याः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुति : ॥
यस्य स्मृत्या च नाम्नोः तपो यज्ञक्रियासुच
न्यूनं सम्पूर्णतांयाति बन्दनाच्च सुरेश्वरि ॥

इति नेपाल राज्य-महोत्तरी-मण्डलान्तर्गत, साँढाग्रामनिवासिना-
पण्डित श्री सुरेश झा शर्मणा संगृहीता श्री दुर्गा देव्या :
षोडशोपचार पूजापद्धतिः समाप्ता ॥

मैथिली मे क्षमापन स्तोत्र

अपराध हजारो टा जे करी हम सर्वदा
दुर्गे देवि क्षमा सेहो, हम छी दास आश मे ॥ १

आवाहन तथा पूजा भोग राग विसर्जनो ।
हमरा किछु ने आवे, से क्षमा करू अम्बिके ॥ २

मन्त्रहीन क्रियाहीन, भक्तिहीन विधान जे ।
कैलौं से पूर्ण हो देवि, पूजा हो सफला शुभा ॥ ३

अपराध हजारो टा, कैओक' जे नित्य दिन ।
जगदम्बा भजे दुर्गा, तकरा शुभ सङ्गती ॥ ४

हे दुर्गे अपराधी भ', शरणागत भेल छी ।
अनुकम्पा करू माता, इच्छा हो सैह टा करू ।। ५

भ्रान्ति विस्मृति अज्ञान, कोनो वा कारणे त्रुटी ।
भेल हो कम वेशी जे, से क्षमा करू अम्बिके ॥ ६

कामेश्वरी जगन्माता सच्चिदानन्दरूपिणी ।
भक्ति सँ कैल ई पूजा, प्रीति पूर्वक से लिअ' ॥ ७

गोपनीया अहाँ देवी, जप के स्वीकृती करू ।
सिद्धि हो सवर्दां देवि, करू कृपा सुरेश्वरी ॥ ८

श्री दुर्गाक आरती स्तोत्र

जय अम्बे गौरी माँ मङ्गलमूर्ती, हे माँ जय मङ्गल करणी ।
अहिके दिशि दिनबन्दन, करथि हरि ब्रह्म्रा शिवरी ।।
जय अम्बे गौरी ॥ १

माँग सिन्दूर सुशोभित, टीका मृगमद के माँटीका मृग मदके ।
अति उज्ज्वल दू नयना, शोभित शशि बदना ॥
जय अम्बे ग़ौरी ॥ २

कनक समान कलेवर रक्ताम्वर शोभै माँ रक्ताम्बर सोभै ।
रक्त पुष्पगर माला कण्ठहु धरि शोभै ॥
जय अम्बे गौरी ॥ ३

केहरि वाहन कैने खड्ग खपर धैने, माँ खड्ग खपर धैने ।
सुरनर मुनिजन वन्दित दुःख दूर कैने ॥
जय अम्बे गौरी ॥ ४

कानमे कुण्डल शोभित, नाकमे अछि मोती हे मां नाकमे अछि मोती ।
कोटिकचन्द्र दिवाकर समसुन्दर जोती ॥ जय अम्बे गौरी ॥ ५

शुम्भ निशुम्भ कें मारल, माँ महिषासुर मारल माँ महिषासुर मारल ।
धूम्र विलोचन नयना, सुरगण के तारल ॥ जय अम्बे गौरी ॥ ६

चण्ड मुण्ड संहारल रक्त वीज के से मारल मां रक्त वीजके मारल ।
मधु कैटभ के मारिक, सुरजन भय के टारल ॥ जय अम्बे गौरी ॥ ७

ब्रह्माणी रुद्राणी अहीं महारानी माँ अहीं कमला रानी ।
वेद पुराणबखाने अहाँ शिव के पटरानी ॥ जय अम्बे गौरी ॥ ८

चौसठि जोगिनि गाबथि, नृत्य करथि भैरो, मां नृत्य करथि भैरो ।
वाजत ताल मृदङ्गो डमरू ओ संगे ॥ जय अम्बे गौरी ॥ ९

जननी सभक अहीं छी अहीं सब के भर्त्री, मां अही सबके भर्त्री ।
भक्त जनक दुखहर्त्री सुखसम्पति कर्त्री ॥ जय अम्बे गौरी ॥ १०

चारि भुजा सँ शोभित, अभयवर सबके दै छी, माँ अभय सबके दै छी ।
मनवाञ्छित फल द' क', शोभित सव ठां होइ छी ।
जय अम्बे गौरी ॥ ११

सोनक थार मे शोभित, अगर कपुरवाती, मां अगर कपुरवाती ।
अछि श्री माल सुशोभित, कोटि रत्न ज्योती ॥ जय अम्बे गौरी ॥ १२

श्री अम्बाके आरति जन जे क्यो गावे मां जन जे केओ गावे ।
से सानन्द सदा हो - सुख सम्पति पावे ॥ जय अम्बे गौरी ॥ १३

॥ इति श्री दुर्गा देवी आरति स्तोत्र ॥

आरती

जय जय भैरवि असुर - भयाउनि

पशुपति - भामिनि माया ।

सहज सुमति वर दिअओ गोसाउनि

अनुगति गति तुअ पाया ॥

वासर-रैन सवासन शोभित

चरन चन्द्रमनि चूरा ।

कतओक दैत्य मारि मुँह मेलल

कतओ उगलि कैल कूरा ।

सामर वरन नयन अनुरञ्जित,

जलद-जोग फुल कोका ।

कट-कट विकट ओठ पुट पाँररि,

लिधुर-फेन उठ फोका ॥

घन-घन चलए घुघुर कत बाजए,

हन-हन कर तुअ काता ।

बिद्यापति कवि तुअ पद-सेवक,

पुत्र बिसरि जनु माता ॥

अथ देव्यपराध क्षमापन स्तोत्र

न मन्त्रो तन्त्रो वा नहि जनइं छी स्तोत्र वचनो,
शुभाह्वानो ध्यानो नहि किछु जनै छी सुवचनो ।
न जानी मुद्राओ नहि पुनि जनै छी विलपनो,
सदा जानी माता अहिंक चरणे मात्र शरणे ॥ १

विधानो ने जानी धनक विनु कानी दुखित भ',
विधानाभावे सँ, त्रुटि सकल कर्त्ता हम थिकौं,
कुपूतो छी त' की, जननि न कुमाता कतहुँ हो ॥ २

अहाँ के हे माता बहुत सुत सज्ञान बनला,
अहो एकेटा छी हम कुमतिवाला जगत मे ।
सुशोभा ने कोनो हयत हमरा त्याग कयने,
कुपूतो छी तैं की, जननि न कुमाता कतहुँ हो ॥ ३

जगन्माता माता अहँक पद सेवा न कयलौं,
चढ़ौना मे देलौं किछु न कहियो एक दमरी
अहो माता तैओ उपर हमरा स्नेह रखलौं,
कुपूतो छी तैं की जननि न कुमाता कतहुँ हो ॥ ४

परित्यक्तो भेला सकल सुर सेवा विनु सदा,
पचासी सँ आगाँ अधिक वय में की हम करू ।
यदि आहाँ माता करब न दया दृष्टि कनिको,
सहारा के देता जगजननि राखू शरण में ॥ ५

चमारो चण्डालो शुभ मधुर भाषी बनि रहे,
भिखारी बेकारी अति सुखित हो कोटि धन सँ ।
अपर्णा देवी के चरणयुग सेवाक फल ई,
न जाने केओ देवी अहाँक जप सेवाक फल के ॥ ६

चिता भस्मालेपी उदधि विषभक्षी निवसनी,
जटाधारी भारी भुजगपतिहारी पशुपती ।
कपाली शूली ओ जगतपति भेला शिव सदा,
भवानी जानी से अहिंक शुभ पांणीक फल ई ॥ ७

न मोक्षो के इच्छा नहि विभववाञ्छा हमर हो ,
न विज्ञानो ज्ञानो वा शशिमुखि सुखेच्छा नहि करी ।
सदा माङी एहे जननि जग में जन्म नहि हो,
मृडानी रुद्राणी शिवशिव भवानी जपइ छी ॥ ८

आराधना सविधि कैलहुँ एकटा ने,
ने चिन्तनो कयल कौखन बैसि कत्तो ।
दुर्गे तथापि करईत दया अहाँ छी,
मायेजकां उचित कार्य अहाँक शोभै ॥ ९

आपत्ति मे परल लोक भजैअजे क़्यों,
तैं स्वार्थ के विषय सँ शठता न बूझू ।
दुर्गे अहाँ करू कृपा करुणावती भ',
बच्चा भुखेले जननी जननी पुकारे ॥ १०

जगत में नहि वात विचित्र ई,
सतत माय रहे करुणावती ।
करथि जँ अपराध सहस्रटा,
तदपि पुत्रक हेतु दयावती ॥ ११

पापी हमरा सन कतौं, नहि भेटत संसार ।
पापघ्नी माता सुतक, लगबथि बेरा पार ॥
हे माता हम छी सतत केवल अहिंक भरोस ।
जीवनयापन सुखद हो, विनती करथि "सुरेश" १२

इति- नेपाल राज्य जनकपुराञ्चलमह्तोत्तरी मण्डलान्तर्गत
साढा ग्राम निवासी पण्डित सुरेश झा कृत-
मैथिली दुर्गासप्तशती मे देव्यपराध-
क्षमापन स्तोत्र समाप्त ।

श्री दुर्गार्पणमस्तु ॥
वि.सं. २०४४ आश्विन शुक्ल विजयादशमीक दिनमे लेख पूर्ण भेल ।

॥ अथ विशिष्टं परिशिष्टं किञ्चित् ॥
अथ कुञ्जिका स्तोत्रम् ॥

श्री शिव उवाच ॥
शृणु देवि प्रवक्ष्यामि, कुञ्जिका स्तोत्रमुत्तमम् ।
येन मन्त्र प्रभावेण चण्डीजापः शुभोभवेत् ॥ १ ॥

नतकवचं नार्गलास्तोत्रं कीलकं न रहस्यकम् ।
न सूक्तं नापिध्यानं च. न. न्यासो न च वार्चनम् ॥ २ ॥

कुञ्जिकास्तोत्रमात्रेण दुर्गा पाठफलं भवेत् ।
अति गुह्यतरं देवि देवानामपि दुर्लभम् ॥ ३ ॥

गोपनीयं प्रयत्नेन स्वयोनिरिव पार्वति ।
मारणं मोहनं वश्यं स्तम्भनोच्चाटनादिकम् ।
पाठ मात्रेण संसिद्ध्येत-कुञ्जिका स्तोत्रमुत्तमम् ॥ ४ ॥

अथ मन्त्रः । ओँ ऐँ ह्रीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे । ओँ ग्लौँ हुँ ल्कीँ जुँसः ज्वालय ज्वालय ज्वालय ज्वालय ज्वाल प्रज्वल प्रज्वल ऐँ हीँ क्लीँ चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा ॥

मातृकामन्त्रः

नमस्ते रूद्ररूपिण्यै नमस्ते मधुमर्दिनि ।

नम : कैटभहारिण्यै नमस्ते महिषार्दिनि ॥ १ ॥

नमस्ते शुम्भ हन्त्र्यैच निशुम्भासुरधातिनि ॥ २ ॥ जाग्रतं हि महादेवीजप सिद्धं कुरुष्व मे । ऐंकारी सृष्टि रूपार्थ ह्रींकारी प्रतिपालिका । ३ ॥ क्लींकारी कामरूपिण्यै वीजरूपे नमोऽस्तुते । चामुण्डा चण्डघाती च ऐंकारी वरदायिनी ॥ ४ । विच्चे चाभयदा नित्यं नमस्ते मन्त्ररूपिणि ॥ ५ ॥ धां धीं धूंर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी । क्रां क्रीं क्रूँ कालिका देवि शां शीं शूँ मे शुभं कुरु ॥ ६ ॥ हुँ हुँ हुँ कार रूपिण्यै जं जं जं जौम नादिनी । भ्रांभ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः ॥ ७ ॥ अं कं चं टं तं थं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय-त्रोटय दीप्तिं कुरू कुरू स्वाहा । पींपीं पूं पार्वती पूंखांखीं खूं खेचरी तथा ॥ ८ ॥ सांसीं सूं सप्तशती देव्या मन्त्र सिद्धिं कुरुव मे ।

इदं तु कुञ्जिकास्तोत्रं मन्त्र जागर्ति हेतवे । अभक्ते नैव दातव्यं गोपितं रक्ष पार्वति ॥॥ यस्तु कुञ्जिकया देवि हीनां सप्तशतीं पठेत् । न तस्य जायते सिद्धिररण्ये रोदनं यथा ।

इति श्री रुद्रयामले गौरीतन्त्रे शिव पार्वती संवादे
कुञ्जिका स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥ ।

अथ सप्तश्लोकी दुर्गा स्तोत्रम्

शिव उवाच ॥ देवि त्वं भक्त सुलभे सर्वकार्य विधायिनि ।

कलौहि कार्य सिद्धार्थमुपायं ब्रूहियत्नत: । देव्युवाच - शृणुदेव प्रवक्ष्यामि कलौं सर्वेष्टसाधनम् । मयातवैव स्नेहेनाप्यम्बा स्तुति: प्रकाश्यते ।ओम् अस्य श्री दुर्गा सप्तशलोकीस्तोत्रमन्त्रस्य नारायण ऋषि : अनुष्टुप् छन्द : श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यै देवता : श्री दुर्गाप्रीत्यर्थं सप्त श्लोकी दुर्गापाठे विनियोग : ॥

ओं ज्ञानिनामपि चेतांसि देवी भगवतीहिसा । बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति ॥ १ ॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीति मशेष जन्तो: ; स्वस्थै: . स्मृता मति मतीव शुभां ददासि । दारिद्रय दु:खभयहारिणिकात्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥ २ ॥ सर्व मङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सवार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ३ ॥ शरणागत दीनार्त्तपरित्राण परायणे- सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥ ४ ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते भयेभ्यस्त्राहि नो देवी दुर्गे देवि नमोऽस्तुते ॥ ५ ॥ रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रीतानांन विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति ॥ ६ ॥ सर्वबाधा प्रशमनं त्रैलोक्यखिलेश्वरी । एवमेव त्वयाकार्यस्या भस्मद्वैरि विनाशनम् ॥ ७ ॥

कल्याणी स्तोत्रम्

कल्याणवृष्टिभि रिवामृत पूरिताभिर्लक्ष्मी स्वयं वरणमङ्गल दीपिकाभिः । सेवाभिरम्ब तव पाद सरोजमूले नाकारि किं मनसि भक्तिमतौं जनानाम् ॥ १ ॥ एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते त्वद् बन्दनेषु सलिलस्थ सरोजनेत्रे । सान्निध्यमुद्यदरुणाम्वुज सोदरस्थ त्वद्विग्रहस्य सुधया परमायुतस्य ॥ २ ॥ ईषत्प्रभाव कलुषाः कतिनाम सन्ति ब्रह्मादय : प्रतिदिनं प्रलयाभिभूताः । एकः स एव जननि स्थिरसिद्धि रास्ते यः पादयोस्तव सकृत् प्रणतिं करोति ॥ ३ ॥ लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरितावकीनं कारुण्य स्कन्दतिलका त्रिभरं कटाक्षम् । कन्दर्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः सम्मोहयन्ति तरुणीभुवनत्रयेऽपि ॥ ४ ॥ ह्रींकारमेव तव नाम गृणन्ति देवा मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे। त्रिनेत्रे । तत्संस्मृतौं यमभटाभिभवं विहाय दीव्यन्तिन्दनवने सहलोकपालै : ॥ ५ ॥ हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्णमानः क्रूरः कथंन भवता गरलस्य बेगः । आश्वासनाय यदि मातरिदं तवार्द्धं देहस्य शश्वदमृताप्लुत शीतलस्य ॥ ६ ॥ सर्वज्ञतां सदसि वाक् पटुतां प्रसूते देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः किंच्च स्फुरत मुकुट कुण्डलमातपत्रंद्वे चामरे च महती बसुधां ददाति ॥ ७ । कल्पद्रुमैरभिमत प्रतिपादनेषु कारुण्य वारिधिभिरम्ब भवत् कटाक्षैः । आलोक्य त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं त्वय्येवभक्ति भरितं त्वयि बद्धदृष्टिम् ॥ ८ ॥ हन्तेतरेष्वपि निधाय मनांसि वाम्ये भक्तिं भरन्ति किल पामर दैवतेषु । त्वामेव देवि मनसाऽहमनुस्मरामि त्वामेव नौमि शरणं जननि त्वमेव ॥ ९ ॥

लक्षेषु सत्स्वपि तवाक्षि विलोकमाना मालोक्य त्रिपुर सुन्दरि'मां कथंचित् । नूनं मया च सदृशं करुणैकपात्रं जातो जनिष्यति जनो न च जायते वा ॥ १० ॥ ह्रीं ह्रीं इति प्रतिदिनं जपतां तवाख्यां कि नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे । माला किरीट मदकारण मानसीयांस्नात् सेवते मधुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥ ११ ॥ सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि साम्राज्यदानि कुशलानि सरोरुहाक्षि । त्वद्वन्दनानि विपदा हरणोद्यतानि मामेव मात रनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥ १२ ॥ कल्पोपः संहरण कल्पित ताण्डवस्य देवस्य खण्डपरशोः परभैरवस्य । पाशाङ्कशैक्षवदारासन पुष्प वाणा साक्षिणो विजयते तव मूर्तिरिषा ॥ १३ ॥ लग्नं सदा भवतु मातरिदं त्वदीयं तेजः पद्मशोणम् । भास्वत् किरीटममृतांशुकलावतंसं रूपं त्रिकोण मुदितं परमामृतात्कम् ॥ १४ ॥ ह्रींकारत्रय सम्पुटेन महता मन्त्रेण संदीपितम् स्त्रोत्रं यः प्रति-वासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित् । तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगा लक्ष्मीश्चिरं स्थायिनी वाणी निर्मल सूक्तिभाव भरिता जागर्ति दीर्घं यशः ॥ १५ ॥

इति ब्रह्मविरचितं कल्याणीस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

अथ आपदुद्धार स्तोत्रम्

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे, नमस्ते जगद्व्यापिके विश्वरूपे ।
नमस्ते जगद् वन्द्यपादारविंदे, नमस्ते जगत्तारिणिं त्राहि दुर्गे ॥ १
नमस्ते जगच्चित्र्यमानस्वरूपे, नमस्ते महायोगिनि ज्ञानरूपे ।
नमस्ते नमस्ते सदानन्द रूपे, नमस्ते जगत्तारिर्णि त्राहि दुर्गे ॥ २
अनाथस्य दीनस्य तृष्णातुरस्य भयार्तस्य भीतस्य चसर्व जन्तो :
त्वमेका गति देंवि निस्तारकर्त्री नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ३
अरण्ये रणे दारुणे शत्रुमध्येऽनले सागरे प्रान्तरे राजगेहे ।
त्वमेका गति देंवि निस्तार नौका, नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ४
अपारे महादुस्तरेऽन्यत्र घोरे, विपत् सागरे मज्जतां देह भाजाम् ।
त्वमेका गति देंवि निस्तारहेतुर्नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ५
नमश्चण्डिके चण्डदोर्दण्ड लीला, समुत् खण्डिताशेषशत्रो : समीक्षा ।
त्वमेका गति देंवि निस्सार बीजं नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ६
त्वमेवाघ मावाधृता सत्यवादी र्ने जाता जिताक्रोधनात् क्रोंधनिष्ठा ।
इडा पिङ्गला त्वं सुषुम्ना च नाडी, नमस्ते जगत्तारिणी त्राहि दुर्गे ॥ ७
नमो देवि दुर्गे शिवे भीमनादे, सरस्वत्यरुधत्यमोध स्वरूपे ।
विभूतिः शची कालरात्रि : सतीत्वं नमस्ते जगत्तारिणि त्राहि दुर्गे ॥ ८
शरणमसि सुराणां सिद्ध विद्याधराणांमुनिमनुज पशूनां दस्युभि स्त्रासितानाम् । नृपति गृहगतानां व्याधिभिः पीडितानां त्वमसि शरणमेका देवि दुर्गे प्रसीद ॥ ९ ॥ इदं स्तोत्रं मया प्रोक्तमापदुद्धार हेतुकम् ।

त्रिसन्ध्यमेकसन्ध्यं वा पठनाद् घोरसङ्कटात् ॥ १० ॥ मुच्यते नात्र संदेहो भुवि स्वर्गे रसातले । सर्वं वा श्लोकमेकं वा यः पठेत् भक्तिमान् सदा ॥ ११ ॥ स सर्वं दुष्कृतं त्यक्त्वा प्राप्नोति परमं पदम् । पठनादस्य देवेशि किन्न सिद्ध्यति भूतले ॥ १२ ।, स्तवराजमिदं देवि संक्षेपात् कथितं मया ॥ १३ ॥

इति श्री दुर्गापदुद्धारस्तोत्रँ सम्पूर्णम्

श्री सुरेश झा संकलित, दुर्गास्तोत्रविधान ।
गओला सँ सुख सम्पदा, भेटत सब ठाँ मान ।
२०४४ दू हजार चौवालिसक संवत् विक्रम वर्ष
आश्विन विजया तिथिक दिन, पूरा भेल सहर्ष ॥

॥ श्री दुर्गाऽर्पणमस्तु ॥

मिथिलाक विशिष्ट विद्वान्

पं. सुरेश झा : जीवन परिचय

नाम : सुरेश झा

जन्म : ५ दिसम्बर १९२० (प्रमाण पत्रानुसार), सांढा ।

मृत्यु : १० अगस्त १९९५ (श्रावण पूर्णिमा, रक्षाबन्धन) प्रात : ४:१५, सांढा

स्थायी पता : गा. सांढा, जि. महोत्तरी, अं. जनकपुर, नेपाल ।

पारिवारिक पृष्ठभूमि : पिता : जयदेव झा, माता : राधा देवी (माता एवं पिताक देहावसान पण्डितजीक बाल्यकाल मे भगैल), भाइ : तीन, वहिन : १, विवाह १९४२, पत्नी : १, पुत्र : ४, पुत्री : १ ।

रुचि : अध्ययन, अध्यापन, लेखन, भ्रमण ।

विशिष्टता : सरलता, निश्छलता एवं मिथिला मैथिली सँ अनन्य प्रेम ।

शिक्षा : प्रारम्भिक शिक्षा (१९३०-१९३७) : कूपेश्वर संस्कृत पाठशाला, कूआ, जनकपुर धाम, सीताराम संस्कृत विद्यालय, वराही, कूपेश्वर संस्कृत पाठशाला, कूआ (प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री)

व्याकरणाचार्य (१९४१) क्वींस कालेज (बनारस हिन्दू वि.वि.), काशी, (बनारस) ।

न्याय शास्त्री (प्र.ख) १९४३ क्वींस कालेज (बंनारस हिन्दू वि.वि.), काशी (बनारस) ।

साहित्याचार्य (१९४४) विहार संस्कृत एसोशिएसन, पटना ।

तर्कतीर्थ, न्यायतीर्थ (१९४६) बंगाल संस्कृत एसोशिएसन, कलकत्ता

व्याकरणाचार्य एवं साहित्याचार्य (विशिष्ट दक्षिणा परीक्षा), वडोदा, गुजरात
शिक्षा शास्त्री (१९६४) लाल वहादुर संस्कृत विद्यापीठ, दिल्ली ।

अध्यापन : अनुभव ४० वर्ष

१९४३-४४ : मैथिली विद्यालय, जनकपुरधाम

१९४४-४५ : वैसाडीह संस्कृत पाठशाला, आरा, विहार एवं संस्कृत विद्यालय मोरेना, विहार ।

१९४७-४८ : जैन साधु, दिल्ली

१९४९-१९५२ : राजकीय मा. विद्यालय, सिरोही, राजस्थान ।

१९५२-१९६६ : राजकीय मा. विद्यालय, शिवगंज, राजस्थान ।

१९६६-१९७५ : वरिष्ठ अध्यापक, राजकीय उच्च मा.वि., जोधपुर ।

१९७८-१९८४ : सम्मानित प्राध्यापक, साधुबेला संस्कृत महाविद्यालय (सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय), बनारस ।

कृति : (संस्कृत, मैथिली एवं हिन्दी में)

संस्कृत

१. श्लोक सिद्धान्त कौमुदी (१९८२) (प्रथम भाग ६७२ पृष्ठ, द्वितीय भाग ७०५ पृष्ट), प्रकाशक : सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, बनारस (एहि महान् ग्रन्थ में व्याकरण शास्त्रक अभिनव एवं सरल प्राञ्जल १२,००० श्लोक में प्रस्तुति) ।

२. संस्कृत लघु व्याकरणम, (तीन संस्करण १९६७, १९६८, १९७०) प्रकाशक : झा वन्धु प्रकाशन, जोधपुर (राजस्थान शिक्षा विभागद्वारा स्वीकृत एवं केन्द्रीय शिक्षा विभाग, दिल्लीद्वारा अनुशंसित)

३. संस्कृत शिक्षा सोपानम् (१९७०), जोधपुर ।

४. संस्कृत वोध चन्द्रिका (चार संस्करण १९७०, १९७१, १९७२, १९७३), (राजस्थान शिक्षा वोर्डद्वारा स्वीकृत पाठ्य पुस्तक), पृ १९७, प्रकाशक : लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा।

५. लधु सिद्धान्त कौमुदी (श्लोक वद्ध) प्रकाशनाधीन, कामेश्वर-सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा।

६. राजस्थान वीराञ्जलि (अप्रकाशित)

मैथिली :

१. मैथिली गीता पद्यवद्ध (१९६२) प्रकाशक : स्वयम्, पृ. ९६।

२. मैथिली जनजीवन काव्य (१९६७), प्रकाशक : स्वयम्।

३. मैथिली सत्यनारायण कथा (१९८२ प्रथम संस्करण चौखम्वा अमर भारती प्रकाशन, वनारस), १९७६ द्वितीय संस्करण, प्रकाशक : स्वयम्) पृ. ८६।

४. मैथिली रसकलश (१९८६) प्रकाशक : स्वयम्, पृ. ८४।

५. मैथिली दुर्गा सप्तशती (१९८८) कमल प्रकाशन, पटना, पृ. १२५।

६. मैथिली मिथिला माहात्म्य (१९९०) प्रकाशक : अखिल नेपाल मैथिली साहित्य परिषद्, काठमाण्डू, पृ. ५५।

हिन्दी :

१. बंगविजय काव्य (१९७३) प्रकाशक : झा बन्धु प्रकाशन, जोधपुर, पृ. ५४ (एहि खण्ड काव्य में ५६ प्रकारक छन्दक प्रयोग)।

२. हिन्दी व्याकरण चन्द्रिका (१९७२), झा बन्धु प्रकाशन, जोधपुर।

३. हिन्दी छन्द ज्ञान (१९७३)

४. काव्य सार (छन्द, रस, अलंकार) अप्रकाशित।

लेख रचना : संस्कृत, मैथिली हिन्दी में एकसय सँ अधिक लेख, कविता, आदि प्रकाशित।

सम्पादन : करीब एक दर्जन पुस्तक एवं पत्रिकाक सम्पादन ।

सभा सम्मेलन गोष्ठी आदि :

सभा, सम्मेलन गोष्ठी आदि में विशेष रुचि । पचास सँ अधिक सभा, सम्मेलन, गोष्ठी में सहभागिता, अध्यक्षता, प्रमुख अतिथि । विश्व संस्कृत सम्मेलन, दिल्ली; अखिल भारतीय आचार्य सम्मेलन, वर्धा: राजस्थान संस्कृत साहित्य सम्मेलन, उदयपुर में प्रतिनिधित्व । राजस्थान शिक्षा विभागद्वारा संस्कृतक श्रोत व्यक्ति । अखिल राजस्थान मैथिल परिषद्, जयपुर, उपाध्यक्ष ।

सम्मान पुरस्कार :

- राजस्थान संस्कृत साहितय सम्मेलन, उदयपुर में महाराणा भगवत सिंहद्वारा स्वर्ण पदक सँ विभूषित ।
- उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, लखनऊ सँ १९८४ में श्लोक सिद्धान्त कौमुदी ग्रन्थक रचनाक लेल सम्मानित एवं पुरस्कृत ।
- एशिया सन्दर्भ ग्रन्थ (Reference Asia) में विशेष उल्लेख ।
- अनेक सभा-सम्मेलन में सम्मानित ।

66/A/1

लेखक
पण्डित श्री सुरेश झा
जन्मः ५ दिसम्बर १९२०
मृत्युः १० अगास्त १९९५